उपयोगी साहित्य-मा...

उपयोगी साहित्य-माला ६

वर्ष-फल विचार

ANNUAL HOROSCOPY

वर्ष

पुस्तक-परिचय

महर्षियों के दीर्घकालीन शोध के परिणाम स्वरूप ज्योतिष शास्त्र का लोहा आज सारा संसार मान रहा है और ज्योतिष में वर्षफल निकाल कर शुभाशुभ जानने की पद्धति का प्रचार, विंशोत्तरी दशा-अन्तर्दशा पद्धति की अपेक्षा, अधिक प्रचलित है।

कारण : इस पद्धति से केवल एक वर्ष के शुभाशुभ का विवेचन होता है जो अधिक सूक्ष्म और शुद्ध है।

कर्मचारी : अपनी बदली (Transfer), पदोन्नति (Promotion) आदि की जानकारी मालूम करते हैं।

आज के व्यापारी : अपने वर्षफल के आधार पर नये वर्ष की योजनायें बनाते हैं।

मेरा यह वर्ष : स्वास्थ्य के लिए कैसा है? आर्थिक स्थिति क्या है? मेहनत मिले धन में से कुछ बचाकर "मकान" "वाहन" आदि का साधन बनेगा या नहीं? सन्तान और पत्नी द्वारा सुख-दुःख की स्थिति, लम्बे समय से चल रहे मुकदमे का निर्णय आदि जीवन की विविध समस्याओं का समाधान वर्षफल से मिलता है।

लेखक : ने शास्त्रीय विषय को अपने अनुभव, विशेष विचार तथा टिप्पणीयों सहित, भावफल विचार और नवाब खानखाना के योगों को बड़े उत्तम रूप में प्रस्तुत किया है। पुस्तक एक सामान्य पाठक व व्यवसायी ज्योतिषी, दोनों के लिये उपयोगी है।

मूल्य पांच रुपये।

February शब्द लातीन के Februarius का अपभ्रंश है। यह शब्द फेब्रुअरी धातु से निकला है, जिसका अर्थ है शुद्ध करना। प्राचीन रोम सभ्यता में फरवरी का महीना आत्मशुद्धि का प्रायश्चित और पापमार्जन का महीना माना जाता था। आत्मशुद्धि की अनेक रस्में इस महीने में मनायी जाती थीं।

उपयोगी साहित्य माला—६

वर्षफल - विचार

(Annual Horoscopy)

लेखक
ज्योतिर्विद् परमानन्द शर्मा "नन्द"
(महिलाएँ और ज्योतिष, गोचरविचार,
नक्षत्रफल दर्पण, आदि पुस्तकों के प्रणेता)

प्रकाशक
गोयल एण्ड कम्पनी
दरीबा, दिल्ली—६

प्रकाशक :
गोयल एण्ड कम्पनी
दरीबा, दिल्ली—६

मूल्य : पाँच रुपये

प्रथम संस्करण
सन् १९७२ ई०

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मुद्रक :
पुष्प प्रिंटिंग प्रेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

एकदृष्टि में

वर्षफल सम्बन्धी आवश्यक जानकारी

नवीन तथा प्राचीन मतानुसार वर्ष कुण्डली बनाना

मुन्था क्या है ! और कहाँ रखें

पंचवर्गी बल और वर्षेश निर्णय

मुद्दावशा ज्ञात करने की सरल विधि

सारणियां और दशाफल का अनुभूत विवेचन

वर्षेश फल के लिये विचारणीय विषय

मुन्था और मुन्थेश सम्बन्धी चामत्कारिक फल कथन

वर्ष कुण्डली के षोडश योग : उदाहरण सहित

नवाब खानखाना के योगों पर लेखक के अनुभव

सहम कैसे ज्ञात करें ? उनका फल और वह कब ?

इस वर्ष किसी प्रकार का अरिष्ट तो नहीं है ?

ट्राँसफर, पदोन्नति (Promotion) व्यापार की स्थिति,

आर्थिक स्थिति, मकान, वाहन, लाटरी

पत्नी का स्वास्थ्य ? संतान कब और क्या ?

परीक्षा परिणाम, अन्य प्रतियोगिताओं का फल

मुकदमे का निर्णय क्या ? यात्रा लाभदायक या साधारण

वर्ष में खर्च कितना और किन किन मदों पर

त्रिपताकी और समुद्र चक्र से वर्षफल

सर्वथा नवीन और उपयोगी ढंग

उच्चस्तरीय प्रकाशन

- **महिलाएं और ज्योतिष** (Astrology for women)
  महिलाओं सम्बन्धी फलित ज्योतिष
  सामयिक विषयों से परिपूर्ण
- **प्रश्न दर्पण**
  प्रश्न द्वारा आधुनिक ढंग से भावी जानकारी
- **ज्योतिष और रोग**
  ज्योतिष द्वारा रोग सम्बन्धी फलकथन
- **रत्न परिचय**
  रत्नों की पहचान और इनके चामत्कारिक गुण
- **चुने हुए ज्योतिष योग**
  परिभाषा, फल, हेतु, शास्त्रप्रमाण एवं उदाहरण सहित
- **फलित सूत्र**
  सरलता के साथ बारह भावों का फलादेश
- **व्यवसाय का चुनाव**
  और आपकी आर्थिक स्थिति
  मूल्य—प्रत्येक पुस्तक पाँच रुपये, डाक व्यय अलग
- **उत्तरकालामृत** (कालिदासविरचित)
  फलितज्योतिष का अचरज पूर्ण ग्रंथ
  मूल्य—दस रुपये :
  डाक व्यय अलग, सभी पुस्तकें सरल वैज्ञानिक शैली में

मंगाने का पता :—

गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली-६

दो शब्द

फलित ज्योतिष एक उपयोगी विज्ञान है। महर्षियों के दीर्घ अनुभव और शोध के बाद यह प्रकाश में आया है। फलित ज्योतिष के ही एक महत्त्वपूर्ण अंग—जन्म कुण्डली-द्वारा शुभाशुभ विवेचन आज समस्त विश्व में प्रचलित और मान्य है।

कुण्डली द्वारा शुभाशुभ समय की जानकारी के लिए प्रायः दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं।

१. विशोत्तरी दशा-अन्तर्दशा एवं वर्षफल। यों ये दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। प्रस्तुत पुस्तक वर्षफल सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी देने के लिए लिखी गई है। इसमें वर्षफल : सम्बन्धी सम्पूर्ण गणित उदाहरणों एवं वक्तव्यों के साथ समझाने का प्रयत्न किया गया है। पश्चात् वर्षफल के शुभाशुभ का विवेचन दिया गया है। इसके समस्त योग अनुभव, शोध एवं उपयोगिता के आधार पर लिखे गये हैं।

वर्षफल का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है, इसमें शुभाशुभ विवेचन की अवधि वर्ष भर मात्र की होती है; अतः यह विशेष सूक्ष्म और उपयोगी माना गया है। प्रायः व्यापारी बंधु अपना वर्षफल बनवाकर ही उसी के अनुसार व्यापार सम्बन्धी योजनाएं बनाते हैं। राजकीय नौकरी में नियुक्त हजारों व्यक्ति वर्षफल के आधार पर ही अपने स्थानान्तरण (Transfer) और पदोन्नति (Promotion) की जानकारी चाहते हैं। विश्वास है कि केवल इसी पुस्तक के आधार पर आप शुद्ध वर्षफल बना-

कर स्वास्थ्य, धन, ज़मीन, जायदाद, पुत्र, व्यापार, विवाह, भाग्य और आय-व्यय आदि से सम्बन्धित बातों की सही-सही जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

पुस्तक को जनसाधारण के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए अत्यन्त सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। आवश्यकतानुसार 'हमारा मत,' 'अनुभव,' विशेष विचार' आदि शीर्षकों से नये पाठकों की शंकाओं का समाधान करने का भी प्रयास किया गया है।

मैं अपने उन सभी ज्ञात-अज्ञात मित्रों, सम्बन्धियों एवं विद्वानों का आभारी हूं कि जिन्होंने इस पुस्तक के लिखने में मुझे किसी भी प्रकार से सहायता दी है, एवं उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं जिनकी जन्मकुण्डलियों एवं वर्ष-कुण्डलियों का उपयोग मैंने इस पुस्तक में किया है। विशेष रूप से मैं अनुभवी एवं उत्साही प्रकाशक का आभारी हूं जिनकी तत्परता एवं लगन से यह पुस्तक इतना शीघ्र इतनी सुन्दर साज-सज्जा के साथ आपके हाथों तक पहुंच सकी है।

समस्त पाठकों एवं विद्वानों से निवेदन है कि अगर इसके अन्तर्गत कोई विषय अस्पष्ट या विशेष विचार के योग्य हो तो सूचित करने की कृपा करें। उनके बहुमूल्य सुझावों पर पूर्ण ध्यान देकर आगामी संस्करण और भी विशेष उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जायेगा।

वसंत पंचमी संवत् २०२८

विनीत

परमानन्द शर्मा 'नन्द'

विषय-सूची

दो शब्द

१. वर्षफल सम्बन्धी आवश्यक जानकारी १७—२५
'ताजक' शब्द का तात्पर्य, वर्ष में दृष्टि विचार राशियों के स्वरूप, ग्रहों का शुभाशुभ विचार

२. आइये, वर्ष कुण्डली बनायें २५—३८
वर्ष कुण्डली बनाने का सिद्धान्त, वर्ष कुण्डली बनाने की, नये और प्राचीन मत से, सरल विधियां, कौन-सा मत उपयुक्त उदाहरण वर्ष कुण्डली, मुन्था क्या है? मुन्था कहाँ रखें ?

३. पंचवर्गी बल और वर्षेश निर्णय ३९—५२
नवांश बल व नवांश चक्र आदि; हर्षबल साधन, त्रिराशिपति विचार, बलीग्रह और वर्षेश का निर्णय

४. वर्ष में विंशोत्तरी मुद्दा दशा ५२—५८
मुद्दा दशा ज्ञात करने की विधि, मुद्दा अन्तर्दशा चक्र, मुन्था और मुन्थेश से सम्बंधित चमत्कारिक फल-कथन

५. दशा फल विचार ५९—६६
षोडश योगों का उदाहरणों सहित विवेचन, नवाब खानखाना के योगों पर लेखक के अनुभव

६. वर्षेश फल विवेचन ६७—७८
वर्षेश फल के लिये विचारणीय बातें,

७. मुन्था और मुन्थेश फल विचार ७८—८४
मुन्था का भाव फल, द्वादश भावों में मुन्थेश विचार, मुन्था का ग्रहों के साथ फल

८. वर्षकुण्डली के षोडश योग ८४—१०८
दीपतांश चक्र, देखने की विधि, इक्कबाल योग, इन्दुवार योग, इत्थशाल, ईशराफ योग, नक्त, यमया, मणऊ, कम्बूल योग, गैरकम्बूल, खल्लासर, रद्द, दुफालिकुत्थ, दुत्थकुथीर, शुभतम्बीर, कुत्थ, दुरुफ-योग, नवाब खानखाना के योगों का विशेष वर्णन

९. वर्ष कुण्डली और सहम १०८—१२४
सहमों की उपयोगिता

१०. भाव फल विचार १२५—१६३
भावस्थ ग्रहों का फल, अरिष्ट विचार, क्या इस वर्ष स्थानान्तरण होगा? ज़मीन-जायदाद की प्राप्ति, मातृ-पितृ-सुख, परीक्षा में सफलता या असफलता, नौकरी, तरक्की, लाभ व व्यय किस भाँति ?

११. त्रिपताकी और समुद्र चक्र १६३—१६७
वर्ष विचार में समुद्र चक्र, समुद्र चक्र से शुभाशुभ विचार,

१२. व्यावहारिक वर्ष कुण्डलियों का अध्ययन १६८—१७१
उदाहरण में ६८ कुण्डलियों का प्रयोग

सामग्री नवीन और उपयोगी

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वर्षफल विचार

मंगलाचरण

ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै—
वेदैःसांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥
(श्रीमद्भागवत)

ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र एवं मरुत् आदि देवता जिसकी वन्दना करते हैं, सांग वेद, उपनिषद् एवं ब्राह्मण ग्रंथों में भी जिसका वर्णन किया गया है; योगिजन ध्यानावस्थित होकर अपने मन में ही जिसके दर्शन करते हैं तथा देवता एवं असुर भी जिसका मर्म नहीं समझ सकते, ऐसे देवाधिदेव भगवान् शंकर को हम नमस्कार करते हैं।

विफलान्यन्यशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
सफलं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्राकौं यत्र साक्षिणौ ।।
यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा ।
तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्यौतिषं मूर्धनि स्थितम् ।।

ज्योतिष के अतिरिक्त दूसरे शास्त्रों में सिवाय वादविवाद के कुछ है ही नहीं, अतः उनसे तो कोई फल सम्भव ही नहीं है । लेकिन ज्योतिष ही एक ऐसा शास्त्र है जो पूर्ण सफल है और जिसका साक्ष्य सूर्य-चन्द्र स्वयं दे रहे हैं । जिस तरह मयूर के मस्तक पर शिखा और नागराज के मस्तक पर मणि विराजमान रहती है, ठीक उसी तरह, वेदांग शास्त्रों के मस्तक पर ज्योतिष शास्त्र विराजमान है। ज्योतिष की इसी महत्ता एवं उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए, गोयल एण्ड कम्पनी की गौरवशाली परम्परा के अनुरूप, आवश्यक उदाहरणों से युक्त "वर्षफल विचार" नामक यह व्यावहारिक पुस्तक, ज्योतिष में रुचि रखने वालों के लिए लिखी जा रही है ।

———

: १ :

वर्षफल सम्बन्धी आवश्यक जानकारी

'ताजक' शब्द का तात्पर्य एवं इसका विकास : घड़ी-पल का ज्ञान : राशियों के स्वरूप : ग्रहों की संज्ञा : वर्ष में दृष्टि-विचार : ग्रहों का शुभाशुभ विचार : ताजक के सन्दर्भ में

'ताजक' शब्द का तात्पर्य—वर्षफल सम्बन्धी विभिन्न जानकारी हमें ताजक ग्रन्थों से प्राप्त होती है। इन ग्रन्थों की रचना भारत में यवनों के सम्पर्क के बाद हुई। इसके पूर्व भी प्राचीन भारत में वर्षफल बनाये जाते थे किन्तु उनका आधार विंशोत्तरी आदि दशाएँ होती थीं। धीरे-धीरे ताजक ग्रन्थों के आधार पर बनाये वर्षफल लोकप्रिय होने लगे, क्योंकि इसमें फल-विचार कुछ अधिक सूक्ष्म हो सकता था।

ताजक या ताजिक शब्द की उत्पत्ति जानना भी पाठकों के लिए रोचक होगा। कुछ विद्वानों के मत से ताजक शब्द तुर्की भाषा के शब्द 'ताजी' का अपभ्रंश है। ताज़ी का अर्थ घोड़ा होता है। चूँकि भावी फलों की जानकारी के लिए यह शास्त्र घोड़ों की तरह तेज दौड़ने वाला है अतः इसका नामकरण 'ताजक' कर दिया गया। इससे इस शास्त्र का महत्त्व स्पष्ट होता है।

इस विषय में दूसरा मत भी विचारणीय है। भारत में अत्यन्त प्राचीन काल से जन्मकालीन इष्ट और ग्रहों के आधार पर शुभाशुभ फल कहने वाला शास्त्र 'जातक' नाम से प्रसिद्ध है। यवनों के सम्पर्क से जातक शब्द का ही परिवर्तित रूप 'ताजक' हो गया। इस शास्त्र के फलकथन का आधार भी जन्मकाल का इष्ट ही है। लेखक भी ताजक शास्त्र के नामकरण में इसी मत से सहमत और प्रभावित है।

घड़ी-पल का ज्ञान—एक दिन-रात में ६० घड़ी होती हैं। वर्षफल का गणित करनें में भी अधिकतर घड़ी-पल और राशि, अंश, कला, विकला से काम लिया जाता है। ६० विकला की एक कला, ६० कला का एक अंश, और ३० अंश की एक राशि होती है। ऐसे ही ६० विपल का १ पल, ६० पल की १ घड़ी और ६० घड़ी का एक दिन-रात होता है। इस प्रकार १ घड़ी २४ मिनट की होती है।

अतः जब आप गुणा, भाग या धन-ऋण की कोई क्रिया करें तो उस समय यह ध्यान रखें कि यदि विकला ६० से अधिक हो जाये तो ६० से भाग देकर जो लब्धि हो उसे कला में जोड़ देना चाहिए। फिर कला अधिक हो तो ६० का भाग देकर अंशों में एवं अंशों में ३० का भाग देकर लब्धि राशियों में जोड़ देनी चाहिए। इसी तरह ऋण करते समय ऊपर की राशि कम हो तो उसमें १२ और मिलाकर ऋण कर लेते हैं।

राशियों का स्वरूप—राशि का सबसे सुगम अर्थ है—ढेरी। आकाश में स्थित भचक्र के ३६० अंश अथवा १०८ भाग होते हैं। समस्त भचक्र १२ राशियों में विभक्त है। अतः ३० अंश या ९ भाग (चरण या पद) की एक राशि होती है। स्वरूप और सादृश्य का विचार करके राशियों का नामकरण किया गया है।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन—ये १२ राशियाँ हैं। इनमें १।३।५।७।९।११, जो विषम हैं, क्रूर और पुरुष संज्ञक है। शेष २।४।६।८।१०।१२ सम संज्ञा

वाली, सौम्य और स्त्री संज्ञक हैं।

मेष, कर्क, तुला और मकर राशियों की संज्ञा चर है; वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ स्थिर एवं मिथुन, कन्या, धनु और मीन द्विस्वभाव कही जाती हैं।

मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर पृष्ठोदय राशियाँ हैं; ये रात्रि में बलवान् होती हैं। प्रश्न लग्न में यह राशि होने पर देर से कार्य होता है। इनमें बैठे हुए ग्रह देर से अपना प्रभाव दिखाते हैं। मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ और मीन शीर्षोदय राशियाँ हैं। ये दिन में बलवान् होती हैं। मीन उभयोदय है। इसमें दोनों प्रकार के गुणों का सम्मिश्रण है। इन राशियों में बैठे हुए ग्रह शीघ्र फल दिखाते हैं।

पृष्ठोदय राशि में पापग्रह बैठा हो तो अत्यन्त अशुभ होता है; और शुभग्रह मध्यम फल देता है। शीर्षोदय में इसके विपरीत समझना चाहिए।

मेष, सिंह और धनु अग्नि-तत्व प्रधान राशियाँ हैं; वृष, कन्या और मकर पृथ्वीतत्व-प्रधान; मिथुन, तुला और कुम्भ वायुतत्व-प्रधान और कर्क, वृश्चिक और मीन जलतत्व-प्रधान राशियाँ हैं।

मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल; वृष और तुला का शुक्र; कन्या और मिथुन का बुध; कर्क का चन्द्रमा; सिंह का सूर्य; मीन और धनु का बृहस्पति; मकर और कुम्भ का शनि; कन्या का राहु एवं मिथुन राशि का स्वामी केतु है।

द्वादश राशियाँ काल पुरुष का अंग मानी गई हैं। मेष को सिर में, वृष को मुख में, मिथुन को स्तनमध्य में, कर्क को हृदय में, सिंह को उदर में, कन्या को कमर में, तुला को पेड़ू में, वृश्चिक को लिंग में, धनु को जंघा में, मकर को दोनों घुटनों में, कुंभ को दोनों जांघों में एवं मीन को दोनों पैरों में माना है।

जन्म के समय और वर्ष में जिस राशि में शुभ ग्रह होते हैं वह भाग पुष्ट और स्वस्थ रहता है। जिस राशि में पापग्रह होते हैं, शरीर का

उससे सम्बन्धित भाग कृश, रोग युक्त और पीड़ित होता है।

ग्रहों की संज्ञा—राहु-केतु सहित सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति शुक्र और शनि—ये नौ ग्रह हैं। वर्ष का सम्पूर्ण फलादेश इन्हीं के बलाबल और स्थिति पर निर्भर है।

शिर प्रदेश पर सूर्य का विशेष अधिकार है; मुख के आसपास चन्द्रमा का; कण्ठ पर मंगल का; नाभि के निकट स्थल पर बुध का, नाक के मध्य में बृहस्पति का; नेत्रों और पैरों पर शुक्र का; तथा पेट पर शनि, राहु और केतु का विशेष अधिकार रहता है। मतान्तर से रवि से सिर-से-मुखभाग तक का विचार ; चन्द्रमा से गले से हृदय तक का; मंगल से पेट से पीठ तक का; बुध से हाथों और पांवों का; बृहस्पति से कमर से जांघ तक का; शुक्र से शिश्न से-वृषण तक का; एवं शनि से घुटने से पेंडुली तक के शारीरिक अंगों का विचार करना चाहिये।

सूर्य, मंगल, बृहस्पति पुरुष-ग्रह हैं। चन्द्रमा तथा शुक्र स्त्री-ग्रह हैं। बुध पुरुष-नपुंसक है। शनि स्त्री-नपुंसक है। बुध, बृहस्पति और शुक्र शुभ ग्रह हैं। सूर्य क्रूर है। मंगल, शनि, राहु और केतु पाप ग्रह हैं। क्षीण चन्द्रमा अशुभ एवं पूर्ण चन्द्रमा शुभ माना गया है। इसी प्रकार बुध, यद्यपि स्वभावतः शुभ है, लेकिन, वह शुभ ग्रहों के साथ शुभ और पापग्रहों के साथ पापी हो जाता है।

सिंह, वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला और कुम्भ राशियों पर सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों का क्रमशः मूलत्रिकोण होता है। जैसे सिंह में सूर्य का, वृष में चन्द्रमा का आदि।

शुक्र-बृहस्पति ब्राह्मण; सूर्य-मंगल क्षत्रिय, बुध शूद्र; चन्द्रमा वैश्य तथा राहु-शनि म्लेच्छ ग्रह गिने जाते हैं। सूर्य का लाल, चन्द्रमा का गोरा, मंगल का गुलाबी, बुध का हरा, बृहस्पति का रंग पीला, शुक्र का सफेद और शनि-राहु का काला रंग है।

सूर्य राजा, चन्द्रमा तपस्वी, मंगल स्वर्णकार, बुध पण्डित, बृहस्पति

सर्राफ, शुक्र वनिया, शनि कहार, राहु चमार या मेहतर एवं केतु भील है। मंगल जवान, बुध वालक, चन्द्रमा एवं शुक्र किशोर, सूर्य-गुरु-शनि और राहु बुरे ग्रह हैं।

सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति-सत्वगुणी; बुध, शुक्र, रजोगुणी; और शनि-राहु-मंगल तमोगुणी हैं।

सूर्य और चन्द्रमा राहु से पीड़ित होने पर विशेष निर्बल होते हैं। जिस ग्रह के दोनों ओर पापी ग्रह हों तथा सम राशि या सम नवांशक में बैठे हुए को पापी देखते हों, वह भी निर्बल ही होता है।

ताजक में दृष्टि-विचार—ताजक में ग्रहों की दृष्टि जातक से भिन्न और विपरीत मानी जाती है। वर्षफल के अध्ययन में ग्रहों की दृष्टि का विचार विशेष सहायता देता है।

(१) वर्ष-कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्रदृष्टि से देखता है। यह दृष्टि शुभ और बलवती है। इसको **'मित्र-दृष्टि'** कहते हैं।

✓(२) ग्रह अपने भाव से तीसरे और ग्यारहवें भाव को **'गुप्त मित्र दृष्टि'** से देखता है जो कि सम है।

(३) अपने भाव से चौथे और दसवें स्थान को ग्रह **गुप्त शत्रु-दृष्टि** से देखता है जो अशुभ है।

(४) अपने भाव से पहले और सातवें भावों को ग्रह **प्रत्यक्ष शत्रु-दृष्टि** से देखता है जो विशेष अशुभ है।

उदाहरण :—जैसे वर्ष-कुण्डली में पांचवें भाव में गया हुआ ग्रह अथवा नवें भाव में गया हुआ ग्रह, लग्न को प्रत्यक्ष मित्र-दृष्टि से देखेगा। यदि वह लग्न में या सातवें भाव में होगा तो लग्न पर उसकी दृष्टि १।७ पड़ेगी जो प्रत्यक्ष शत्रु-दृष्टि कहलायेगी। इसी प्रकार तीसरे या ग्यारहवें भाव में स्थित ग्रह की दृष्टि लग्न पर 'गुप्त मित्र-दृष्टि' के रूप में पड़ेगी।

सामान्यतया ग्रह अपनी मित्र या शत्रु-दृष्टि से ही लाभ-हानि या

शुभाशुभ फल दे सकता है। गुप्त मित्र या गुप्त शत्रु दृष्टि का विशेष प्रभाव नहीं होता।

ग्रहों का शुभ अथवा अशुभ होना – (१) पुरुष-ग्रह का स्त्री-राशि में और स्त्री-ग्रह का पुरुष-राशि में होना वृद्धावस्था को बतलाता है। ऐसी स्थिति में ग्रह अपना वास्तविक फल नहीं दे सकता।

(२) जो ग्रह वक्री या अस्त या नीच स्थान में हो वह निर्बल होता है। निर्बल ग्रह प्रायः अशुभ फल देते हैं।

(३) छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी और इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ फलदायक होते हैं।

(४) निर्बल, वक्री अस्त, नीच और अशुभ भावों में स्थित पूर्ण शुभ ग्रह भी शुभ फल नहीं देते।

(५) पापी ग्रह बलवान् होकर अपनी राशि या अपने उच्च स्थान में पड़ा हो तो अनिष्ट फल को दूर कर देता है।

(६) जो ग्रह अपनी राशि में होता है उसका फल उसके स्वभाव के अनुसार होता है। दूसरे ग्रह की राशि में स्थित ग्रह का फल मिश्रित होता है।

(७) जो ग्रह शुभ ग्रहों के साथ हो या जिसकी अगली और पिछली (निकटस्थ) राशि में शुभ ग्रह हों तो वह बलवान् होने पर लाभदायक और शुभ-फलदायक होता है। इसी प्रकार अशुभ ग्रहों के साथ या मध्य में पड़ा ग्रह अशुभ फलदायक होता है।

(८) जो ग्रह वक्री से मार्गी होने वाला हो वह विपरीत फल करता है।

(९) जो ग्रह अपनी राशि में और अपने ही नवांश में होता है, वह वर्गोत्तम कहा जाता है। इसका फल विशेष शुभदायी है।

(१०) शुभ ग्रह के नवांश में गया हुआ ग्रह शुभ फल देता है। शनि और मंगल के नवांश में गये शुभ ग्रह भी अशुभ फल देते हैं।

(११) शनि और मंगल की हद्दा में स्थित शुभ ग्रह भी कभी-

कभी अशुभ फल देते देखे गये हैं।

(१२) उदय ग्रह शुभ फलदायक होता है, अस्त ग्रह प्रायः मान और अर्थ का नाश करने वाला होता है। बुध चूंकि सूर्य के समीप रहता है, इस कारण, वह अस्त होता हुआ भी अशुभ नहीं होता।

(१३) मन्द गति में ग्रह को कष्टदायक फल देने वाला कहा गया है। यदि वक्री से मार्गी होकर मन्द गति हो तो शुभ फलदायक होता है।

(१४) ग्रहों के शुभाशुभ का निर्णय राशि, भाव, नवांश, दृष्टि और पंचवर्गी बल के आधार पर करना चाहिये।

: २ :

आइये, वर्षकुण्डली बनायें

वर्षकुण्डली बनाने का सिद्धान्त : वर्ष ध्रुवक बनाने की सरल विधियाँ : प्राचीन मतानुसार सारिणी (क) (ख) : नवीन मतानुसार सारिणी : कौनसा मत विशेष उपयुक्त है ? : वर्ष-प्रवेश की तिथि और लग्न का ज्ञान : उदाहरण —वर्षकुण्डली : वर्ष-प्रवेश में शुभाशुभ तिथि, वार और नक्षत्रः मुंथा क्या है ? : मुंथा कहाँ रखें ?

सिद्धान्त—वर्ष-कुण्डली के आधार जन्मकालीन इष्ट और स्पष्ट सूर्य हैं। जन्म के समय सूर्य जिस राशि, अंश, कला, विकला में स्थित था, ठीक उसी स्थल पर जब सूर्य पुनः घूमकर (लौटकर) आ जाता है तो मनुष्य को एक विशेष शुभाशुभ शक्ति प्रदान करता है। इसी सिद्धान्त पर वर्षकुण्डली का अध्ययन किया जाता है। पृथ्वी के भ्रमण के कारण सूर्य की स्थिति में अन्तर आता रहता है और लोक-व्यवहार में यह सूर्य का भ्रमण कहलाता है।

वर्षकुण्डली ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम वर्षप्रवेश का इष्ट ज्ञात करना होता है। इष्ट ज्ञात करने के लिए गत वर्षों के ध्रुवक या ध्रुवांक जन्मकालीन इष्टकाल में जोड़ने होते हैं।

ध्रुवक बनाने की सरल विधियाँ:—प्रथम विधि:—जिस संवत् का वर्ष बनाना हो उस संवत् से जन्म संवत् हीन करने से गताब्द या गत वर्ष ज्ञात होते हैं। गताब्द को १।१५।३१।३० से अलग-अलग गुणा करके ६० का भाग देकर ध्रुवांक ज्ञात किया जा सकता है। सबसे पहला अंक वार का है अतः उसमें ७ का भाग लगाया जाना चाहिए।

उदाहरण—	**वार**		**घड़ी**		**पल**		**विपल**
	१	—	१५	—	३१	—	३०
गताब्द	× १०		१०		१०		१०
	१०		१५०		३१०		३००
	+ २		५		५		६० भाग
	१२		१५५		३१५		×
	५		३५		१५		

गताब्द १० के ध्रुवांक—५।३५।१५।०

द्वितीय विधि—वर्ष सवाया अर्द्ध करि, पुनि ड्योढ़ा करि देय।
वार घटी पल जोड़ के वर्ष ध्रुवा कहि देय।

उदाहरण—	**वार**		**घड़ी**		**पल**		**विपल**
गताब्द १० का सवाया	१२	—	३०	—	०	—	०
गताब्द १० का आधा	०	—	५	—	०	—	०
गताब्द १० का ड्योढ़ा	०	—	०	—	१५	—	०
	१२	—	३५	—	१५	—	०
	५						

उपर्युक्त गताब्द के ध्रुवांक में जन्मकालीन इष्ट, वार-सहित जोड़ना चाहिए।

प्राचीन मतानुसार सारिणी (क)

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४
घ०	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२
प०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२
वि०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घ०	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
प०	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५
वि०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
वार	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०
घ०	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८
प०	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७
वि०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घ०	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
प०	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
वि०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घ०	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
प०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
वि०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

प्राचीन मतानुसार सारिणी (ख)

आयु	दिन	घटी	पल	विपल
१	१	१५	३१	३०
२	२	३१	३	०
३	३	४६	३४	३०
४	५	२	६	०
५	६	१७	३७	३०
६	०	३३	९	०
७	१	४८	४०	३०
८	३	४	१२	०
९	४	१९	४३	३०
१०	५	३५	१५	०
२०	४	१०	३०	०
३०	२	४५	४५	०
४०	१	२१	०	०
५०	६	५६	१५	०
६०	५	३१	३०	०
७०	४	६	४५	०
८०	२	४२	०	०
९०	१	१७	१५	०

कुछ पंचांगों में उक्त प्रकार से सारिणी दी होती है। इसका उपयोग भी सरल है। कल्पना करें कि हमें २९वें वर्ष का वर्षफल बनाना है। यहाँ गताब्द या गतवर्ष २८ हुए। २८वें वर्ष के ध्रुवांक इस प्रकार ज्ञात किये जायेंगे—

प्रथम २० वर्ष का ध्रुवांक—४—१०—३०—०
फिर ८ ,, ,, ,, —३—४—१२—०
योग २८ ,, ,, ,, —७—१४—४२—०

नवीन मतानुसार सारिणी—सूर्य के उसी राशि, अंश, कला-विकला पर पुनः घूमकर आने में जितना समय लगता है उसके परिमाण के विषय में विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न हैं। 'सूर्य सिद्धान्तानुसार' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल, ३० विपल है जबकि दृश्य गणित (आधुनिक वेधशालाओं से प्रमाणित) से यह समय केवल ३६५ दिन, १५ घड़ी, २२ पल और ५७$\frac{१}{२}$ विपल है। इस कारण दोनों मतों में लगभग ८$\frac{१}{२}$ पल या ३$\frac{१}{३}$ मिनट का अन्तर है। प्रत्येक गताब्द में यह अन्तर बढ़ता जाता है और वर्ष ध्रुवांक और वर्षप्रवेश इष्ट में काफी अन्तर पड़ जाता है। यहाँ इसी नवीन मत से गताब्द के ध्रुवांक की सारिणी दी जा रही है।

वेधसिद्ध सारिणी

गताब्दः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४
घ०	१५	३०	४६	१	१४	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०
प०	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	२८	२१	४४
वि०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५
गताब्द	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घ०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
प०	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८
वि०	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०
घ०	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२
प०	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४०	३	२६	४९	१२
वि०	२७	२४	२१	१८	१५	४२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	१५

गताब्द	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घ०	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
प०	४५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३७	५७
वि०	४२	३९	३६	३२	३०	३७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्दाः	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३
घ०	३८	५३	९	२४	३९	५५	१७	२६	१	५६
प०	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	४३	४६+
वि०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०
गताब्दाः	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घ०	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
प०	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	३३	३६
वि०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

कौनसा मत विशेष उपयुक्त है ?—वर्ष-प्रवेश के इष्ट के लिये दो प्रकार की सारिणियां और दो मतों का अन्तर देखकर यह शंका उत्पन्न हो सकती है कि आखिर किस मत से वर्ष-कुण्डली निकाली जाय। वर्तमान भारत के प्रायः सभी पण्डितों ने नये मत से वर्षकुण्डली निकालने पर जोर दिया है। हम भी पाठकों को अपने सामान्य अनुभव और क्षेत्र के आधार पर इसी नवीन मत से वर्ष कुण्डलियां तैयार करने का परामर्श देंगे। हां, अरिष्ट आदि विशेष योगों में दोनों प्रकार से कुण्डलियां बनाकर भी अध्ययन किया जा सकता है। खेद है कि परम्परागत ढंग से कार्य करने वाले ज्योतिषी बन्धु लगातार उसी पुरानी पद्धति से कुण्डली निकाल रहे हैं और स्वतः ही जो (कई कारणों से) पचास-साठ प्रतिशत फलित मिलता रहता है उसी से सन्तोष कर लेते हैं।

वर्ष-प्रवेश की तिथि और लग्न का ज्ञानः—गताब्द को ११ से गुणा कर १७० का भाग देना चाहिये। लब्धि को पिछले गुणनफल में ही जोड़कर, जन्मतिथि भी शुक्ल पक्षादि क्रम से जोड़नी चाहिये। योग में तीस का भाग लगाकर शेष अंक द्वारा वर्ष-प्रवेश की तिथि मालूम कर सकते हैं।

उदाहरण—गताब्द संख्या १० हो और जन्म तिथि १५+२ हो तो, (क) (१०+११)÷१७०=लब्धि ०;

(ख) (०+११०) + १७=१२७;

१२७÷३०=४ लब्धि ७ शेष

इस प्रकार शुक्ल पक्ष की सप्तमी वर्ष प्रवेश की तिथि होगी।

इसी प्रकार गत वर्षों को ३ से गुणा करके दो स्थानों में अलग-अलग रखना चाहिये। प्रथम स्थान वाले गुणनफल में ३० का भाग दें और लब्धि को दूसरे स्थान वाले गुणनफल में जोड़कर १२ का भाग लगाना चाहिये। शेष को जन्म लग्न में जोड़कर वर्ष-प्रवेश की लग्न ज्ञात की जा सकती है।

उदाहरण—

(क) १०×३=३०, (ख) १०×३=३०;
३०÷३०=१, शेष० ३०+१=३१÷१२
=२लब्धि, ७ शेष

जन्म लग्न अगर कर्क ४ हो तो—७+४=११ वर्ष-प्रवेश लग्न होगी।

उदाहरण—वर्ष-कुण्डली

जन्म चैत्र कृष्ण पक्ष ४; संवत् १९९१ (२४ मार्च १९३५); रविवार, इष्टम् २९।१२; जन्म नक्षत्र—विशाखा; जन्म स्थान—जयपुर अक्षांश २६.५५ रेखांश ७५.५२।

वर्तमान संवत्—(२०२७)—जन्म संवत् १९९१=३६

गताब्द ३६, वर्ष प्रवेश ३७

गताब्द (३६) का इष्ट (वेधसिद्ध नवीन वर्षमानानुसार)

	वार	घ०	प०	विपल
	३	१३	४६	१२
जन्म इष्ट +	१	२९	१२	०
योग =	४	४२	५८	१२

वर्ष प्रवेश का इष्ट ४२।५८।१२; सारिणी के अनुसार लग्न ७।१५

वर्ष लग्नम्

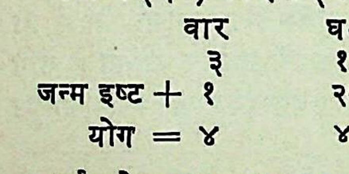

कु. सं. १

वर्ष-प्रवेश के समय शुभाशुभ तिथि-वार और नक्षत्र—यदि वर्ष प्रवेश के समय चतुर्थी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी अमावस्या अथवा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा नहीं हो तो सामान्यतया वर्ष शुभ हो। वारों में चन्द्रवार, बुधवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार विशेष शुभ माने गये हैं। इसी प्रकार अश्विनी

मृगशीर्ष, हस्त, पुष्प, पुनर्वसु, स्वाति और रेवती नक्षत्र वर्ष-प्रवेश के लिये विशेष प्रशस्त माने गये हैं।

वर्ष-प्रवेश के लिये निन्दित, अशुभ योग अथवा भद्रा मिश्रित योग शुभ फलदायक नहीं होते।

यदि जन्म नक्षत्र, जन्म मास और उसी वार तथा तिथि में वर्ष-प्रवेश हो तो बहुत ही शुभ होता है। केवल जन्म लग्न वर्ष-प्रवेश के समय में आ जाने से वर्ष द्विजन्मा कहलाता है। यदि छठे-आठवें घर के स्वामी केंद्र में हों तो वह द्विजन्मा खराब होता है। वर्ष लगते ही ज्वर, कफ, शूल, ताप आदि रोग करता है। इसका प्रसार विशेषतः २१ दिन पर्यन्त रहता है।

मुन्था क्या है ?—ताजक शास्त्रों में कुछ आचार्यों ने मुन्था को एक ग्रह माना है। वस्तुतः इस प्रकार का कोई ग्रह नहीं है फिर भी मुन्था का फल ग्रह के समान ही महत्वपूर्ण है। 'दैवज्ञ कल्पद्रुम' के अनुसार जन्म लग्न को ही मुन्था कहते हैं। दैवज्ञ शिरोमणि पं० चुन्नीलाल ने अपने ग्रन्थ 'वर्ष-विचार' में लिखा है कि "इन्तिहा को ताजक कर्ता लोगों ने मुन्था, मिन्थिहा या मुन्थहा आदि शब्दों से पुकारा है। यह इंथिहा शब्द इन्तहा शब्द का अपभ्रंश है जिस का अर्थ समाप्ति है। जहां वर्ष-क्रम की गिनती में जन्म लग्न की समाप्ति हो जाती है उसी राशि को वर्षफल में इन्तिहा कहते हैं अर्थात् पहले वर्ष में जन्म लग्न की राशि और दूसरे वर्ष में दूसरे स्थान की राशि, तीसरे वर्ष में तीसरे भाव भी राशि आदि।"

मुन्था कहां रखें ? :—(१) जन्म लग्न में गत वर्ष जोड़ कर बारह का भाग देना चाहिये। जो शेष रहे, वहीं मुन्था रखनी चाहिये।

उदाहरण—उपर्युक्त वर्ष कुण्डली का जन्मलग्न कन्या (६) है अतः ६+३६=४२, ४२ में १२ का भाग लगाने पर शेष ६ रहे। अतः वर्ष-प्रवेश-कुण्डली में कन्या राशि में मुन्था लिखी।

(२) गताब्द में एक जोड़कर बारह का भाग देने पर जो शेष रहे उसे जन्मकुण्डली की लग्न से गिनकर वर्ष कुण्डली में लिखना चाहिये।

गताब्द ३६+१=३७; बारह (१२) से भाग देने पर शेष=१ जन्म लग्न से पहला (१) स्थान-कन्या (६) राशि। अतः मुन्था कन्या में ही स्थित की जायेगी।

मुन्था स्थापित करनें के बाद जन्म पत्रा की तरह ही ग्रह स्पष्ट और भावस्पष्ट करके चलित चक्र बनाना चाहिये।

ग्रह स्पष्ट

सूर्य	चन्द्र	मं०	बुध	बृ०	शु०	श०	रा०	के०
११	१०	८	११	७	१०	०	९	३
९	११	१३	२६	१३	०	२६	२८	२८
५९	४०	५७	१५	०	४८	५	९	९

पंचवर्गी बल और वर्षेश निर्णय

: ३ :

पंच वर्ग गणित : उच्च बलः स्वगृही बलः हद्दा बल; द्रेष्काण बल; और नवांश बल। हर्ष बल साधनः पंचाधिकारीः त्रिराशिपति विचारः बली ग्रह का निर्णय और वर्षेश का निर्णय।

पंच वर्ग गणित—वर्षफल में वर्षेश का निर्णय करनें के लिये और ग्रहों के दशा फल ज्ञात करनें के लिये पंचवर्ग का गणित लिखा जाता है। वर्षफल का यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग है। इस पंचवर्गी बल में गृहबल, हद्दाबल, 'उच्चबल, द्रेष्काण बल और नवांश बल शामिल किया गया है।

अपनी राशि में जो ग्रह हो उसका ३० विश्वाबल, जो अपने उच्च में हो उसका २० विश्वाबल, जो अपने हद्दा में हो उसका १५ विश्वाबल, जो अपने द्रेष्काण में हो उसका १० विश्वाबल और जो अपने नवांश में हो उसका ५ विश्वाबल होता है। इन पांचों अधिकारियों के बलों को जोड़कर चार का भाग देनें से विश्वाबल या विशोषक बल निकलता है।

यदि कोई ग्रह अपनी राशि, अपनें उच्च, अपनें हद्दा, अपनें द्रेष्काण और अपनें नवांश में न पड़ा हो तो उसके बल का विचार निम्न प्रकार करना चाहिये:—

जो ग्रह अपने मित्र के घर में हो वह तीन चौथाई बलवान्, सम-राशि में हो तो आधा बलवान् एवं शत्रु राशि में हो तो चौथाई बलवान् होता है। यह बलसाधन की प्रक्रिया गृह, हद्दा, उच्च, नवमांश और द्रेष्काण में एक-सी होती है। नीचे के चक्र से यह बात और स्पष्ट हो जाती है :—

बल बोधक चक्र

पतयः	स्व०	मि०	सम०	शत्रु
गृहेश	३० ०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०
हद्देश	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५
द्रेष्काणेश	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०
नवमांशेश	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५

स्वगृही बल—यदि कोई ग्रह वर्षकुण्डली में स्वराशि में हो तो उसे ३० बल प्राप्त होता है। यदि मित्र की राशि में हो तो उसे २२।।', यदि सम की राशि में हो तो १५, शत्रु की राशि में हो तो ७।। बल समझना चाहिये। मैत्री विचार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति से करना चाहिये। मैत्री-चक्र बना लेने से यह कार्य सुगम हो जाता है।

मैत्री चक्र

	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
मित्र	बृ०	श० मं०	श०शु० चं०	०	सू० बु०	श० मं०	मं० चं० शु०
सम	श०शु० मं०	सू०बु०	बृ०	श०शु० चं०	मं० श०	सू०बु०	बृ०सू० बु०
शत्रु	बु० मं०	शु० बृ०	सू० बु०	सू०मं०	चं० शु०	चं० बृ०	+

प्रस्तुत उदाहरण कुण्डली में सूर्य बृहस्पति के घर में है। मैत्री चक्र के अनुसार बृहस्पति सूर्य का मित्र है अतः सूर्य का बल $\frac{२२}{३०}$ हुआ। इसी प्रकार मंगल बृहस्पति के घर में है। मंगल का बृहस्पति सम है अतः मंगल का बल १५ हुआ।

उच्च बल—सूर्यादि सप्त ग्रहों के पूर्णोच्च स्थान अर्थात्, जहां वह पूर्ण उच्च होते हैं और उनके परम नीच स्थान भी आगामी चक्र में दिये गये हैं। जो ग्रह पूर्ण उच्च स्थान पर हो उसे पूर्ण बली कहते हैं। इसकी नाप या (बल) २० है। उदाहरण के लिये अगर किसी वर्ष-कुण्डली में सूर्य मेष राशि के १० अंश पर हो तो उसे २० बल मिलेगा यदि सूर्य परम नीच स्थान में हो अर्थात् तुला राशि के १० अंश पर हो तो उसे उच्च बल के नाम पर ० प्राप्त होगा। मध्य में अनुपात से समझना चाहिये।

उच्च नीच राशि-चक्र

	र०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
उच्च राशियाँ:	० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०
नीच राशियाँ:	६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	९ ५	५ २७	० २०

उच्चबल ज्ञात करने की सरल विधि यह है कि वर्ष कुण्डली के स्पष्ट ग्रहों से उन-उन ग्रहों के नीच राशि-अंश घटाने चाहियें। यदि शेष में राशि का अंक ५ से अधिक हो तो उसे पुनः १२ राशि से हीन करना चाहिये। फिर शेष राशि को ३० से गुणा कर अंश जोड़िये। ९ का भाग लगाइये। उच्चबल का प्रथम अंक आ जायेगा। फिर शेष को ६० से गुणा कर, कला जोड़कर ९ का भाग लगाने पर दूसरा अंक भी ज्ञात हो जायेगा।

उदाहरण—के लिये वर्षकुण्डली का स्पष्ट सूर्य यदि ११।९।५९ हो तो उसका उच्चबल इस प्रकार ज्ञात किया जा सकेगा:—

११—९—५९—०
६—१०—०—०
४—२९—५९—०

× ३०
१२०
+ २९
९)१४९(१६
९
५९
५४
५

५ शेष
×६०
३००
+५९
९)३५९(४०
३६०
—१

अतः सूर्य का उच्चबल=१६।४० हुआ।

इसके अतिरिक्त सारिणी द्वारा भी उच्चबल साधन विना किसी विशेष गणित के ज्ञात किया जा सकता है। कुछ पंचांगों और पुस्तकों में विभिन्न ग्रहों की अलग-अलग उच्चबल साधन सारिणी दी रहती है।

हद्दा बलः—यदि ग्रह अपनी हद्दा में हो तो उसे १५ बल प्राप्त होता है। यदि मित्र की हद्दा में हो तो ११¼। यदि सम की हद्दा में हो तो ७½, यदि शत्रु की हद्दा में हो तो ३¾। आगे दिये गये हद्दा चक्र से हद्दाबल सरलता से ज्ञात किया जा सकता है।

उदाहरण के लिये वर्षकुण्डली में सूर्य ११।९ है तो हद्दा चक्र में मीन राशि के नीचे १२ अंश तक शुक्र की हद्दा हुई। मैत्री चक्र में शुक्र सूर्य का सम है अतः सूर्य का हद्दा बल ७½ हुआ।

हद्दा चक्र

मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मीन
बृ० ६	शु० ८	बु० ६	मं० ७	बृ० ६	बु० ७	श० ६	मं० ७	बृ० १२	बु० ७	शु० ७	शु० १२
शु० ६	बु० ६	शु० ६	शु० ६	शु० ५	शु० १०	बु० ८	शु० ४	शु० ५	बृ० ७	बु० ६	बृ० ४
बु० ८	बृ० ८	बृ० ५	बु० ६	श० ७	बृ० ४	बृ० ७	बु० ८	बु० ४	शु० ८	बृ० ७	बु० ३
मं० ५	श० ५	मं० ७	बृ० ७	बु० ६	मं० ७	शु० ७	बृ० ५	म० ५	श० ४	मं० ५	मं० ९
श० ५	म० ३	श० ६	श० ४	मं० ६	श० २	मं० २	श० ६	श० ४	मं० ४	श० ५	श० २

द्रेष्काण बलः—यदि वर्ष-कुण्डली में ग्रह अपने द्रेष्काण में हो तो १० बल, मित्र के द्रेष्काण में हो तो ७$\frac{1}{2}$, सम के द्रेष्काण में ५ और शत्रु के द्रेष्काण में २$\frac{1}{2}$ बल मिलता है।

एक राशि में ३ द्रेष्काण होते हैं। दस अंश तक प्रथम द्रेष्काण, २० अंश तक द्वितीय द्रेष्काण, ३० अंश तक तृतीय द्रेष्काण होता है।

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०
प्रथम I	म० १०	बु० १०	बृ० १०	शु० १०	श० १०	सू० १०	च० १०	मं० १०	बु० १०	बृ० १०	शु० १०	श० १०
द्वितीय II	सू० २०	चं० २०	मं० २०	बु० २०	बृ० २०	शु० २०	श० २०	सू० २०	चं० २०	मं० २०	बु० २०	बृ० २०
तृतीय III	शु० ३०	श० ३०	सू० ३०	चं० २०	मं० ३०	बु० ३०	बृ० ३०	शु० ३०	श० ३०	सू० ३०	चं० ३०	मं० ३०

उदाहरण के लिये, वर्ष कुण्डली में सूर्य ११।९ है अतः सूर्य मीन राशि के ९ अंश पर हुआ। चक्र से ज्ञात हुआ कि सूर्य शनि के द्रेष्काण में है। शनि सूर्य का सम है अतः सूर्य का द्रेष्काण बल ५ हुआ। इसी प्रकार चन्द्रमा बुध के द्रेष्काण में है। बुध चन्द्रमा का सम है अतः चंद्रमा का भी द्रेष्काण बल ५ ही हुआ।

नवांश बल—-राशि के नवम भाग को नवांश कहते हैं। नवांश में प्रत्येक ३० अंशों को ९ भागों में बांट दिया जाता है। इस प्रकार ३ अंश २० कला का एक नवांश होता है। नवांश का फल विशेष माना गया है। क्योंकि ग्रह अपना फल छोड़कर नवांश का फल देता है।

यदि वर्ष-कुण्डली का ग्रह अपने नवांश में हो तो ५ बल, यदि मित्र के नवांश में हो तो ३$\frac{३}{४}$, यदि सम के नवांश में हो तो २$\frac{१}{२}$ और यदि शत्रु के नवांश में हो तो १$\frac{१}{४}$ बल मिलता है।

नवांश चक्र

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मीन	राशि अंश—कला
प्रथम भाग	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	३—२०
द्वितीय ,,	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६—४०
तृतीय ,,	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०— ०
चतुर्थ ,,	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३—२०
पंचम ,,	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	१६—४०
षष्ठ ,,	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०— ०
सप्तम ,,	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३—२०
अष्टम ,,	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६—४०
नवम ,,	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०— ०

उदाहरण के लिये चंद्र स्पष्ट १०।११।४० है। नवांश चक्र के अनुसार चंद्रमा मकर के नवांश में है। मकर का स्वामी शनि मैत्री चक्र के अनुसार चन्द्रमा का मित्र है। अत: चन्द्रमा का नवांश बल ३।४५ हुआ। इसी प्रकार मंगल भी सूर्य के जो उसका शत्रु है, नवांश में गया है। अत: मंगल का नवांश बल भी १ $\frac{१}{१५}$ हुआ।

हर्षबल साधन—ग्रहों के हर्षस्थान चार प्रकार के होते हैं—

(१) वर्ष लगन से सूर्य ९वें, चंद्र ३रे, मंगल ६ठे, बुध लग्न में, गुरु ११ वें, शुक्र ५वें और शनि १२वें स्थान में हो तो ये ग्रह हर्षित होते हैं।

(२) स्वगृही और स्वोच्च ग्रह भी हर्षित माने गये हैं।

(३) वर्ष लग्न से १।२।३।७।८।९वें भावों में स्त्री ग्रह और ४।५।६।१०।११।१२वें भावों में पुरुष-ग्रह हर्षित होते हैं।

(४) पुरुष ग्रह—रवि, मंगल,बृहस्पति—दिन में और स्त्री ग्रह तथा नपुंसक ग्रह—शुक्र, चंद्र, बुध, शनि रात में वर्ष-प्रवेश होने पर हर्षित होते हैं।

जहां हर्षबल प्राप्त हो वहां ५ विश्वात्मक बल होता है। योग करने के वाद जिस ग्रह का हर्षबल ५ विश्वा हो वह अल्पबली, १० विश्वा हो वह मध्यबली, १५ विश्वा हो वह पूर्णबली और शून्य विश्वा हो वह निर्बल माना जाता है। हर्षित ग्रह अपनी दशा में अच्छा फल देते हैं।

बृहत् पंचवर्गी चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि बल	२२ ३०	२२ ३०	१५ ०	२२ ३०	१५ ०	२२ ३०	२२ ३०
उच्च बल	१६ ४०	१० ५७	१५ ५	१ १४	५ ४६	१० ४५	० ४०
हद्दा बल	७ ३०	७ ३०	११ १५	३ ४५	११ १५	१५ ०	१५ ०
द्रेष्काण बल	५ ०	५ ०	७ ३०	२ ३०	७ ३०	१० ०	७ ३०
नवांश बल	१ १५	३ ४५	१ १५	२ ५०	१ १५	५ ०	३ ४५
योग	५२ ५५	४६ ४२	५० ०५	३२ ४६	४० ४६	६३ १५	४६ २५
विश्वा	१३ १३ ४५	१२ २५ ३०	१२ ३१ १५	८ १२ १५	१० ११ ३०	१५ ४८ ४५	१२ २१ १५

त्रिराशिपति विचार

वर्ष में पांच अधिकारियों का विचार किया जाता है जिसमें त्रिराशिपति भी एक है। वर्ष लग्न द्वारा निम्न चक्र की सहायता से सरलता से त्रिराशिपति ज्ञात किया जा सकता है :—

हर्ष-बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
प्रथम हृ० ब०	०	०	०	०	०	०	०
द्वितीय ,,	०	०	०	०	०	०	०
तृतीय ,,	५	०	०	०	०	०	०
चतुर्थ ,,	०	५	०	५	०	५	५
ऐक्य	५	५	०	५	०	५	५

त्रिराशिपति-चक्र

वर्ष लग्न	मे०	वृ०	मि०	क०	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मीन
दिनपति	सू०	शु०	श०	शु०	वृ०	चं०	बु०	मं०	श०	मं०	वृ०	चं०
रात्रिपति	बु०	चं०	बु०	मं०	सू०	शु०	श०	शु०	श०	मं०	वृ०	चं०

उदाहरण कुण्डली में वृश्चिक लग्न है। रात्रि का इष्ट है। चक्र के अनुसार वृश्चिक राशि के नीचे शुक्र त्रिराशिपति हुआ।

लघु पंचवर्गी विचार—वर्षेश निर्णय के लिये लघु पंचवर्गी का विचार किया जाता है। इसमें ज्योतिषी लोग पांच ग्रहों को वर्षेश बनने के लिये अधिकार देते हैं।

लघु पंचवर्गी चक्र

वर्ष लग्नपति	जन्म लग्नपति	मुंथा पति	त्रिराशि पति	दिन-रात्रि पति
मंगल	बुध	बुध	शुक्र	शनि

वर्षेश का निर्णय—वर्ष के पंच-अधिकारियों में जो ग्रह बलवान् होकर लग्न को देखता हो वही वर्षेश होता है। यदि पंचाधिकारियों में कई ग्रहों का बल समान हो तो जो लग्न को देखता हो, वही ग्रह वर्षेश होता है।

पंचाधिकारियों की लग्न पर समान दृष्टि हो और बल भी बराबर हो तो जिसे ज्यादा अधिकार हो वही वर्षेश बनता है। यदि अधिकार भी समान हो तो मुंथेश ही वर्षेश होता है। कई आचार्यों का मत है कि पंचाधिकारियों की दृष्टि एवं बल समान हो तो समय-पति—दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य राशीश और रात में वर्ष प्रवेश हो तो चंद्रराशीश—ही वर्षेश होता है।

यदि वर्ष कुण्डली की लग्न पर पांचों ही अधिकारियों की दृष्टि नहीं हो तो वर्ष लग्नेश ही वर्षेश होता है।

चन्द्र वर्षेश का निर्णय—ताजिक-शास्त्र के कई आचार्यों ने चन्द्रमा को वर्षेश होने का अधिकारी नहीं माना है। उनका मत है कि

प्रकृति से ही कोमल और जलीय चन्द्रमा अनुशासन का कार्य ठीक प्रकार से नहीं कर सकता। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि चन्द्रमा मन का स्वामी है। शासन केवल मात्र मन की इच्छा से नहीं होता। शारीरिक शक्ति की भी आवश्यकता होती है।

अतः पंचाधिकारियों में यदि चन्द्रमा वर्षेश आता हो तो वह जिस ग्रह के साथ 'इत्थशाल' योग करता हो, वही ग्रह वर्षेश होता है। यदि चन्द्र किसी ग्रह के साथ इत्थशाल नहीं करता हो तो वर्ष-कुण्डली का चन्द्रराशीश ही वर्षेश होता है।

हमारा विशेष अनुभव—चन्द्रमा के वर्षेश के विषय में हमें ताजिक शास्त्र के आचार्य श्री तेजसिंह का मत विशेष उपयुक्त जँचा है। उसके अनुसार यदि चन्द्रमा त्रिराशिपति हो, रात्रि को वर्ष प्रवेश हुआ हो, बलवान् होकर लग्न को देखता हो तो निश्चय ही चन्द्रमा को ही वर्षेश मानना चाहिये। ऐसा न होने पर पूर्वोक्त विधि अपनानी चाहिये।

: ४ :

वर्ष में विंशोत्तरी मुद्दा दशा

मुद्दादशा ज्ञात करने की सरल विधि : विंशोत्तरी मुद्दा दशा चक्र : मुद्दा अन्तर्दशा : मुद्दा अन्तर्दशा के चक्र : योगिनी मुद्दा दशा : योगिनी मुद्दा दशा-चक्र।

मुद्दादशा—अश्विनी से जन्म नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या हो, उसमें गतवर्षों को जोड़ देना चाहिये। योगफल में से दो घटाकर अवशेष में ९ का भाग देने से १ आदि शेष में क्रमशः सूर्य, चन्द्र, भौम राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है।

विंशोत्तरी दशा के वर्षों को ३ से गुणा करने से विंशोत्तरी मुद्दा दशा के दिन होते हैं।

उदाहरण—सूर्य ६ × ३ = १८ दिन, चन्द्रमा १० × ३ = ३० दिन अर्थात् १ मास, भौम २१ दिन (७ × ३), राहु १८ × ३ = ५४ दिन अर्थात् १ मास २४ दिन, गुरु १६ × ३ = ४८ दिन, शनि १९ × ३ = ५७ दिन, बुध १७ × ३ = ५१ दिन, केतु ७ × ३ = २१ दिन और शुक्र २० × ३ = ६० दिन अर्थात् २ मास की मुद्दा दशा होती है।

विंशोत्तरी मुद्दा दशा-चक्र

सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	ग्रह
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

वर्षपत्र में विंशोत्तरी मुद्दा-दशा लिखने का उदाहरण—जन्म नक्षत्र विशाखा है। अश्विनी से गणना करने पर १६ संख्या हुई। १६ + ३६ = ५२ — २ = ५० ÷ ९ = ५ ल० ५ शेष। बृहस्पति की दशा में वर्ष प्रवेश हुआ अतएव प्रारम्भ में गुरु दशा (जी०) रखकर चक्र बनाना चाहिये।

विंशोत्तरी मुद्दा दशा-चक्र

ग्रह दशा	गु०	श०	बु०	के०	शु०	र०	चं०	भौ०	रा०
मास दिन	१ १८	१ २७	१ २१	० २१	२ ०	० १८	१ ०	० २१	१ २४
संवत् २०२७	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८
११ ६	० २७	२ २४	४ १५	५ ६	७ ६	७ २४	८ २४	६ १५	११ ६

मुद्दा अन्तर्दशा ज्ञात करने की विधि—मुद्दा अन्तर्दशा निकालने का यह नियम है कि जिस ग्रह की दशा में अन्तर निकालना हो उस ग्रह की दशा को उसके ध्रुवांक से गुणा कर देना चाहिये। गुणा करने पर जो गुणनफल आवे उसमें साठ से भाग देने पर अन्तर्दशा के दिनादि होते हैं। ये ध्रुवांक निम्न लिखित हैं—

ध्रुवांक—सूर्य=४, चन्द्र ८, भौम=५, बुध=७, गुरु=१०, शुक्र=६, शनि=६, राहु=५, केतु=६

उदाहरण—सूर्य की अन्तर्दशा निकालनी है, अतः सूर्य मुद्दा की दिन संख्या १८ को ध्रुवांक ४ से गुणा किया। गुणनफल में ६० का भाग दिया तो—

१८×४=७२, ७२÷६०=१ दिन, शेष १२

१२×६०=७२० घटियां ७२०÷६०=१२ घटी।

अतः सूर्य की मुद्दा दशा में सूर्यान्तरदशा १।१२ दिन, घटी हुई। पाठकों की सुविधा के लिये यहां समस्त ग्रहों की अन्तर्दशा इसी विधि से गणित कर, लिखी जाती है।

मुद्दा दशान्तर्गत सूर्यान्तर्दशाचक्र

सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	ग्रह दशा
१	२	१	१	३	२	२	१	१	दिन
१२	२४	३०	३०	०	४२	६	४८	४८	घटी

मुद्दा दशान्तर्गत चन्द्रान्तर्दशाचक्र

च०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ग्रह दशा
४	२	२	५	४	३	३	३	२	दिन
०	३०	३०	०	३०	३०	०	०	०	घटी

मुद्दा दशान्तर्गत भौम दशान्तर्दशाचक्र

म०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ग्रह दशा
१	१	३	३	२	२	२	१	२	दिन
४५	४५	३०	९	२७	६	६	२४	४८	घटी

मुद्दा दशान्तर्गत राहुदशान्तर्चक्र

रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ग्रह दशा
४	९	८	६	५	५	३	७	४	दिन
३०	०	६	१८	२४	२४	३६	१२	३०	घटी

मुद्दा दशान्तर्गत गुर्वन्तर्दशाचक्र

गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ग्रह दशा
८	७	५	४	४	३	६	४	४	दिन
०	१२	३६	४८	४८	१२	२४	०	०	घटी

मुद्दादशान्तर्गत शन्यन्तर्दशाचक्र

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	ग्रह दशा
८	६	५	५	३	७	४	४	६	दिन
३३	३६	४२	४२	४८	३६	४५	४५	३०	घटी

मुद्दादशान्तर्गत बुधान्तर्दशाचक्र

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	म०	रा०	गु०	श०	ग्रह दशा
५	५	५	३	६	४	४	८	७	दिन
४७	६	६	२४	४=	१५	१५	३०	३६	घटी

मुद्दादशान्तर्गत केत्वन्तर्दशाचक्र

के०	शु०	सू०	चं०	म०	रा०	गु०	श०	बु०	ग्रह दशा
२	२	१	२	१	१	३	३	२	दिन
६	६	२४	४८	४५	४५	३०	६	२७	घटी

मुद्दादशान्तर्गत शुक्रान्तर्दशाचक्र

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	ग्रह दशा
६	४	८	५	५	१०	९	७	६	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

योगिनी मुद्दा दशा—अश्विनी से जन्म-नक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या आये उसमें ३ और गताब्द संख्या जोड़ने से जो योग-फल आये उसमें ८ का भाग देने से १ आदि शेष में क्रमश मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रा, उल्का सिद्धा और संकटा की दशा होती है।

भोगिनी दशा के वर्षों को १० से गुणा करने पर मुद्दा योगिनी दशा की दिनादि संख्या होती है। मंगला १×१०=१० दिन, पिंगला २×१०=२० दिन, धान्या ३×१०=३० दिन, भ्रामरी ४×१०=४० दिन, या १ मास १० दिन, भद्रा ५×१०=५० दिन या १ मास २० दिन, उल्का ६×१०=६० दिन—२ मास, सिद्धा ७×१०=७० दिन—२ मास १० दिन, और संकटा ८×१०=८० दिन—२ मास २० दिन की होती है।

योगिनी मुद्दादशा-चक्र

मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	↓ दशा
०	०	१	१	१	२	२	२	मास
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	दिन

उदाहरण—जन्मनक्षत्र विशाखा है, अश्विनी से गिनने पर १६ संख्या हुई। १६+३=१९+३६ गताब्द=५५÷८=६ ल० ७ शेष अतः मंगला से सातवीं दशा सिद्धा में वर्ष प्रवेश हुआ माना जायेगा।

योगिनी मुद्दादशा-चक्र

सि०	सं०	मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	दशा
२ १०	२ २०	० १०	० २०	१ ०	१ १०	१ २०	२ ०	मास दिन
२०२७	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८	२०२८
११ ९	१ १९	४ ९	४ १९	५ ९	६ ९	७ १९	९ ९	११ ९

राजस्थान और उत्तर भारत में वर्ष में प्रायः विंशोत्तरी मुद्दा दशा ही लगाई जाती है। आवश्यकतानुसार योगिनी दशा का भी प्रयोग कर फल-विवेचन में सूक्ष्मता और प्रामाणिकता लाई जा सकती है। वर्षफल के प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में विभिन्न अन्य दशाओं का भी उल्लेख है लेकिन आजकल उनका प्रयोग प्रायः नहीं किया जाता।

: ५ :

दशा-फल विचार

दशा-फल में ध्यान रखने योग्य बात

वर्ष-कुण्डली में विंशोत्तरी मुद्दा दशा का विचार करते समय निम्नलिखित तथ्यों का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए।

(१) वर्ष-कुण्डली में ग्रह की भावस्थ स्थिति।

(२) जन्म कुण्डली में ग्रह की भावस्थ स्थिति और वह किस भाव का स्वामी है?—इसका अध्ययन।

(३) वर्षकुण्डली में ग्रह किस राशि में स्थित है।

(४) कौन-कौन से ग्रह, वर्षकुण्डली में उसे देख रहे हैं।

(५) किन-किन ग्रहों के साथ विचारणीय ग्रह बैठा हुआ है?

(६) विचारणीय ग्रह पर मुन्थेश, वर्षेश और जन्म लग्नेश-क्या-क्या प्रभाव डाल रहे हैं?

(७) जन्म कुण्डली की कौनसी दशा अन्तर्दशा चल रही है?

(१) **सूर्य दशाफलः**—बलवान् और शुभ सूर्य की दशा में राजा से धन लाभ, नौकरी में पदोन्नति, व्यापार में लाभ, धर्म में अभिरुचि और शुभ यात्राएं होती हैं। व्यक्ति अपने कार्यों से यश प्राप्त करता है।

यदि सूर्य निर्बल हो, नीच राशि में हो, पाप-युत और पाप-दृष्ट हो तो इस दशा में परदेश की यात्रा, कर्ज की बढ़ोतरी, स्वास्थ्य

में गड़बड़ी, प्रियजनों से वियोग, राज्य से भय और कलह आदि अशुभ फल होते हैं।

यदि सूर्य कन्या राशि में हो तो कन्या रत्न की प्राप्ति होती है। तुला का सूर्य स्त्री-पुत्र की चिंता देता है। वृश्चिक का सूर्य प्रताप में वृद्धि करता है लेकिन अग्नि-पीड़ा और विष भय भी कर सकता है। मीन राशि में गया हुआ सूर्य अपनी दशा में वाहन लाभ, प्रतिष्ठा की वृद्धि, धन-मान की प्राप्ति और विषम ज्वर आदि फलों की प्राप्ति कराता है। यदि सूर्य बहुत अधिक पाप पीड़ित हो तो अपनी दशा में राज्य द्वारा परेशानियां अवश्य पैदा करता है। जमीन जायदाद, विक्री कर सम्पत्ति कर, आय कर आदि के सम्बन्ध में प्रायः विवाद हो सकता है। पारिवारिक शान्ति भी ऐसो स्थिति में नहीं रहती। सामान्यतया तीसरे, छठ, दसवें और ग्यारहवें भाव में गया हुआ सूर्य शुभ फल ही प्रदान करता है।

(२) चंद्र दशाफल:—पूर्ण, उच्च का, शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट बलवान् चन्द्रमा हो तो अपनी दशा में अनेक प्रकार से सम्मान, जलज वस्तुओं के व्यापार में विशेषलाभ, मानसिक प्रसन्नता, चुनाव में सफलता और विद्या, धन और जवाहरात आदि की प्राप्ति करवाता है।

अशुभ चन्द्रमा की दशा (जब चन्द्रमा निर्बली हो, नीच राशि में गया हो, पाप-युक्त दृष्ट हो) कलह, मानसिक दुःख, पागलपन, सिर में दर्द, धन-नाश और बदनामी प्रदान कराती है।

यदि चन्द्रमा मेष राशि में गया हो तो उसकी दशा में स्त्री-सुख, विदेश से प्रीति, कलह और सिर-रोग उत्पन्न होता है। वृषभ का चन्द्रमा धन लाभ, वाहन सुख और स्त्री से प्रेम करवाता है। मिथुन के चन्द्रमा में देशान्तर गमन और सम्पति लाभ होता है। कर्क का चन्द्रमा कला के प्रति प्रेम, गुप्त रोग, जल-यात्रा और धन-धान्य की वृद्धिकरता है। वृश्चिक का चन्द्रमा राजकीय अधिकारियों से विवाद

और भय देता है। सम्बन्धियों से झगड़ा कराता है। धन-धान्य की क्षति भी ऐसी अवस्था में इसकी दशा में होती है। मकर के चन्द्रमा में विभिन्न पवित्र तीर्थों की यात्रा होती है और मुकद्दमेबाजी में विजय प्राप्त होती है। कुंभ का चन्द्रमा व्यसन, ऋण, नाभि से ऊपर तथा नीचे पीड़ा, दांत और नेत्र में रोग उत्पन्न करता है। इसी प्रकार मीन के चन्द्रमा की मुद्दा दशा में अर्थागम, धन संग्रह, पुत्र-लाभ, शत्रु-नाश आदि शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

(३) **मंगल दशाफलः**—मंगल उच्च राशि में, स्वस्थान में, मूलत्रिकोणगत और शुभ ग्रहों से युत होकर बलवान् हो तो उसकी दशा में यश प्राप्ति, स्त्री-पुत्र का सुख, साहस की वृद्धि, भाइयों की वृद्धि, और धन-लाभ आदि शुभ फल होते हैं। व्यक्ति नया कार्य प्रारम्भ करता है और उसे चौपाये पशुओं से भी पर्याप्त लाभ हो सकता है।

यदि मंगल निर्बल हो और नीचादि राशियों में बैठा हो तो उसकी दशा में रक्त-विकार, भाइयों से विरोध, शत्रु-वृद्धि, धन-हानि, पशुओं में रोग और नाना प्रकार की बुराइयों में वृद्धि होती है। आकस्मिक दुर्घटना भी ऐसी दशा में हो सकती है।

मेष राशि में मंगल हो तो अपनी दशा में धन वृद्धि, यश का विस्तार और साहस प्रदान करता है। वृषभ का मंगल रोग, अन्य से लाभ और परोपकार में रत रखता है। मिथुन का मंगल विदेशवासी कुटिल, पित्त-वायु के रोग और अति व्ययी बनाता है। कर्क का मंगल रोग, मुकदमे में परेशानियां, भाइयों के मध्य गलतफहमियां और चिन्ता उत्पन्न करता है। बदनामी होती है। सिंह का मंगल राज्याधिकार प्रदान करता है। कन्या का मंगल पुत्र, भूमि और धन देता है। व्यापार में वृद्धि करता है। तुला का मंगल क्लेश उत्पन्न करता है, पुत्र और स्त्री का सुख नहीं मिलता। वृश्चिक के मंगल में पर्याप्त धन-धान्य की प्राप्ति होती है लेकिन अग्नि और शस्त्र-पीड़ा की

संभावना भी रहती है। आपरेशन आदि की संभावना भी हो सकती है। धनु का मंगल शुभ फल ही प्रदान करता है। मकर के मंगल में धन की पर्याप्त वृद्धि और चौपाये पशुओं से लाभ मिलता है। कार्य सिद्धि होती है। मंगल यदि कुम्भ में हो तो आचार का अभाव, दरिद्रता, रोग, व्यय अधिक और चिन्ता देता है। मीन राशि में गया हुआ मंगल भी अपनी मुद्दा दशा में ऋण, चिंता, विशूचिका रोग, खुजली और शारीरिक कष्ट आदि अशुभ फल देता है।

(४) **बुध दशा फलः**—शुभ और बलवान् बुध की दशा में विद्या, विज्ञान, शिल्प, कृषिकर्म में उन्नति, धन-लाभ, स्त्री-पुत्रों का सुख और विद्वानों से मेल-मुलाकात होती है। वायु और कफ के सामान्य रोग भी इस अवधि में होते देखे गये हैं।

निर्बल और अशुभ बुध की दशा में कफ विकार से उत्पन्न रोग ज्वर, धन हानि, व्यापार में नुकसान, परिवार के सदस्यों से झगड़ा, विद्याध्ययन में रुकावट और बदनामी होती है।

मेष राशि में बुध हो तो बुध की मुद्दा दशा में धन-हानि, छल-कपट युक्त व्यवहार की ओर प्रवृत्ति; वृषभ राशि में हो तो धन, यश लाभ, स्त्री-पुत्र की चिंता, विष से कष्ट; मिथुन में हो तो सरलता से लाभ, विद्याध्ययन में सफलता, शुभ उत्सव-कार्य, स्त्री और पुत्रों से सुख, धन और यश की प्राप्ति, माता को सुख मिलता है। बुध कर्क में गया हो तो धन की प्राप्ति, विदेश-यात्रा और कविता में रुचि प्रदान करता है। सिंह का बुध ज्ञान, यश और सामान्य धन-हानि करता है। कन्या राशि में गया हुआ बुध निश्चय ही नाना प्रकार के शुभ फल प्रदान करता है। नवीन ग्रन्थों का निर्माण, प्रतिभा का विकास, व्यापार में आशातीत वृद्धि, और स्वास्थ्य में सुधार करता है। वृश्चिक में गया हो तो व्यक्ति की काम-वासना में अनुचित वृद्धि कर उसे अनाचारी और अपव्ययी बनाता है। धनु राशि में हो तो मन्त्री, शासनाधिकार की प्राप्ति और नेतागिरी में सफलता प्रदान करता है।

मकर राशि में गया हुआ बुध अपनी मुद्दा दशा में अल्प लाभ नीचों से मित्रता और धन हानि कराता है। कुम्भ में गया हुआ बंधुओं को कष्ट, दरिद्रता, रोग, दुर्बलता और अस्थिरता लाता है। मीन राशि के बुध की दशा में खांसी, प्रवाहिका, विष-अग्नि-शस्त्र से पीड़ा, अल्प-हानि, परिवार के सदस्यों से विवाद और मुकद्दमे-बाजी, नाना प्रकार की परेशानियां आदि अशुभ फलों की प्राप्ति होती है।

(५) **बृहस्पति दशा फलः**—पूर्ण बलवान् और स्वराशिगत, उच्चस्थ या शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट बृहस्पति हो तो उसकी दशा में ज्ञान-लाभ, धन-वस्त्र-वाहन-लाभ, तीर्थ-यात्रा और बड़े-बड़े आदमियों से मेल मुलाकात होती है। पुत्र-जन्म और राज्यधिकार प्राप्त होता है। धर्मशाला, मंदिर आदि स्थानों का निर्माण होता है।

निर्बल और अशुभ (नीच राशिगत, पाप ग्रहों से घिरा हुआ) बृहस्पति की दशा में स्वास्थ्य में गड़बड़ी, स्त्री-पुत्र की ओर से चिंता, शत्रु-वृद्धि, राज्य की ओर से परेशानियां आदि अशुभ फल होते हैं।

मेष राशि में बृहस्पति हो तो उसकी दशा में शासनाधिकार, विद्या, स्त्री, धन, पुत्र, और सम्मान का लाभ होता है। वृषभ में हो तो रोग, विदेश में निवास और धन हानि होती है। मिथुन में हो तो विरोध, धन नाश और क्लेश उत्पन्न होता है। कर्क राशि में स्थित बृहस्पति की मुद्दादशा पर्याप्त शुभ फल प्रदान करती है। राजनैतिक सफलता, नौकरी में पदोन्नति, परिवार में हर्ष, नाना प्रकार से धन-लाभ और कार्य-सिद्धि होती है। सिंह में हो तो राज्य से मान, पुत्र, स्त्री, बंधु-लाभ और हर्ष की प्राप्ति होती है। कन्या-राशि में हो तो महिला-अधिकारियों से धन-लाभ, शासन में योगदान, भ्रमण और कुछ विवाद भी होता है।

तुला राशि में बृहस्पति हो तो उसकी दशा में अपमान, कलह, शत्रुता, फोड़ा-फुन्सी और विवेक का अभाव उत्पन्न हो जाता है। वृश्चिक में हो तो पुत्र लाभ, नीरोगता, धन लाभ, पूर्व ऋण का अदा

होना आदि फल दिया करता है। धनु राशि में सामान्य सफलता, पुत्र और धन सुख मिलता है। मकर राशि में गया हो तो संतान की मृत्यु स्त्री को रोग, जमीन-जायदाद का क्षय, अपयश और शत्रुओं की वृद्धि होती है। इस दशा काल में आर्थिक कष्ट रहता है और गुह्य स्थानों में रोग उत्पन्न होता है। कुम्भ राशि में गया वृहस्पति सामान्य अर्थ लाभ, विद्या प्राप्ति आदि साधारण फल देता है। मीन राशि में स्थित वृहस्पति अपनी मुद्दादशा में निश्चय ही विद्या, धन, स्त्री, पुत्र, प्रसन्नता, सुख आदि को प्राप्त कराता है।

(६) **शुक्रदशा फलः**—बलवान् और शुभ शुक्र की दशा में रत्न, वस्त्र, आभूषण, सम्मान, नवीन कार्यारम्भ, कामसुख, स्त्री-प्राप्ति, मनोरंजन आदि शुभ फल मिलते हैं। नाना प्रकार से लाभ और पुत्र रत्न की उत्पति भी होती है।

निर्बल और अशुभ शुक्र की दशा में स्त्री से झगड़ा, स्वास्थ्य में खराबी, विदेश में निवास, सम्बन्धियों से विवाद और क्लेश मिलता है।

तुला और वृषभ राशि में गया हुआ शुक्र अपनी दशा में स्त्री-सुख, सुन्दरी महिलाओं से मित्रता, समुद्र-यात्रा, ऋण का भुगतान, कई प्रकार के भोग-विलास और यौन रोग उत्पन्न करता है। धन-धान्य की प्राप्ति अच्छी होती है।

कन्या राशि में गया हुआ शुक्र अपनी स्त्री से झगड़ा, तलाक, जमीन जायदाद का गिरवी रखना, यौन रोग, मानसिक चिंता, आर्थिक कष्ट, परदेश गमन, पुत्र से विरोध अपनी दशा में करवाता है। मकर राशि का शुक्र चिंता, कष्ट, वात कफ के रोग, व्यसन का लगाव और धनहानि करता है। मीन राशि में गया हुआ शुक्र निश्चय ही कई प्रकार से शुभ फल प्रदान करता है। राज्य से सम्मान, नौकरी में पद्दोन्नति, व्यापार से लाभ, कारोबार में वृद्धि, चुनाव में सफलता और स्वास्थ्य में आशातीत वृद्धि होती है।

(७) शनि-दशाफलः—बलवान् और शुभ शनि का मुद्दा दशा में व्यक्ति को धन, सवारी, प्रताप, भ्रमंण, कीर्ति, रोग, नये कारखानों का विकास, विदेशों से सम्बन्ध, विजातीयों से मित्रता और प्रसन्नता प्राप्त होती है।

निर्बल और अशुभ शनि की दशा में, कई प्रकार से चिंता और कष्ट, शारीरिक रोग, परिवार के लोगों से कलह, राज्य से परेशानियां उत्पन्न होती हैं।

मेष राशि में गया हुआ शनि अनचाहा व्यय, हर कार्य में असफलता, नौकरी से स्थानान्तरण या त्याग पत्र, मित्रों और सम्बन्धियों से विवाद कराता है। वृषभ राशि में गया शनि अपनी दशा में कष्ट हानि, पीड़ा, चिंता और अल्प लाभ देता है। कर्क का शनि सुख, कल्याण, मित्रता, पुत्र लाभ और स्त्री-लाभ देता है।

कन्या राशि में स्थित शनि मकान का निर्माण, भूमि-लाभ, धन-प्राप्ति और सुख प्रदान करता है। तुला राशि का शनि यूरोप और अरब देशों की यात्रा कराता है और कारोबार में वृद्धि करता है। मुकदमे आदि विवादों में विजय होती है। वृश्चिक के शनि में भ्रमण कृपणता, नीच-संगति और साधारण आर्थिक कष्ट होता है।

मकर और कुम्भ राशि में गया हुआ शनि अपनी मुद्दा-दशा में जमीन-जायदाद में वृद्धि, धन-धान्य की प्राप्ति, विदेश-यात्रा, मुकदमे में सफलता मानसिक प्रसन्नता और कारोबार में वृद्धि करता है। इसी प्रकार मीन राशि का शनि अधिकार-प्राप्ति, सुख, सम्मान, स्वास्थ्य, उन्नति आदि फलों की प्राप्ति करवाता है।

(८) राहु दशा फलः—मेष राशि में राहु स्थित हो तो उसकी मुद्दा दशा में अर्थ लाभ, साधारण सफलता, परिवार से कलह, भाइयों से विरोध होता है। राहु यदि वृषभ में हो तो राज्य से लाभ, पदोन्नति, अधिकारों की प्राप्ति, कष्ट सहिष्णुता और सफलता प्रदान करता है। मिथुन का राहु अपनी दशा के प्रारम्भ में कष्ट और बाद में सुख देता है। कर्क का राहु अपनी दशा में संकीर्ण मनोवृत्ति,

निर्धनता, रोग और चिंता देता है। सिंह का राहु व्यक्ति को मननशील बनाता है। कन्या में स्थित राहु साहित्य और कला के प्रति प्रेम सार्वजनिक कार्यों में सफलता, व्यसनों से हानि देता है।

तुला राशि में गया हुआ राहु अपनी दशा में झंझट, अचानक कष्ट, बंधु-बांधवों से क्लेश, धन-लाभ, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि करता है। वृश्चिक का राहु आर्थिक कष्ट, शत्रुओं से हानि करता है और नीच कार्यरत बनाता है। धनु का हो तो यश लाभ, विधान सभा के चुनाव में सफलता, उच्च पद प्राप्ति करवाता है। मकर का राहु सिर में रोग, आर्थिक संकट, झगड़ा और कई प्रकार के वात-रोग उत्पन्न करता है। कुम्भ के राहु में साधारण धन-लाभ, विजय समझनी चाहिये। मीन राशि का राहु अपनी दशा में विरोध, झगड़ा और रोग देने वाला होता है।

(९) केतु-दशाफल—मेष राशि में केतु गया होतो उसकीमुद्दा दशा में धन-लाभ, यश और स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। वृष में हो तो कष्ट हानि, पीड़ा, चिन्ता और अल्पलाभ होता है। मिथुन में हो तो कीर्ति, बंधुओं से विरोध, रोग और पीड़ा होती है। कर्क में गया हो तो सुख, कल्याण, मित्रता, पुत्र लाभ और स्त्री लाभ देता है। सिंह के केतु की दशा में अल्प सुख मिलता है। कन्या में गया केतु नीरोगिता, प्रसिद्धि, सत्कार्यों से प्रेम, नवीन काम करने की रुचि जागृत कराता है।

यदि केतु तुला राशि में गया हो तो अपनी दशा में व्यसनों में रुचि, कार्यहानि और अल्प लाभ करता है। वृश्चिक के केतु से धन-सम्मान पुत्र-स्त्री लाभ, कफ रोग, बन्धन जन्य कष्ट मिलता है। धनु में हो तो सिर में दर्द, नेत्र पीड़ा, भय और झगड़ा होता है। मकर के केतु से हानि, साधारण व्यापार से साधारण लाभ और नवीन कार्यों में असफलता मिलती है। कुम्भ में स्थित केतु से आर्थिक संकट पीड़ा, चिन्ता, बन्धु-बान्धवों का वियोग दशाकाल में समझना चाहिये। किन्तु मीन के केतु से अकस्मात् धन-प्राप्ति, विद्या-लाभ और कीर्ति-लाभ भी होता है।

: ६ :

वर्षेश-फल-विवेचन

वर्षेश फल के लिये विचारणीय बातें : वर्षेश सूर्य का फल : वर्षेश चन्द्रमा का फल : वर्षेश मंगल का फल : वर्षेश बुध का फल : वर्षेश बृहस्पति का फल : वर्षेश शुक्र का फल : वर्षेश शनि का फल।

विचारणीय बातें—वर्षेश की स्थिति और बल पर सम्पूर्ण वर्ष का शुभाशुभ फल निर्भर करता है। वर्षेश के फल के विवेचन के लिये उसके बलाबल की जानकारी आवश्यक है। बल के आधार पर वर्षेश के तीन भेद किये गये हैं १. पूर्णबली वर्षेश, २. मध्यबली वर्षेश और ३. अल्पबली वर्षेश। पंचवर्गीबल में १२ अंश से ऊपर पूर्णबली वर्षेश, ६ से १२ अंश तक मध्यबली और ६ से भी कम अंश होने पर अल्पबली या हीन बली वर्षेश होता है। कहीं-कहीं ५ अंश से कम विंशोपक वाले ग्रह को पूर्ण निर्बल माना जाता है। अनुभव में भी यह बात सही देखी गई है। वास्तव में वर्षेश अपने विंशोपक बल के अनुसार ही पूर्ण, मध्य और अल्प शुभाशुभ फल देते हैं।

वर्ष-कुण्डली में वर्षेश का बल देखने के बाद जन्म-कुण्डली में वर्षेश का बल देखना चाहिये। दोनों प्रकार से विचार करने के बाद वर्षेश-फल का निर्णय करनाचाहिये। इसके अतिरिक्त एक आवश्यक बात

और है। वर्षेश जिस ग्रह के साथ हो अथवा जिस ग्रह से देखा जाता हो, उसका प्रभाव भी उसके स्वयं के फल पर पड़ता है। अत: उस दृष्टि से भी विवेचन आवश्यक है। प्रस्तुत अध्याय में ज्योतिष के सामान्य विद्यार्थियों के लिये उपरोक्त सभी बातों का विवेचन अलग-अलग प्रकार से, भली-भाँति समझाते हुये, करने का प्रयास किया गया है।

वर्षेश सूर्य का फल—सूर्य (वर्षेश होकर) पूर्ण बलवान् हो तो वर्ष में अपने कुल में प्रतिष्ठा की वृद्धि, अनेक प्रकार के सुख, पुत्र, मित्र, पृथ्वी, धन, यश का लाभ तथा शत्रु का नाश होवे।

वर्षेश सूर्य मध्यम बली हो तो उपरोक्त फल में कुछ कमी होती है। राज्य, पुत्र और मित्र से अल्पसुख मिलता है, वाद-विवाद और झगड़ा होता है। कार्यों में बाधा, भय, विरोध की वृद्धि, स्थानान्तरण आदि फल होते हैं। यदि किसी शुभग्रह की दृष्टि नहीं हो तो राज्य से भय बना रहता है और शरीर वर्षभर दुबला रहता है।

यदि हीन-बल अथवा नष्टबल होकर सूर्य वर्षेश होता हो तो दूसरे प्रदेश की यात्रा, नौकरी में अनचाही जगह स्थानान्तरण, धन का क्षय, चिन्ता, शत्रु का डर, सुस्ती और आलस्य, तीव्र रोग, लड़ाई-झगड़ा, पुत्र, मित्र और अपने पिता से भी परेशानियां उत्पन्न हों।

'हायन सुन्दर' में लिखा है कि यदि वर्षेश सूर्य वर्ष लग्न में बैठा हो या उसको पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो राज भय करता है ; ज्वर और पित्त से सम्बन्धित रोग उत्पन्न होते हैं ; पूर्व दिशा से हानि, धातुओं के व्यवसाय में नुकसान, स्वजनों से वैर आदि अशुभ फल होते हैं। लेखक के विचार से इस प्रकार के अशुभ फल तभी होते हैं जब सूर्य पाप-ग्रहों से घिरा हुआ हो अथवा उस पर इनकी दृष्टि हो।

यदि वर्षेश सूर्य चन्द्रमा के साथ हो अथवा चन्द्रमा द्वारा देखा जाता हो तो विदेश यात्रा, मित्र-वियोग, सत्संग, धन लाभ, शत्रु नाश, श्वेत वस्तु से लाभ, भोजन वस्त्रादि का लाभ और कभी-कभी शरीर-कष्ट भी देता है। इस स्थिति में प्राय: विशेष भाग-दौड़ नहीं करनी

पड़ती और सम्पूर्ण वर्ष बहुत आराम और सुख से व्यतीत होता है।

वर्षेश सूर्य यदि मंगल से युत या दृष्ट हो तो मूँगा, सोना, धन, यश का लाभ, राज-सन्मान, साहस की वृद्धि, तथा चोर, अग्नि एवं दक्षिण दिशा से भय एवं निष्फल चिन्तायें उत्पन्न करता है।

वर्षेश सूर्य बुध से युत या दृष्ट हो तो शरीर-कष्ट, शत्रु-भय, मित्र-विरोध, स्त्री व पुत्रादि को रोग भय, कार्यों में वाधा, शत्रु वर्ग की प्रवलता और शरीर की कृशता देता है।

बृहस्पति से युत या दृष्ट वर्षेश सूर्य व्यसनों को छुड़ाकर उत्तम कार्यों में रुचि, धन-लाभ, शत्रु-भय, उत्साह, कार्यों में सफलता, पुत्र-सुख और प्रसन्नता की वृद्धि करता है।

शुक्र से युत या दृष्ट वर्षेश सूर्य ज्वर सिर में दर्द, पेट में विकार, हिचकी, वमन, खांसी, स्थान भ्रष्टता आदि फल देता है।

शनि से युत या दृष्ट वर्षेश सूर्य धन नाश, शत्रु से पीड़ा, उदासी और वियोग से दुख होता है।

वर्षेश सूर्य के राहु या केतु से युत या दृष्ट होने पर चौपायों से हानि, सर्प से भय कृष्ण वर्ण के लोगों से नुक्सान, पश्चिम दिशा से हानि और नाना प्रकार के दुःख उत्पन्न होते हैं।

वर्षेश चन्द्रमा का फल—यदि चन्द्रमा पूर्ण वली होकर वर्षेश हो तो धन, स्त्री, पुत्र, मित्र और मकान आदि, भांति-भांति के सुख होते हैं। विलास सामग्रियों के उपयोग का अवसर मिलता है। राज्य की ओर से प्रसन्नता एवं उच्च पद की प्राप्ति होती है। इस वर्ष श्वेत वस्तु से विशेष लाभ होता है।

मध्यम बली चन्द्रमा राज्य के उच्च अधिकारियों से विरोध कराता है। धन का क्षय, स्वजनों से वैर, स्त्री-वर्ग से अल्प सुख, दुबलापन, वैराग्य, दुःख की उत्पत्ति और कोई बड़ा भय होता है।

नष्ट बल चन्द्रमा वर्ष में वायु और कफ से पीड़ा, शत्रु का डर, अपने परिवार से परेशानियां, राज्य से विरोध, मानसिक दुःख आदि

अशुभ फल करता है। अगर चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो यह अशुभ भाव में बैठा हो तो अपनी दशा में बेचैनी और मृत्यु का भय भी दिखाता है।

तेजसिंह आदि वर्षफल के आचार्यों ने सूर्य के समान ही चन्द्रमा का फल कहा है। 'हायन सुन्दर'—के अनुसार चन्द्रमा यदि लग्नेश को पूर्ण दृष्टि से देखे तो वर्ष में स्त्री-सहवास का विशेष सुख मिलता है। कन्या सन्तान उत्पन्न होती है।

वर्षेश चन्द्रमा अगर सूर्य के साथ या सूर्य से दृष्ट हो तो शरीर में कृशता, ज्वर, नेत्र-विकार, शूल रोग आदि उत्पन्न करता है। राजा और अग्नि से भय भी होता है।

वर्षेश चन्द्रमा का मंगल से युत या दृष्ट होना सब प्रकार से मंगलकारी है; लेकिन कभी-कभी किसी प्रकार से चोट लगने और रुधिर विकार से पीड़ा होने की सम्भावना भी रहती है।

वर्षेश चन्द्रमा के बुध से युत या दृष्ट होने पर स्वर्ण, वाहन, विद्या और वुद्धि का लाभ; भाइयों से सुख; उत्तर दिशा से विशेष लाभ आदि शुभ फल होते हैं। इसके अतिरिक्त शत्रु और अपने प्रयत्न से भय भी होता है।

बृहस्पति से युत या दृष्ट होने पर धन-पुत्र, स्त्री वस्त्र, यश का लाभ, विद्या की वृद्धि, ईश्वर-भक्ति, वाहन-प्राप्ति और उत्तम व्यक्तियों की मित्रता होती है।

शुक्र से युत अथवा दृष्ट होने पर मोती, श्वेत वस्तु से लाभ, ईश्वर भक्ति और रेशम आदि का लाभ होता है। कन्या संतान होती है और स्त्री-संभोग का विशेष सुख मिलता है।

शनि से युत या दृष्ट होने पर वर्षेश चन्द्रमा का फल अशुभ मिलता है। उद्वेग, राजा तथा शत्रु से भय, शोक, बुद्धि में दोष, दाद और खाज की उत्पत्ति और शरीर को दुबला करता है। पश्चिम दिशा से विशेष हानि की सम्भावना रहती है।

यदि वर्षेश चन्द्र राहु से युत या दृष्ट हो तो निश्चय ही अशुभ फल मिलता है। शरीर में वायु-विकार, परिवार में कलह, मानसिक चिन्ता और कई प्रकार की परेशानियां आती हैं।

केतु से युत या दृष्ट वर्षेश चन्द्रमा मित्र और बाँधवों से पीड़ा, रक्त विकार और शरीर पीड़ा देता है।

वर्षेश मंगल का फल—यदि वर्षेश मंगल, पूर्ण बली हो तो यश, विजय, इज्जत, सेना में उच्च अधिकार, अच्छी आय, पुत्र और धन का सुख देता है। इस दशा में प्रायः राज्य और सेना की ओर से विशेष शुभ फल मिलता है।

मध्यम बली वर्षेश उपर्युक्त शुभफल अल्प मात्रा में देता है। इसके अतिरिक्त, रक्त विकार, नकसीर फूटना, बहुत अधिक क्रोध, विदेशों की यात्रा, चोर, अग्नि, शस्त्र और शत्रु से भय भी देता है।

हीन बली वर्षेश मंगल का फल शुभ नहीं होता। इस दशा में चोर और शत्रु का डर, लोगों में झगड़े, जमीन-जायदाद का नुकसान, विदेशों की यात्रा, सब प्रकार के कामों में बिगाड़, धन-धान्य का नाश, स्त्री-पुत्र और मित्रों से कलह-आदि कुफल होते हैं। वृहस्पति की दृष्टि से अशुभ फलों में कमी आ सकती है।

वर्षेश मंगल, यदि लग्नेश से युक्त या दृष्ट हो तो, रक्त-पित्त का प्रकोप, अन्य स्त्रियों में आसक्ति, मित्र-बान्धवों से विवाद, चोर और अग्नि से भय, आदि फल विशेष रूप से देता है।

वर्षेश मंगल, सूर्य से युत या दृष्ट हो तो, राजा से सन्मान, धन, तथा साहस की वृद्धि, लड़ाई आदि में विजय, पूर्व दिशा से सुख, शरीर ज्वर से पीड़ित, पश्चिम से हानि, भय तथा द्रव्य नाश देता है।

चन्द्रमा से युत या दृष्ट वर्षेश मंगल की दशा में अनेक प्रकार के लाभ व सुख, रत्न, मोती, पुत्र, भाई आदि का सुख, वस्त्र-आभूषणों की प्राप्ति, स्त्री-सुख और वायव्य दिशा से धन लाभ होता है।

बुध से युत या दृष्ट हो तो राजा-अग्नि-शत्रु से भय व हानि, पशु-

नाश, शरीर को रक्त या पित्त से पीड़ा, उत्तर दिशा से चिन्ता आदि अशुभ फल होते हैं। कभी-कभी शुभ ग्रहों की दृष्टि के कारण सामान्य शुभफल होते हुये भी देखा गया है।

बृहस्पति से युत या दृष्ट होने पर पूर्णशुभफल मिलता है। तीर्थ यात्रा देवताओं में भक्ति, उत्तम बुद्धि, ख्याति, प्रतिष्ठा, यश तथा ईशान दिशा से लाभ होता है।

वर्षेश मंगल, यदि शुक्र से युत, अथवा दृष्ट हो तो, क्रोध की अधिकता, शरीर में कष्ट, धन-हानि, परदेश की यात्रा, शत्रुकृत कार्यों से दुःख और आग्नेय दिशा से भय होता है।

शनि से युत या दृष्ट होने पर दुःख, उदासीनता, मन में असंतोष, दुर्व्यसन, दुष्ट बुद्धि, नीच लोगों से मित्रता, चौपायों से हानि, कृष्ण पदार्थों से नुकसान आदि फल मिलते हैं।

राहु या केतु से युत या दृष्ट होने पर शोक, अधर्म में रुचि, व्यवसाय में नुकसान और शरीर में कष्ट होता है।

वर्षेश बुध का फल—पूर्ण बली वर्षेश बुध सुस्थिरता, नौकरी में उन्नति, नये व्यवसाय में लाभ, लिखने-पढ़ने के कार्य में लाभ, स्त्री-पुत्र और मित्रों से सुख, और हर प्रकार से प्रसन्नता प्रदान करता है।

मध्यम बली बुध उपर्युक्त शुभ फलों में कुछ कमी लाता है। इसके अतिरिक्त अपने ही वाद-विवाद से कार्यों में हानि, स्त्री-पुत्र और मित्रों से कलह, राजकीय अधिकारियों से झगड़ा आदि अशुभ फल भी होते हैं।

नष्ट बली वर्षेश बुध, शुभफल देने में असमर्थ रहता है। राज भय, झूठी गवाही देना, शरीर में कष्ट, रिश्तेदारों से हानि, झगड़ा, चोरों से भय आदि अशुभ फल मिलता है।

यदि पूर्ण बली वर्षेश बुध लग्नेश के साथ हो या उससे दृष्ट हो तो शरीर-सुख, पुत्र और मित्रों की वृद्धि, उत्तर दिशा से लाभ आदि शुभ फल प्रदान करता है। कभी-कभी शुभ फलों के साथ शरीर कष्ट भी होता देखा गया है।

वर्षेश बुध, सूर्य के साथ हो या उससे देखा जाता हो तो, ज्वर और शत्रुभय करता है। लेकिन राजा, स्त्री और पुत्र आदि से लाभ, तीर्थ-दर्शन, पशु-लाभ, अनेक प्रकार के उत्सवों का होना, अचानक लाभ सुवर्ण प्राप्ति और वाहन-सुख मिलता है।

चन्द्रमा से युत या दृष्ट हो तो प्रायः सब प्रकार से शुभ फल देता है। इसके अतिरिक्त खाँसी, दाद, खुजली से पीड़ा, पशु-नाश, शत्रुओं से भय, मित्रों से वैमनस्य और कभी-कभी कुछ गरीबी भी लाता है।

बुध यदि मंगल से युत या दृष्ट हो तो कोई कष्टसाध्य बड़ा रोग हो; वंश में किसी कारण से कलंक लगे, स्थान-हानि, चिन्ताएँ, चोरों का भय, घर-परिवार में कलह, सिर-पीड़ा, सुवर्णकार तथा दक्षिण दिशा से हानि होती है।

बृहस्पति से युत या दृष्ट हो तो सामान्य शरीर-कष्ट एवं भय के अतिरिक्त राज-सम्मान, यश-प्राप्ति, पवित्र स्थानों के दर्शन, शत्रुओं का नाश, व्यापार में लाभ और ईशान दिशा से शुभफल प्राप्त होता है।

शुक्र से युत या दृष्ट हो तो पूर्ण शुभ फल मिलता है। उत्तम विद्या और बुद्धि का विकास, स्त्री-सुखों की प्राप्ति, सहवास-सुख, देवताओं और गुरुजनों में भक्ति, उत्सवों का होना, शत्रु वर्ग का नाश और मित्र द्वारा राज चिह्न अथवा सम्मान-प्राप्ति होती है।

शनि से युत अथवा दृष्ट हो तो प्रायः अशुभ फल मिलता है। धर्म में अश्रद्धा, कृशता, शीत या प्रमेह-विकार, नीच संग से धन-नाश नपुंसकों से प्रेम तथा सहवास होता है।

राहु से युत या दृष्ट हो तो उत्साह का बढ़ना, चित्त में भ्रम, नैऋत्य दिशा से लाभ, वायु-पीड़ा और नीच वर्ग के लोगों से लाभ होता है।

केतु से युत या दृष्ट होने पर सामान्यतया अशुभ फल ही मिलता

है। नीच वर्ग के लोगों से दुःख और पीड़ा होती है।

वर्षेश बृहस्पति का फल—यदि पूर्णबला बृहस्पति वर्षेश हो तो धर्म-धन और यश का लाभ, उत्तम विचार, शत्रुओं से भी प्रेम, राजनैतिक कार्यों में भी सफलता, जनता में विश्वास, पुत्र सुख और बाग-बगाचों से युक्त घर की प्राप्ति होती है। कभी-कभी जन्मकुण्डली में यह योग होने पर वर्ष में गड़ा हुआ खजाना भी मिलता है।

मध्यम बली बृहस्पति उपराक्त शुभ फलों को कुछ कम करता है। राज्य के अधिकारियों से मेल-जोल और तरह-तरह की पुस्तकों का अध्ययन होता है। कभी-कभी पापी ग्रह के संयोग से धन-हानि और स्त्री-पीड़ा भी करता है।

यदि अधम बली या हीन बली हो तो राज्य से भय, धन की हानि, सब प्रकार के सुखों में कमी हो; स्त्री-मित्र और पुत्र सब त्याग दें; जनता में हंसी और बुराई, शरीर में कफ आदि की प्रवलता और रोग, शत्रुओं का भय और घर-परिवार में कलह हो।

वर्षेश बृहस्पति लग्नेश से युत या दृष्ट हो तो धन-धान्य की प्राप्ति, राज-मान और पुत्र-प्राप्ति करवाता है।

सूर्य से युत या दृष्ट वर्षेश बृहस्पति हो तो शत्रुओं का नाश, यश, राजकुल में सम्मान, पूर्व से कुछ लाभ होता है। इसके अतिरिक्त ज्वर-बाधा, सिर-पीड़ा और कलह आदि सामान्य अशुभ फल भी होते हैं।

चन्द्रमा से युत या दृष्ट होने पर स्त्री-सुख, भोजन-वस्त्र पुत्र-मित्र से सुख, स्वामी से सम्मान प्राप्ति, श्वेत वस्तु से लाभ और वायव्य दिशा से धन प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त कभी-कभी खांसी से पीड़ा भी होती है।

मंगल से युत या दृष्ट हो तो धन का सुख, स्थान-प्राप्ति, मुकदमे या झगड़े में विजय, लाल वस्तु से लाभ, यश-प्राप्ति, रोगनाश, राज-भय, ज्वर-पीड़ा और दक्षिण दिशा से धन-लाभ कराता है।

बुध से युत या दृष्ट हो तो देवताओं और गुरुजनों के प्रति प्रेम और श्रद्धा, उत्तर दिशा से धन-लाभ, विद्या और बुद्धि में वृद्धि, तथा सिर पीड़ा भी रहती है।

शुक्र से युत, या दृष्ट हो तो प्रायः शुभ फलों में कमी आती है। धन की हानि, शत्रु-भय, बुद्धि-भ्रष्टता, स्त्री-वियोग, शरीर पीड़ा और मानसिक चिन्तायें बनी रहती हैं।

शनि से युत या दृष्ट हो तो यवन अथवा म्लेच्छ जाति से भय, स्थान की हानि, मान का नाश, जुआ, मद्यपान तथा नीच-संगमें प्रेम, फोड़े-फुन्सियों से कष्ट तथा पश्चिम दिशा से धन हानि होती है। मतान्तर से उत्तर दिशा से चिन्ता एवं भैंस तथा ऊँट की प्राप्ति होती है।

राहु या केतु से युत या दृष्ट वृहस्पति हो तो घर के लोगों से वैर, घबराहट, मन को क्लेश, नीच जाति के लोगों से लाभ, स्थानान्तरण, और नौकरानियों आदि से प्रेम होता है।

✓वर्षेश शुक्र का फल--पूर्ण बली शुक्र वर्षेश हो तो, शुभफल होता है। वर्षभर में अच्छा स्वास्थ्य, अच्छा भोजन-वस्त्र, मांगलिक कार्य, व्यापार में लाभ, राज्य की ओर से पदोन्नति, स्त्री-सुख, एवं अन्य सभी सुखों एवं विलासों की प्राप्ति होती है।

मध्यम बली शुक्र यदि वर्षेश हो तो उपर्युक्त शुभफलों में कुछ न्यूनता आती है। अल्प रोजगार, गुप्त दुःख, निश्चित आय आदि फल होते हैं।

निर्बली शुक्र की अवस्था में मानसिक चिन्ताएँ, लोगों में हंसी। व्यापार में नुकसान, कई प्रकार की परेशानियाँ, लोगों से मन-मुटाव और स्त्री-मित्र और पुत्र से अविश्वास मिलता है।

यदि शुक्र लग्नेश से युत या दृष्ट हो तो सवारी का सुख और गहनों का लाभ कराता है। बुद्धि का विकास होता है और कन्या-सन्तान की प्राप्ति करवाता है।

यह सूर्य से युत, या दृष्ट हो तो ज्वर बाधा, सिर-पीड़ा उदर-पीड़ा, नेत्र-दुर्बलता से कष्ट, शत्रु-भय, राजा तथा अग्नि से भय, मित्र-विरोध, खाँसी का होना तथा अधिक खर्च कराता है।

यह चन्द्रमा से युत या दृष्ट हो तो पशु-नाश, नाखूनों-दाँतों में दर्द एवं सिर-पीड़ा, पित्त-रोग, स्त्री से सुख, वायु-विकार आदि फल, विशेष रूप से होते हैं।

भौम से युत या दृष्ट होने पर धन-लाभ, दक्षिण से धन प्राप्ति चौपायों से भय, पित्त और ज्वर आदि से पीड़ा और उत्साह की भग्नता करता है।

बुध से युत या दृष्ट हो तो धन-लाभ, उत्तम विचार, पुत्र-मित्र तथा सम्बन्धियों से सुख, उत्साह व साहस का बढ़ना मान-यश व चातुर्य-लाभ, और उत्तर दिशा से धन-प्राप्ति होती है।

बृहस्पति से युत या दृष्ट हो तो शीलता, पवित्र या तीर्थ-स्थानों का दर्शन, बान्धवों से कलह, श्वेत वस्तु से लाभ और ईशान दिशा से धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

शनि से युत या दृष्ट हो तो ग्राम, भूमि, मकान आदि का लाभ, मित्रों से प्रेम, पश्चिम से लाभ, काली वस्तुओं के व्यापार से धन-लाभ, रोग-भय, वृद्धा स्त्री से प्रेम और चौपायों से भय भी देता है।

राहु या केतु से युत या दृष्ट हो तो क्लेश, वायु का प्रकोप, गुप्त रोग और अंगों में पीड़ा होती है।

वर्षेश शनि का फल—यदि शनि पूर्ण बलवान् होकर वर्षेश हो तो नई जमीन और जायदाद की प्राप्ति विधर्मी सरकार से धन और पद की प्राप्ति, लकड़ी और लोहा आदि के व्यापार से लाभ और खेती आदि से भी पूर्ण सुख मिलता है।

मध्यम बली शनि भी प्राय: उपर्युक्त शुभफल अल्प मात्रा में देता है। लकड़ी-कोयला और गल्ला के व्यापार से साधारण लाभ होता है। नौकरों, भैंसों एवं ऊंटों में रुचि और इन्हीं से लाभ होता है।

बलरहित शनि शुभफल नहीं दे सकता। ऐसी अवस्था में प्रायः मित्रों से विरोध शरीर कष्ट, शत्रु भय, व्यवसाय में नुकसान और मान भंग होता है।

वर्षेश शनि लग्नेश से युत या दृष्ट हो तो भय, दुःख, वायु-विकार, देह में पीड़ा, स्त्री और पुत्रों से लड़ाई और बुद्धि में विकार उत्पन्न होता है।

सूर्य से युत अथवा दृष्ट हो तो शरीर, पुत्र, स्त्री को कष्ट; मित्र विरोध; विदेश यात्रा; सिर-पीड़ा, ज्वर आदि से कष्ट, राजा, अग्नि व शत्रु-भय, धन-हानि, सत्पुरुषों से झगड़ा होता है।

चन्द्रमा से युत अथवा दृष्ट होने पर शनि धन हानि, बंधु-वियोग और मित्रों से कलह कराता है। वायु और पित्त से शरीर पीड़ा, वैश्य जाति से धन लाभ और भय भी होता है।

इसके भौम से युत या दृष्ट होने पर, चोर, अग्नि व शत्रु से भय, बंधु-विरोध, स्थान-हानि, रक्त-विकार और धन-हानि होती है।

बुध से युत या दृष्ट होने पर शुभफल प्राप्त होता है। भाग्योदय, सुख तथा प्रसन्नता, धन, सुवर्ण का लाभ, पुत्रोत्सव और उत्तर दिशा से धन-लाभ होता है।

बृहस्पति से युत अथवा दृष्ट होने पर देवता, गुरु, महात्माओं से प्रेम; धन-लाभ; सुख और आनंद की प्राप्ति, जमीन-जायदाद की प्राप्ति; नौकरी में बड़े पद की प्राप्ति; स्त्री-सुख और पूर्व दिशा से खूब धन-लाभ होता है।

शुक्र से युत अथवा दृष्ट होने पर कफ आदि से शरीर-पीड़ा होती है; लेकिन मित्रों-बांधवों एवं पुत्रों से सुख, लाभ, स्त्री से प्रेम और संभोग सुख, कुल में प्रतिष्ठा, चित्त में उत्साह व साहस का बढ़ना, आदि फल होते हैं।

राहु या केतु से युत-दृष्ट होने पर प्रायः अशुभ फल ही होता है। सन्निपात, मूर्च्छा, चोट, फोड़, रुधिर विकार, जल-सर्प और

नीच वर्ग के लोगों से भय, धन-हानि तथा दस्तों की बीमारी आदि फल होते हैं।

विशेष—ताजिकसार में वर्षेश के फल के लिए स्थान भी प्रधान माने हैं। यदि वर्षेश अपनी उच्च राशि का, मूल त्रिकोणी और स्वगृही हो तो पूर्णफल, दशा, द्रेष्काण या अपने नवांश में हो तो मध्यम फल और शत्रु की राशि में या अस्त आदि हो तो, नष्ट वली का फल प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह भी सर्वमान्य मत है कि अगर वर्षेश शुभग्रह से 'इत्थशाल' करे तो अशुभ फल को घटाता है और शुभफल को बढ़ाता है। 'इसराफ' के योग से अशुभ फल की वृद्धि और शुभफल की हानि होती है।

: ७ :

मुन्था और मुन्थेशफल विचार

मुन्था का भाव फल, द्वादश भावों में मुन्थेश विचार, मुन्था का ग्रहों के साथ फल, अन्य विशेष विचार

मुन्था का भाव फल—यदि मुंथा वर्षलग्न में पड़ी हो तो शुभ फलदायक है। वर्ष भर अच्छा स्वास्थ्य, सांसारिक कार्यों में लाभ, रोजगार और नौकरी में उन्नति, राज्य से मान, शत्रुओं पर विजय आदि शुभ फल मिलते हैं। लग्न की मुन्था भाग्य वृद्धि करती है। यदि लग्न मेष, कर्क, तुला और मकर राशि की हो तो प्रायः मकान और दफ्तर आदि बदलना होता है।

जब दूसरे घर में मुन्था हो तो नौकरी में उन्नति, व्यापार में लाभ, अनेक प्रकार के भोग-विलास और मनोरंजन, अच्छा खाना मिलता है। यश का लाभ, कार्य-सिद्धि और भ्रातृ-सुख मिलता है। स्त्री-सुख और स्वास्थ्य के लिए भी द्वितीयस्थ मुंथा शुभ मानी गई है।

तीसरे भाव में स्थित मुन्था भी वर्ष में शुभ फल देती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है, आय और यश की वृद्धि होती है, भाइयों एवं सम्बन्धियों से सुख और लाभ प्राप्त होता है, उच्चपदस्थ व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होता है। तीर्थयात्रा और अन्य धार्मिक कार्यों में रुचि उत्पन्न होती है।

चतुर्थ भाव में मुन्था अच्छा फल नहीं देती। शरीर में पीड़ा और वायुविकार, शत्रुओं द्वारा परेशानी, मानसिक अशान्ति, पारिवारिक जीवन में कलह और कटुता आदि अशुभ फल प्राप्त होते हैं। व्यवसाय और नौकरी में कई प्रकार के विघ्न आते हैं। राज्य की ओर से जुर्माना आदि होने का भय रहता है।

पंचम भाव में गई हुई मुन्था बहुत उत्तम फल देती है। संतान-सुख, धर्म और शुभ कार्यों में उन्नति, राज्य से सहयोग, विद्या प्राप्ति आदि शुभ फल होते हैं। इस भाव में स्थित मुंथा से वर्ष में संतान-प्राप्ति होती देखी गई है।

छठे भाव में मुन्था की स्थिति बहुत अशुभ फल देती है। शरीर में रोग, चित्त में अशांति, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, व्यर्थ की शत्रुता और नौकरी-व्यापार में हानि होती है। बहुत अधिक खर्च होता है और चोरी का भय बना रहता है। कर्ज भी लेना पड़ सकता है।

सातवें भाव में स्थित मुन्था भी शुभ नहीं होती। यह यश का नाश करती है। अपनी स्त्री को पीड़ा, पारिवारिक अन्य सदस्यों को भी कष्ट, रोग में वृद्धि, अनावश्यक और व्यर्थ यात्रा, व्यापार में नुकसान आदि अशुभ फल होते हैं।

आठवें भाव में मुंथा का होना बहुत खराब है। शत्रुओं और चोरों से भय, अनावश्यक खर्च, धन और धर्म में हानि, बुरी आदत पड़ना, रोग आदि अशुभ फल भुगतने होते हैं। प्रायः लम्बा और नुकसानदायक यात्रा भी होती देखी गई है।

नवें भाव में गई हुई मुंथा श्रेष्ठ फल देती है। इच्छाओं की पूर्ति, राज्य से सहयोग, व्यवसाय और नौकरी में उन्नति, आकस्मिक धन लाभ और भाग्य का उदय होता है। स्त्री और बच्चों का सुख मिलता है तथा सम्पत्ति में वृद्धि होती है।

दशवें भाव में मुंथा का बैठना लाभकारी है। सोचे हुये कामों में सफलता मिलती है। राज-कृपा वर्षभर बनी रहती है। पद की प्राप्ति, व्यवसाय और नौकरी में उन्नति, यश प्राप्ति आदि उत्तम फल मिलते हैं। सत्कर्म द्वारा अनेक प्रकार से धन का लाभ होता है और गुरुजनों की कृपा रहती है।

ग्यारहवें भाव की मुंथा निश्चय ही शुभ फल देती है। अनेक प्रकार से भाग्योदय, सरकारी धन का लाभ, व्यवसाय में खूब फायदा स्त्री और पुत्रों का सुख, मन की अतीव प्रसन्नता आदि शुभ फल होते हैं। राजनैतिक सफलता भी बड़ी सरलता से मिलती है।

बारहवें भाव में बैठी मुंथा विशेष अनिष्टकारी है। खर्च बहुत अधिक हो, बदमाश लोगों से मित्रता हो एवं भले आदमियों से शत्रुता हो जावे। शरीर में रोग, धन की हानि, स्थान-परिवर्तन मकान का बिकना आदि अशुभ फल मिलते हैं। इस वर्ष जिस कार्य को करे उसी में हानि हो।

द्वादश भावों में मुंथेश विचार—मुन्था विचार के लिए मुंथेश (मुंथा का स्वामी) की स्थिति का अध्ययन आवश्यक है। यहाँ मुंथेश का द्वादश भावों में अनुभूत फल दिया जा रहा है।—

मुन्थेश लग्न में हो और बलवान् हो तो वर्ष में धन का आगमन, सुख की प्राप्ति, शरीर सुख और प्रसन्नता रहती है। पुत्र जन्म

व संतान सुख होता है। भाग्य में वृद्धि और राज्य से सम्मान मिलता है। धार्मिक जीवन के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है।

दूसरे भाव में मुन्थेश के जाने से कई प्रकार से धन लाभ, ननिहाल पक्ष से सुख और प्रसन्नता, व्यापार में सफलता और वाहन-सुख भी मिलता है। स्त्री और कुटुम्ब-सुख प्रायः वर्षभर ठीक रहता है।

तीसरे भाव में मुंथेश की स्थिति भाइयों से सुख, पराक्रम की वृद्धि, स्त्री-सुख की अधिकता और राज्य की ओर से पदोन्नति बतलाता है। संतान-सुख भी ठीक मिलता है। आय की दृष्टि से वर्ष अच्छा व्यतीत होता है।

चतुर्थ भाव में मुंथेश का होना शुभ नहीं होता। ऐसी स्थिति में राज और शत्रुभय, शरीर-कष्ट, धन का खर्च व नुकसान, स्त्री के स्वास्थ्य में चिंताजनक गड़बड़ी होती है और कष्टदायक लम्बी यात्रा करनी होती है। राज्य की ओर से भय बना रहता है।

पंचम भाव में मुंथेश का बैठना बहुत उत्तम है। संतान सुख, पुत्र रत्न की प्राप्ति (पुरुष-ग्रह हो तो) शत्रुनाश, राज-दरबार से मान, सवारी और चौपाये का सुख, आशाओं में सफलता आदि शुभ फल मिलते हैं।

छठे भाव में मुंथेश हो तो सम्बन्धियों से बिगाड़ या क्लेश, राजा और शत्रुओं से भय, धन का बहुत अधिक खर्च, शरीर-कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं। भाग्य कमजोर फल देता है।

सातवें भाव में मुंथेश हो तो स्त्री की ओर से कष्ट,स्वास्थ्य में गड़बड़ी, यात्रा में नुकसान, व्यापार में हानि, मुकदमे में पराजय आदि अशुभ फल होते हैं।

आठवें भाव में स्थित मुंथेश रक्तविकार और गुप्त अंगों में रोग उत्पन्न करता है। पारिवारिक कलह, धन-हानि, राज्य की ओर से कष्ट, व्यापार में हानि, विद्या के अध्ययन में रुकावट आदि, अशुभ फल होते हैं।

नवें भाव में स्थित मुंथेश बहुत शुभ फल देता है। धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि, भाग्य का उदय, कार्य मे सिद्धि, धन का लाभ, व्यापार में वृद्धि, आकस्मिक धन प्राप्ति, मंगल कार्य, राजकीय कामों में सफलता आदि शुभ फल होते हैं। ऐसो स्थिति में प्रायः वर्षभर स्वास्थ्य अच्छा रहता है और पर्याप्त आय होती रहती है।

दशवें भाव में मुंथेश बैठा हो तो राज्य की नौकरी में तरक्की, सवारी का सुख, जमीन-जायदाद की प्राप्ति, पुत्र सुख, शत्रुओं पर विजय और आशाओं में सफलता आदि शुभ फल मिलते हैं।

ग्यारहवें भाव में मुन्थेश हो तो वह धन का लाभ, सुख की प्राप्ति, भाइयों से सहयाग, पराक्रम में वृद्धि, नौकरी में तरक्की आदि शुभ फल करता है।

द्वादश भाव में मुन्थेश का बैठना बहुत खराब है। बहुत अधिक धन का व्यय,स्वास्थ्य में गड़बड़ी, व्यापार में हानि, सफर मे नुकसान, संतान की ओर से क्लेश, राज्य की ओर से चिंता एवं शत्रुओं से भय आदि अशुभ फल भुगतने होते हैं।

मुन्था का ग्रहों के साथ फल—वर्ष कुण्डली में,मुन्था सूर्य के साथ हो, सूर्य से दृष्ट हा या सूर्य के घर में स्थित हो तो राज्य से सहयोग, सरकारो नौकरी में तरक्की, चुनाव में सफलता, धन की प्राप्ति और उच्चाधिकारियों से मित्रता आदि शुभ फल होते हैं।

मुन्था चन्द्रमा से युक्त, दृष्ट या उसकी राशि में हो तो यश की प्राप्ति, धार्मिक लोगों से वार्तालाप, बहुत अच्छा स्वास्थ्य, आनन्द आदि, शुभ फल देती है। यदि पीड़ित हो तो बहुत मानसिक चिंता रहे।

मुन्था मंगल से युक्त, दृष्ट या इसकी राशि में हो तो, प्रायः अशुभ फल होता है। पित्त सम्बन्धी रोगों से कष्ट, आपरेशन, शस्त्र से चोट लगने का भय, ब्लड प्रेशर सम्बन्धी गड़बड़ी, झगड़ा, धन का खर्च आदि फल मिलते हैं।

मुन्था बुध से युक्त, दृष्ट या राशि में हो तो विवाह, स्त्रियों से

मित्रता, धार्मिक कार्य, स्त्री-सुख आदि शुभ फल होता है। पाप-पीड़ित हो तो बहुत परिश्रम करना होता है एवं कई प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं।

बृहस्पति के साथ हो तो, पुत्र की प्राप्ति, अध्ययन में सलफता, स्त्री-सुख, भाग्य की वृद्धि, आकस्मिक धन-लाभ, नौकरी में तरक्की होती है। चुनाव में भी सफलता प्रदान करती देखी गई है।

शुक्र के साथ हो तो विवाह, स्त्री-सुख, भोग-विलास, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, सरलता से आय आदि फल होते हैं।

शनि के साथ हो तो आशाओं में विफलता, नापसन्द जगह ट्राँसफर, नुकसान, यात्रा में परेशानियां, शरीर कष्ट और धन का व्यय होता है।

राहु के साथ हो तो, वर्ष के प्रारम्भ में शुभफल और केतु में प्रारम्भ में कष्ट और अन्त में शुभ फल देती है।

अन्य विशेष विचार—मुन्थेश का केन्द्र अथवा त्रिकोण में (१।४।७।१०।९।५) जाना तथा स्वक्षेत्री व उच्च होना धन-लाभ, मित्र-सुख तथा कार्यसिद्धि देता है। लेकिन मुन्थेश का छठे, आठवें या बारहवें भाव में जाना, वक्र नीच या शत्रु राशि में होना, पाप ग्रहों से घिरा होना, कई प्रकार के रोगों से शरीर को पीड़ा देनें वाला और हर तरह से परेशानी पैदा करनें वाला होता है।

यदि जातक की जन्मकुण्डली में मारकेश की दशा-अन्तर्दशा चल रही हो और वर्षकुण्डली में मुन्थेश अष्टमेश से युक्त अथवा दृष्ट हो, अष्टमेश भी पापाक्रान्त हो तो वर्ष में निश्चित मृत्यु समझनी चाहिए।

मुन्था उसी समय अपना पूरा फल देती है जबकि मुन्थेश की स्थिति शुभ औरं बलवान् हो; नहीं तो साधारण फल ही देती देखी गई है। यह एक सदैव ध्यान में रखने वाला नियम है कि जिस प्रकार पाप ग्रहों की युति और दृष्टि शुभ फल में कमी करती है, ठीक उसी

प्रकार शुभ ग्रहों की युति और दृष्टि भी अशुभ फल को कम करने का प्रयत्न करती है।

वर्ष में मुन्था का फल कब मिलता है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है। प्राय: मुन्थेश की दशा में ही मुन्था अपना शुभाशुभ फल देती है। इसके अतिरिक्त, मुन्था जिस भाव में हो उसी संख्या के मास में उसका फलाफल मिल सकता है। अथवा जो ग्रह मुन्था के साथ में हो वह यदि सबसे बलवान् हो तब उसी की दशा में भी मुन्था का शुभाशुभ फल मिल सकता है।

अशुभ मुन्था के लिये मुन्थादान—यदि वर्ष-कुण्डली में मुन्था अनिष्ट स्थान में हो तो उस दोष की शांति के लिए निम्नलिखित दान उत्तम है :—

सुवर्ण, मोती, घृत, श्वेतवस्त्र, कांसा, कर्पूर, हाथी-दांत, मिश्री, चीनी, सफेद चन्दन, श्वेत पुष्प। इसके अतिरिक्त यदि मुन्था का स्वामी भी पीड़ित हो तो जो मुन्था राशि का स्वामी हो उसी ग्रह के अनुसार जप आदि उचित है।

: ७ :

वर्ष कुण्डली के षोडश योग

दीप्तांश चक्र, दीप्तांश देखने की विधि, इक्कबाल योग, इन्दुवार, इत्थशाल, इसराफ, नक्त योग, यमया योग, मणउ योग, कम्बूल योग, गैर कम्बूल, खल्लासर, रद्दयोग, दुफालिकुत्थ योग, दुत्थकुत्थीर, शुभतम्बीर योग, कुत्थ योग और दुरुफ योग।

वर्ष कुण्डली में षोडश योगों का विशेष महत्व माना गया है। केवल इन्हीं योगों के आधार पर वर्षफल सम्बन्धी सभी आवश्यक

बातें बतायी जा सकती हैं। प्रश्न शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वानों का कहना है कि इन योगों के आधार पर प्रश्नों का भी चमत्कारिक फलादेश किया जा सकता है। इन योगों का सही अध्ययन करने के लिए दृष्टि और ग्रहों के दीप्तांश की जानकारी विशेष आवश्यक है।

दीप्तांश चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९

दीप्तांश देखने का प्रकार—जिन ग्रहों में दृष्टि हो उनके दीप्तांश को जोड़िये और उनको आधा कीजिये। उदाहरण के लिए आपको चन्द्रमा और बृहस्पति में दृष्टि देखनी है और यह देखना है कि यह दृष्टि 'योग फल' उत्पन्न कर सकती है या नहीं? चन्द्रमा के दीप्तांश १२ हैं और बृहस्पति के ९, दोनों का योग २१ हुआ, इसका आधा १०॥ या १०।३० हुआ। तो चन्द्रमा और बृहस्पति में १०॥ अंशों तक राशिगत अंतर होने पर दोनों दीप्तांश के अन्तर्गत माने जायेंगे।

इक्कबाल योग—यदि वर्ष कुण्डली में सभी ग्रह केन्द्र (१,४, ७,१०) और पणफर (२.५,८,११) स्थानों में हों तो इक्कबाल नामक योग होता है। यह योग वर्ष में प्रसन्नता, उत्साह, स्त्री व पुत्र प्राप्ति, वाहन और मकान सुख एवं राजकीय उन्नति भी प्राप्त कराता है।

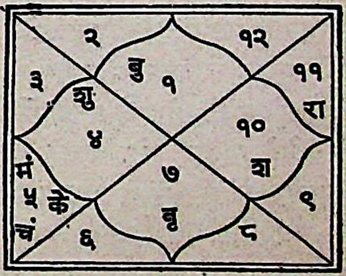

कु० सं० २

विशेष—यद्यपि अष्टम स्थान पणफर स्थान है लेकिन यह योग तभी फलित होता है जब अष्टमस्थान के अतिरिक्त पणफर तथा केन्द्र स्थानो में ही ग्रह हों। कइयों का मत है कि यदि केन्द्रों में ही सब ग्रह हों तो इक्कबाल योग होता है, लेकिन लेखक के अनुभव में यह विचारणीय नहीं है।

उदाहरण—इक्कबाल योग

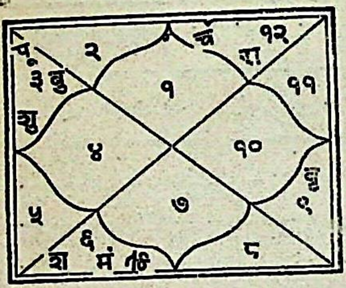

कु० सं० ३

२. इन्दुवार योग—वर्ष-कुण्डली में सूर्यादि सभी ग्रह ओपोक्लिम (३, ६, ९, १२) स्थानों में हों तो 'इन्दुवार नामक' योग होता है। यह योग वर्ष में आए तो सुख, स्त्री, पुत्र और राज्य आदि से कष्टदायक होता है। सम्पूर्ण वर्ष मानसिक चिंता, उद्वेग और अवनति में व्यतीत होता है।

उदाहरण—इन्दुवार योग

३. इत्थशाल योग—यदि लग्नेश और किसी ग्रह में (कार्येश) परस्पर दृष्टि हो, दोनों ग्रह दीप्तांश के अन्तर्गत हों तथा शीघ्र गति वाले ग्रह के राशिगत अंश कम हों और मंद गति वाले ग्रह के राशिगत अंश अधिक हों तो वर्ष प्रवेश के आगे के दिनों में शीघ्र गति वाला ग्रह विशेष तेजी से चलने के कारण उतने ही अंशों का हो जाएगा जितने अंशों का मंद-गति ग्रह है। इसे ही 'इत्थशाल' या 'मुत्थसिल' योग कहते हैं। इसके तीन भेद हैं:—(१) पूर्ण इत्थशाल (२) वर्तमान इत्थशाल और (३) भविष्य इत्थशाल

शीघ्रगति वाला ग्रह मंदगति वाले ग्रह से दृष्ट होकर एक या अर्द्ध विकला अंशादि में कम हो तब पूर्ण इत्थशाल योग होता है।

गति का ज्ञान शुद्ध स्पष्ट ग्रहों से करना चाहिए।

शीघ्र गति वाले ग्रह के अंश कम हों और मंद गति ग्रह अधिक अंश पर हो और दोनों की परस्पर दृष्टि हो तब 'वर्तमान इत्थशाल' होता है।

यदि शीघ्रगामी ग्रह राश्यन्त पर हो अर्थात २९ अंश से ऊपर हो और दूसरी राशि पर मंद गति वाला ग्रह हो किन्तु मध्यान्तर दोनों का दीप्तांशों के भीतर हो तब "भविष्यत् इत्थशाल' होता है।

विशेष—यदि कम अंशों वाला शीघ्र गति ग्रह वक्री हो तो इत्थशाल का फल नहीं होता, यदि अधिक अंशों वाला मंदगति ग्रह वक्री हो तो इत्थशाल का विशेष फल होता है।

लग्नेश का जिस भाव के स्वामी से इत्थशाल हो उस भाव का फल उस वर्ष में अवश्य होता है। अष्टम और द्वादश अशुभ भाव हैं। इन भावों के स्वामियों से इत्थशाल होना अच्छा नहीं। नवम भाव के स्वामी से लग्नेश का इत्थशाल होगा तो उस वर्ष अवश्य भाग्यवृद्धि होगी।

एक अनुभवी विद्वान् नें लिखा है कि जिस प्रकार लग्नेश से इत्थशाल देखते हैं उसी प्रकार वर्षेश से भी किस भाव के स्वामी का इत्थशाल होता है, यह विचार करना चाहिए। लेखक के विचार से भी यह मत अनुकरणीय है।

उदाहरण—सामान्य इत्थशाल

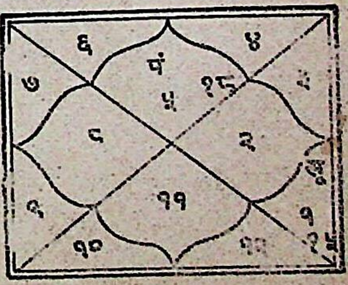

कु० सं० ४

इत्थशाल के फल की अवधि—यदि इत्थशाल में दोनों ग्रहों में परस्पर मित्र दृष्टि हो तब अपनी-अपनी दशा में लग्नेश-कार्येश फल देते हैं।

दूसरा मत 'यादव' का है यह सरल और अनुभूत है। लग्नेश और कार्येश के अंशों का अंतर ज्ञात

कर उसे १२ से गुणा करना चाहिए। जितने दिन आयें, वर्षप्रवेश के उतने ही दिन बाद योग का फल घटित होता है।

लग्नेश सूर्य के १५ अंश हैं और चतुर्थेश-नवमेश मंगल के १८ अंश है। सूर्य शीघ्रगति वाला ग्रह है। परस्पर दोनों ग्रहों में नवीं-पांचवीं दृष्टि है।

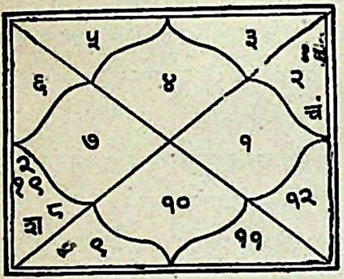

उदाहरण—पूर्ण इत्थशाल

कु० सं० ५

फल—वर्ष में स्त्री-लाभ अवश्य होगा क्योंकि परिपूर्ण इत्थशाल है।

उदाहरण—वर्तमान इत्थशाल

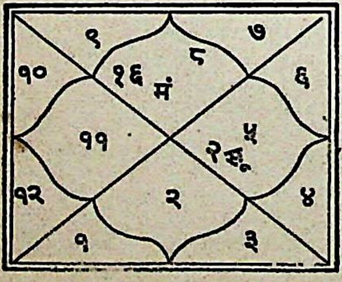

कु० सं० ६

फल—राज्य की नौकरी प्राप्ति का विचार करना है। शत्रु दृष्टि वाला इत्थशाल होने पर राज्य की नौकरी तो अवश्य प्राप्त होगी लेकिन पद साधारण मिलेगा।

उदाहरण—भविष्य इत्थ-शाल

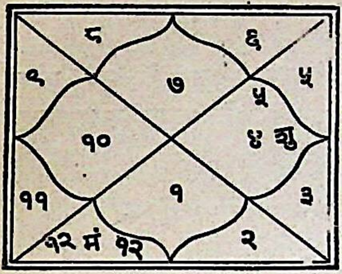

कु० सं० ७

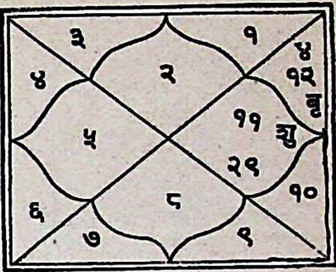

कु० सं० ८

४. **ईशराफ योग**—शीघ्र गामी ग्रह मंदगामी ग्रह से अंश या अधिक आगे हो तब ईशराफ योग होता है। यह इत्थशाल से विपरीत होता है। इस योग में लग्नेश और कार्येश परस्पर कभी नहीं मिल सकेंगे अतः योग अशुभ फल देने वाला है।

विशेष—यदि ईशराफ योग करने वाले ग्रह शुभ हों तो बुरा फल नहीं होता। इसके अतिरिक्त अशुभ ग्रहों में भी १ से अधिक अंश होने पर बुरा फल और १२ अंश से अधिक अंशों के अन्तर में शुभफल हो जाता है।

उदाहरण—ईशराफ योग

प्रस्तुत वर्ष-कुण्डली में शीघ्र-गति वाला बुध १० अंश पर है और मंद गामी बृहस्पति ६ अंश पर ही है। इस प्रकार लग्नेश और सुखेश का ईशराफ योग स्पष्ट है। यहां लग्नेश बुध और कार्येश बृहस्पति, दोनों, शुभ हैं, अतः ईशराफ के होते हुए भी सुख तथा मातृनाशक नहीं हो सकते।

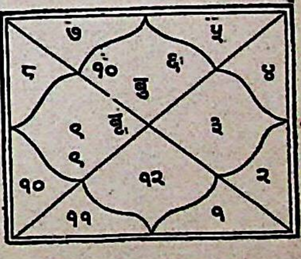

कु० सं० ९

उदाहरण—ईशराफ योग (अधिक अंशों वाला)

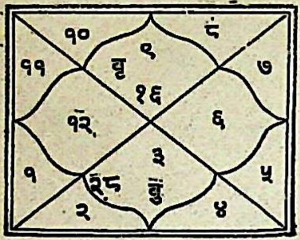

यहां बुध मिथुन के २८ अंश पर है अतः वर को कन्या-लाभ कह सकते हैं।

कु० सं० १०

५. नक्त योग—यदि लग्नेश और कार्येश में परस्पर दृष्टि न हो और उन दोनों के बीच में दीप्तांशों के अन्तर्गत ऐसा शीघ्रगामी ग्रह हो जो लग्नेश और कार्येश दोनों को देखता हो तो वह एक ग्रह के तेज को लेकर दूसरे को देता है। यह नक्त योग दूसरे की सहायता से कार्य सिद्धि करता है।

साथ की सामान्य बात है कि जब दो मनुष्य पृथक्-पृथक् हों और परस्पर मिल नहीं सकते हों तब कोई तेजस्वी सामर्थ्यवान् व्यक्ति एक मित्र की सहायता को दूसरे तक पहुँचा कर कार्यसिद्ध करा देता है।

साथ को वर्षकुण्डली में लग्नेश बृहस्पति और कार्येश बुध एक-दूसरे से द्वितीयस्थ और द्वादशस्थ होने के कारण परस्पर दृष्टि नहीं करते। लेकिन दोनों से शीघ्रगामी ग्रह चन्द्रमा, दोनों को देखता है और इत्थशाल भी करताहै। अतः वह बुध के तेज को बृहस्पति तक पहुंचाता है अर्थात् किसी की सहायता से जमीन और स्त्री की प्राप्ति करवायेगा।

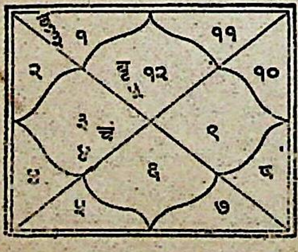

कु० सं० ११

उदाहरण—यमया योग

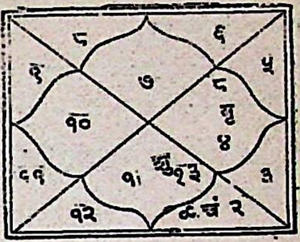

कु० सं० १२

६. यमया योग—यमया योग भी नक्त योग वाली परिस्थितिमें बनता है। यदि लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि नहीं हो और कोई मंद गति वाला ग्रह दीप्तांशों के अन्तर्गत ही दोनों को देखता हो तो वह शीघ्रगामी ग्रह की शक्ति मंदगति वाले ग्रह को देता है। यही यमया योग है।

७. मणऊ योग—मणऊ योग का सिद्धांत यह है कि यदि लग्नेश व कार्येश में इत्थशाल हो किन्तु कोई पाप ग्रह (मंगल या शनि) दोनों को या एक को भी शत्रु-दृष्टि से देखता हो, और दीप्तांशों के अन्तर्गत हो, तो, कार्यनाश करता है। यह अशुभ योग है।

उदाहरण—मणऊ योग

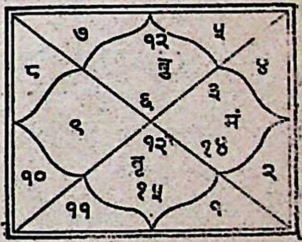

कु० सं० १३

साथ की वर्षकुण्डली में लग्नेश बुध और सप्तमेश (कार्येश) बृहस्पति परस्पर इत्थशाल करते हैं लेकिन दशम भावस्थ पाप ग्रह मंगल दोनों इत्थशाली ग्रहों को गुप्त शत्रु दृष्टि से देख रहा है। अतः मणऊ योग स्पष्ट है। इस कुण्डली में यह योग स्त्री-कष्ट अथवा स्त्री-नाश का फल करेगा।

८. कम्बूल योग

यदि लग्नेश और कार्येश में परस्पर इत्थशाल हो और इन दोनों में एक से भी चन्द्रमा इत्थशाल करता हो तो 'कम्बूल' योग होता है। ताजिक नीलकण्ठी की पुरानी टीकाओं में इसे 'इत्थशाल

कम्बूल' कहा गया है। लग्नेश और कार्येश में इत्थशाल के द्वारा जो शुभता प्रकट होती है उसकी बहुत अधिक मात्रा में कम्बूल योग द्वारा पुष्टि होती है।

इस योग में अगर लग्नेश, कार्येश और चन्द्रमा तीनों उच्च राशि या स्वराशि के बलवान् हों तो बहुत उत्तम कम्बूल योग बनता है। यदि ये ग्रह नीच राशि, शत्रुराशि के निर्बल हों तो निर्बल कम्बूल बनता है।

उदाहरण—उत्तमोत्तम कम्बूल योग

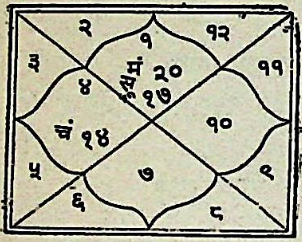

कु० सं० १४

प्रस्तुत वर्षकुण्डली में लग्वेश मंगल और पंचमेश सूर्य क्रमशः स्वक्षेत्री व उच्च के होकर इत्थशाली हैं तथा स्वगृही चन्द्रमा उन दोनों से इत्थशाल करता है। अतः इस योग में उत्तम-संतान-सुख होगा।

९. गैर कम्बूल योग—लग्नेश और कार्येश दोनों का इत्थशाल हो, परन्तु चन्द्रमा की इन पर दृष्टि नहीं हो किन्तु वही चन्द्रमा अग्रिम राशि में जाकर किसी अन्य बलवान् ग्रह से इत्थशाल करे तो 'गैर कम्बूल' योग बनता है।

विशेष विचारणीय—इस योग में चन्द्रमा की स्थिति विशेष विचारणीय है। पूर्ण गैर कम्बूल के लिए चन्द्रमा स्वराशि या उच्च राशि में नहीं होना चाहिए। राशि के अंतिम भाग में होना चाहिए एवं मित्र अथवा शत्रु क्षेत्री ग्रहों से दृष्ट नहीं होना चाहिए।

उदाहरण—गैर कम्बूल योग

प्रस्तुत उदाहरण कुण्डली में लग्नेश सूर्य और सुखेश मंगल में इत्थशाल है। अधिकार रहित चन्द्रमा कन्या के २८ अंश पर है और

किसी से इत्थशाल नहीं करता। यही चन्द्रमा अपनी आगामी राशि में शनि से, जो उच्च का है, मिल कर लग्नेश और कार्येश से भी इत्थशाली हो जाता है। इस प्रकार ग़ैर कम्बूल योग की उपस्थिति स्पष्ट है। इस कुण्डली में यह योग किसी दूसरे की सहायता से सुख-प्राप्ति करानें वाला है।

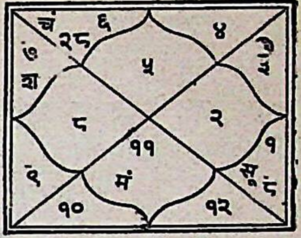

कु० सं १५

१०. खल्लासर योग—लग्नेश और कार्येश का परस्पर इत्थशाल हो लेकिन शून्यमार्गी चन्द्रमा (स्वराशि आदि में न हो, किसी ग्रह से दृष्ट नहीं हो) किसी से इत्थशाल न करता हो तो 'खल्लासर' नामक अशुभ योग होता है। यह कार्यनाशक है।

उदाहरण—खल्लासर योग

यहाँ लग्नेश-पंचमेश में इत्थशाल है लेकिन शून्यमार्गी चन्द्रमा किसी से इत्थशाल नहीं करता। अतः खल्लासर योग स्पष्ट है। यहाँ यह संतति-कष्ट अथवा संतति-मृत्यु का फल बलाबल के अनुसार करेगा।

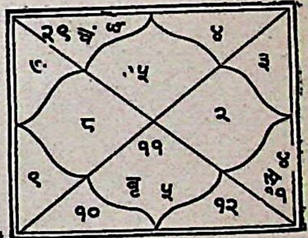

कु० सं० १६

११. रद्द योग—लग्नेश और कार्येश में कोई ग्रह अस्त, नीच, शत्रु क्षेत्री अथवा ६, ८, १२वें स्थान में हो और परस्पर इत्थशाली हो, क्रूर ग्रह से युक्त-दृष्ट हो तब 'रद्द नामक' योग होता है। यह योग कार्य नाश करने वाला है।

ताजिक भूषण का विशेष मत—यदि शीघ्रगति वाला ग्रह ३, ६, ९, १२वें स्थान में होकर केन्द्रस्थ (१, ४, ७, १०) मंदगति वाले

ग्रह से इत्थशाल करे तब पहिले कार्यों में बाधायें पड़कर बाद में कार्य में सफलता मिलेगी।

इसी प्रकार अगर मंद ग्रह ओपोक्लिम में स्थित होकर केन्द्रस्थ शीघ्री ग्रह से इत्थशाल करे तब प्रथम कार्य सिद्धि की संभावना होगी किन्तु अंत में कार्यनाश हो जायेगा।

उदाहरण—रद्द योग (प्रथम)

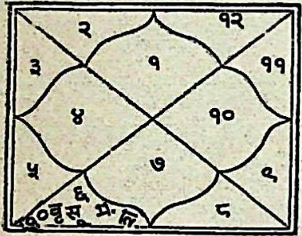

कु० सं० १७

प्रस्तुत वर्षकुण्डली में सभी ग्रह छठे स्थान में हैं; अधिकार हीन हैं, अतः इनका इत्थशाल होते हुए भी कार्य-नाशक रद्द योग है।

उदाहरण—रद्द योग (द्वितीय)

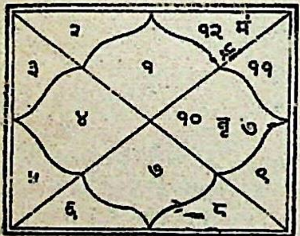

कु० सं० १८

उक्त वर्षकुण्डली में लग्नेश मंगल ओपोक्लिम (१२वें भाव) में होकर केन्द्रस्थ (दशम भाव) बृहस्पति से इत्थ-शाली है अतः प्रथम बाधा डालकर बाद में कार्य में सफलता प्राप्त करायेगा। यह तो स्पष्ट ही है कि यहाँ केन्द्रस्थ बृहस्पति मंगल की तुलना में मंदगति है।

१२. दुफालिकुत्थ योग—लग्नेश और कार्येश—यदि इन दोनों में इत्थशाल हो और (क) इन दोनों में से मंदगति वाला ग्रह अपनी उच्च राशि, स्वराशि या हद्दा, द्रेष्काण आदि में बलवान् हो तथा (ख) शीघ्रगामी ग्रह अपनी उच्च, स्वराशि आदि में न हो और निर्बल हो तो 'दुफालिकुत्थ' योग होता है। यह भी कार्य साधक है।

ध्यान दें—'शीघ्रगामी ग्रह निर्बल हो'—इसका अर्थ केवल यह है कि वह पंचवर्गी बल के अनुसार अल्पबली या हीन बली हो किन्तु दोनों ग्रहों में से कोई भी वक्री या अस्तगत या शत्रुराशिस्थ नहीं होना चाहिए।

उदाहरण—दुफालिकुत्थ योग

उक्त वर्षकुण्डली में लग्नेश भौम स्वक्षेत्री होकर मंदगति वाला होता हुआ सुखेश चन्द्र से जो निर्बली और शीघ्रगामी है, इत्थशाल करता है। अतः वर्ष में सुख प्राप्ति करायेगा।

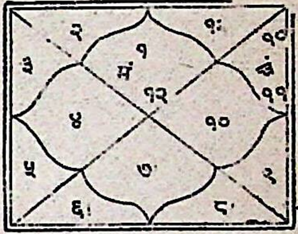

कु० स० १९

हमारा अनुभव—इस योग में कार्य में सफलता तो मिलती है लेकिन वह सामान्य सफलता होती है, पूर्ण और विशिष्ट सफलता नहीं।

१३. दुत्थकुत्थीर योग—यदि लग्नेश और कार्येश निर्बल होकर इत्थशाल करें और उनमें से एक किसी ऐसे ग्रह से जो अपने उच्च या स्वक्षेत्र में बैठा हो, बलवान् हो, इत्थशाल करे, तो दुत्थकुत्थीर योग बनता है। इस योग में किसी दूसरे की सहायता से अथवा उसके द्वारा कार्य का होना संभव होता है।

उदाहरण—दुत्थकुत्थीर योग

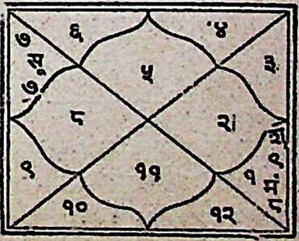

कु० सं० २०

१४. शुभतम्बीर योग—इस योग में लग्नेश और कार्येश की परस्पर दृष्टि नहीं होती किन्तु इन दोनों में से कोई एक ग्रह राशि के अंत में (२९-३० अंश) होता है एवं अन्य (आगामी) राशि में स्वगृही ग्रह से दीप्तांशों में ही इत्थशाल करता है।

यह योग शुभफलकारक है। प्राय: अन्य की सहायता से कार्य-साधन होता है। इसमें एक ग्रह दूसरे स्थानस्थ ग्रह को तेज देता है, किन्तु वह ग्रह यदि बली होगा तब ही कार्य सिद्ध करायेगा अन्यथा हानि भी पहुंचा देता है।

उदाहरण—तम्बीर योग

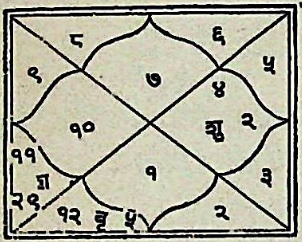

कु० सं० २१

प्रस्तुत वर्षकुण्डली में लग्नेश शुक्र और कार्येश शनि में परस्पर दृष्टि नहीं है। कार्येश शनि कुंभ के अन्तिम अंश में है और आगामी मीन राशि में स्वगृही बृहस्पति से दीप्तांशों के अन्तर्गत इत्थशाल करता है, अत: सुख-प्राप्ति होगी।

१५. कुत्थ योग—यदि वर्षकुण्डली में लग्नेश, कार्येश आदि बलवान् हों तो 'कुत्थ योग' होता है। केन्द्र और पणफर में स्थित, पंचवर्गी बल के अनुसार बलवान् ग्रह बली होता है। इसके अतिरिक्त चारों प्रकार से हर्षबल का भी विचार कर लेना चाहिए।

कुत्थ योग बहुत शुभकारी है। इस योग के होने पर उस वर्ष में पूर्ण उन्नति, सफलता तथा हर्ष प्रदान करने वाले शुभ कार्य होते हैं।

१६. दुरुफ योग—दुरुफ योग कुत्थ योग का बिल्कुल उलटा है। अर्थात् यदि वर्ष कुण्डली में लग्नेश, कार्येश आदि ग्रह निर्बल हों तो 'दुरुफ योग' बनता है। त्रिक स्थान में स्थित ग्रह, वक्री, शत्रु-क्षेत्री और अस्तंगत ग्रह सामान्यतया निर्बल समझे जाते हैं। विशेष विचार पंचवर्गी बल और हर्षबल के अनुसार करना चाहिए।

चन्द्रमा के लिए विशेष दुरुफ—आचार्य नीलकण्ठ नें लिखा है कि यदि चन्द्रमा सूर्य से द्वादश भाव में स्थित हो, वृश्चिक राशि के पूर्वार्द्ध तथा तुला के उत्तरार्द्ध में हो, राशि-स्वामी की दृष्टि से रहित हो, क्षीण हो, राशि के अंत में हो, जन्म कुण्डली में भी अशुभ हो, और शुक्ल पक्ष में मंगल और कृष्ण पक्ष में शनि की शत्रु दृष्टि से युक्त हो तो, ऐसी सब स्थितियों में चन्द्रमा को निर्बल समझना चाहिए।

खानखानह नवाब के विशेष योग

ज्योतिष के अच्छे अनुरागी और विद्वान् नवाब साहब नें जन्म-पत्र और वर्षफल के लिए क्रमशः **'खेट कौतुक'** एवं **'द्वात्रिंशद्योगावली'** नाम की पुस्तकें संस्कृत-फारसी मिश्रित भाषा में लिखी हैं। वर्ष फल के लिए उन्होंनें ३३ विशेष योगों का उल्लेख किया है,जो उनको विशेष उपयोगी और अनुभूत जंचे हैं। पाठकों की जानकारी के लिए हम कतिपय विशेष योग, जो हमारे अनुभव से भी ठीक उतरते हैं, लिख रहे हैं।

(१) **मुक्तावली योग**—वर्षकुण्डली में यदि सभी पाप ग्रह ही उसके सातवें भाव से लग्न पर्यन्त क्रम से गये हों तो, 'मुक्तावली' योग होता है। इसका फल शुभदायी नहीं है। यह योग वर्ष में क्लेश, विवाद राजभय, विवाद और शारीरिक, मानसिक कष्ट देता है।

उदाहरण

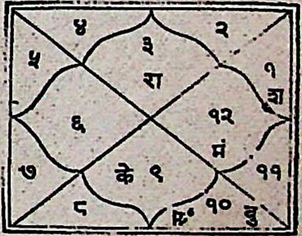

कु० सं० २२

(२) **काबिल योग**—चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र—ये चारों शुभ ग्रह धन स्थान में गये हों और ओपोक्लिम (३।६।९।१२) स्थान में

उदाहरण

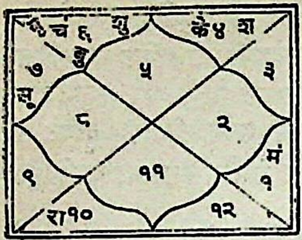

कु० सं० २३

उदाहरण

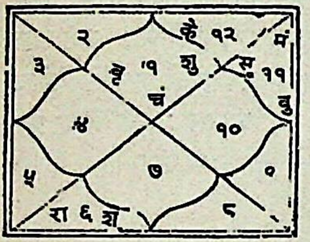

कु० सं० २४

उदाहरण

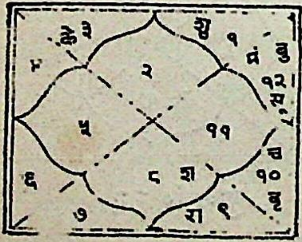

कु० सं० २५

रवि, राहु, मंगल और शनि गये हों तो 'काबिल योग, होता है। इसका फल उत्तम है। लक्ष्मी की विपुल वृद्धि, तेज की वृद्धि, नौकरी में पदोन्नति और राज्याधिकार प्राप्त होते हैं। यदि चुनाव के समय यह योग हो तो चुनाव में सफलता मिलती है।

(३) **लालील योग**—शुभ ग्रहों के वर्ग में और पुरुष राशि में गयेहुए शुभ ग्रह चतुर्थ में, धन भाव में अथवा लग्न में स्थित हों और क्रूर ग्रह छठे, ग्यारहवें स्थान में गए हों तो, 'लालील योग' होता है। यह लालील योग जिस वर्ष में होवे उस वर्ष में धन-धान्य की प्राप्ति अच्छी होती है।

(४) **लत्ता योग**—छठे, सातवें और दूसरे भाव में क्रूर ग्रह गये हों; लग्न का स्वामी बारहवें अथवा धन-भाव में बैठा हो और ये एक भी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट नहीं हों तो, 'लत्ता, नामक योग होता है। यह योग जिस वर्ष में हों उस वर्ष क्षण भर में शत्र से विवाद, भय, चिंता और क्षण भर में ही मान-वृद्धि, सुख वद्धि हो शत्रु मिटे।

(५) रिहा योग—सूर्य, बुध और राहु वर्ष-कुण्डली के लग्न में गये हों और उनको कोई भी शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो स्वजन का शोक और धन विनाश करने वाला 'रिहा' नामक अशुभ फलदायी योग होता है।

उदाहरण

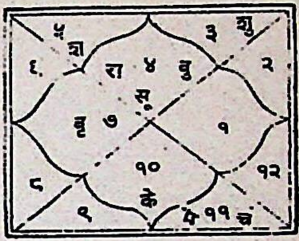

कु० सं० २६

(६) गोशना योग—वर्ष लग्न से आठवें स्थान का स्वामी नवें, पांचवें या छठे भाव में गया हो और धन भाव का स्वामी पाप-ग्रह के नवाँश में हो तो वस्त्र आदि का नाश करने वाला 'गोशना' योग होता है। यह शुभफलदायी योग नहीं है।

उदाहरण

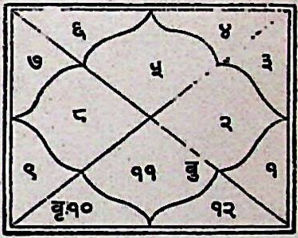

कु० सं० २७

(७) दोशना योग—दूसरे अथवा नौवें भाव में शनि, मंगल और बुध गये हों और लग्न का स्वामी निर्बल होकर आठवें भाव में गया हो तो सकल कर्म का नाश करने वाला और दुःखदायी 'दोशना' नामक योग होता है।

उदाहरण

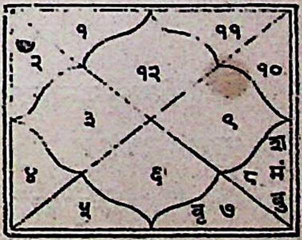

कु० सं० २८

उदाहरण

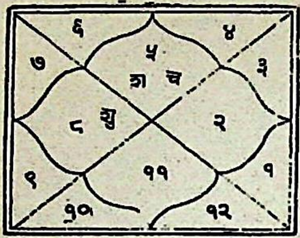

कु० सं० २९

(८) चीन योग—वर्षकुण्डली में चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में शुक्र हो; और शनि-चन्द्रमा वर्षलग्न में अथवा अपनी स्वराशि (४।१०।११) में गये हों तो विपुल धन-धान्य तथा मोटर आदि से वाहन-सुख, देने वाला अत्यन्त शुभदायी 'चीन' योग होता है।

उदाहरण

जन्म लग्न—मीन

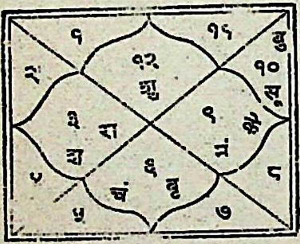

कु० सं० ३०

(९) कलांवार योग—जन्म-समय का लग्न ही वर्ष लग्न आजावे तो उसको 'एकोदय वर्ष' कहते हैं। यह योग जिस वर्ष में आवे उस वर्ष ज्वर, कम्प, श्वास, कास, कण्डु आदि रोगों से पीड़ा होती है। सामान्यतया यह योग शुभफलदायी नहीं होता। इसको 'कलांवार' योग कहते हैं।

विशेष—जन्म लग्न यदि वर्षलग्न से केन्द्र में हो तो सर्व अरिष्टों का नाश होता है।

इसी वर्ष-कुण्डली में, यदि जन्म-लग्न मिथुन, कन्या या धनु होती तो अरिष्ट नाश होने वाला योग बन सकता था।

(१०) **वारा योग**—बृहस्पति, शुक्र और मंगल लग्न में अथवा चतुर्थ स्थान में मीन राशि में गये हों तो मनुष्य को सुवर्ण, चांदी, रत्न आदि का प्रचुर लाभ देने वाला 'वारा' नामक योग होता है।

उदाहरण

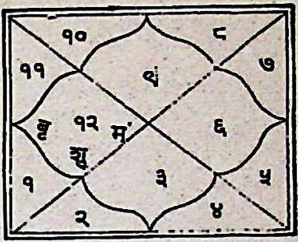

कु० सं० ३१

(११) **दिल्ला योग**—जन्म लग्न का स्वामी रवि, वर्ष-कुण्डली में दशम स्थान में गया हो और वर्ष लग्न से दशम भाव का स्वामी उच्च राशि का हो तो कष्टों का नाश करने वाला और महा-प्रतापी बनाने वाला, वाहन आदि सुखों को देने वाला 'दिल्ला' नामक योग होता है। सिंह लग्न की जन्म-कुण्डली वाले जातकों के लिए ही वर्ष कुण्डली में इस प्रकार का योग संभव है।

उदाहरण

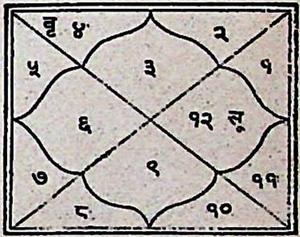

कु० सं० ३२

(१२) **मादला योग**—तीसरे, पाँचवें, नवें और ग्यारहवें भाव में शुभ अथवा पाप ग्रह गये हों किंवा अपनी उच्चराशि में गये हुये ग्रह उक्त स्थानों में बैठे हों तो सकल कार्य की सिद्धि करने वाला और सुख-समृद्धि बढ़ाने वाला 'मादला' योग होता है।

प्रथम उदाहरण

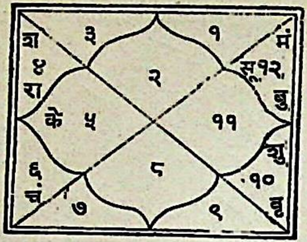

कु० सं० ३३

द्वितीय उदाहरण

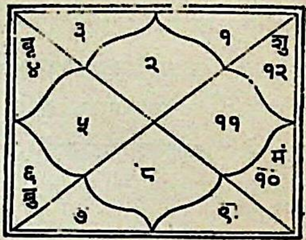

कु० सं० ३४

(१३) **कुलाब योग**—कन्या राशि के आगे की विसम राशियों (७।९।११) में शुक्र गया हो और मेष राशि के आगे की सम राशियों (२।४।६ ८। १०।१२) में लग्न या नवाँश में बृहस्पति गया हो तो शत्रु का नाश करने वाला, स्त्री-सुख का विशेष आनन्द देने वाला, सर्व कार्यों में सिद्धि करने वाला 'कुलाब' नामक योग होता है।

उदाहरण

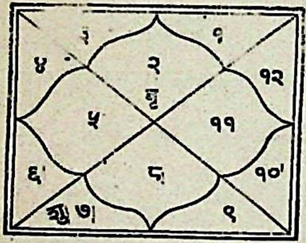

कु० सं० ३५

(१४) **कुलाली योग**—वर्ष-कुण्डली के छठे भाव में क्रूर ग्रह गये हों और आठवें भाव में शुभ ग्रह गये हों तथा बृहस्पति, चन्द्रमा और राहु नवम-पंचम भाव में बैठे हों तो, राजा से सुख की प्राप्ति, विवाद में विजय, नौकरी में पद्दोन्नति, शत्रु का नाश और धन का लाभ देने वाला 'कुलाली' नामक अत्यंत शुभफलदायी योग होता है।

उदाहरण

कु० सं० ३६

(१५) **खुशाला योग**—वर्ष-कुण्डली के छठे भाव में क्रूर ग्रह स्थित हों और दशवें भाव में शुक्र, बुध, चन्द्र अथवा बृहस्पति स्थित हो तो 'खुशाला' नामक शुभफलदायी योग होता है। यह योग वर्ष में हो तो राजमान, लाभ, जमीन-जायदाद की प्राप्ति, धन-धान्य और वस्त्रादिकों का लाभ, स्त्री-सुखों की प्राप्ति होती है।

उदाहरण

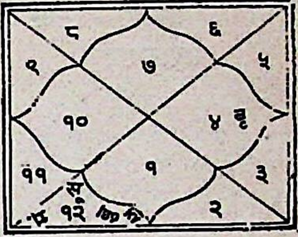

कु० सं० ३७

(१६) **खुशाली योग**—वर्ष कुण्डली में शुक्र+गुरु का योग तीसरे स्थान में होवें और चन्द्रमा शनि से युत होकर लग्न में बैठा हो तो प्रभुता वृद्धि करने वाला, सुख-समृद्धि बढ़ाने वाला, धन-लाभ कराने वाला 'खुशाली' नामक योग होता है।

उदाहरण

कु० सं० ३८

(१७) **फलूशा योग**—वर्ष-कुण्डली के ग्यारहवें और लग्न में पाप ग्रह स्थित हों और पांचवें, छठे, सातवें में शुभ ग्रह स्थित हों तो हाथ में आये हुए लाभ को तत्काल मिटानेवाला, सर्वार्थ नाश करने वाला 'फलूशा' नामक अशुभ-फलदायी योग होता है।

उदाहरण

कु० सं० ३९

विशेष—इस योग में शुभ और पाप ग्रह का प्रतियोग होता है। यदि यह प्रतियोग १८० अंश के पूर्णअंतर के पश्चात् हो तो इस योग को अत्यन्त अनिष्ट फलदायी समझना चाहिए।

उदाहरण

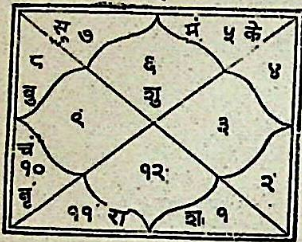

कु० सं ४०

(१८) फलासी योग—दूसरे बारहवें, आठवें, छठे और सातवें भावों में पाप ग्रह स्थित हों और शुभ ग्रह निर्बली (नीच, अस्त, शत्रुराशिगत) हो तो 'फलासी' योग होता है। यह अशुभ योग जिस वर्ष में आ जाय उसमें क्लेश, विवाद, पशुओं को पीड़ा, चोरी का भय, स्वजनों से वैर और स्वास्थ्य में गड़बड़ी होती है।

उदाहरण

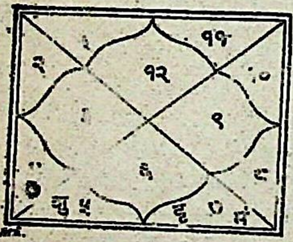

कु० सं० ४१

(१९) वदारा योग—वर्ष लग्न का स्वामी अष्टम भाव में मंगल से युतहो और आठवें स्थान का स्वामी बारहवें अथवा छठे स्थान में स्थित हो तो 'वदारा' योग होता है। जिस वर्ष में यह योग होता है उस वर्ष शरीर-पीड़ा विशेष रहती है। आपरेशन का अवसर भी आ सकता है। और दुर्घटना आदि होने की संभावना रहती है।

उदाहरण

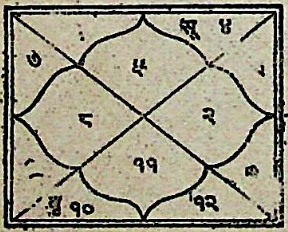

कु० सं० ४२

(२०) वदारी योग—वर्ष लग्न का स्वामी सूर्य बारहवें भाव में गया हो और बृहस्पति छठे अथवा आठवें भाव में विराजमान हो तो धन-हानि और रोग देने वाला 'वदारी' नामक अशुभ फलदायी योग होता है।

हमारे विचार से यह योग तभी बलवान् होता है जब बृहस्पति आठवें भाव में न जाकर छठे भाव में गया हो।

उदाहरण

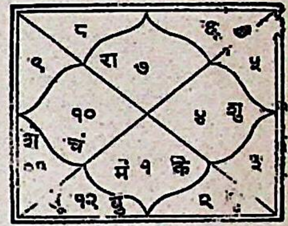

कु० सं० ४३

(२१) तमाल योग—वर्ष लग्न का स्वामी दसवें, सातवें अथवा चतुर्थ भाव में स्थित हो और जिस भाव में हो उसका स्वामी यदि चतुर्थ स्थान में बैठा हो तो 'तमाल' नाम का शुभ फलदायी योग होता है। जिस वर्ष में यह योग हो उस वर्ष में पदोन्नति, राज्याधिकार-प्राप्ति वाहन-सुख, अच्छे आदमियों से मित्रता और शत्रु का नाश होता है।

उदाहरण

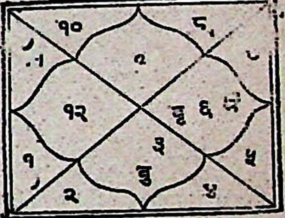

कु० सं० ४४

(२२) तमाली योग—वर्ष-लग्न का स्वामी मंगल से युत होकर दसवें भाव में स्थित हो और दशम भाव का स्वामी लग्न में या सातवें भाव में बैठा हो तो 'तमाली' नाम का शुभफलदायी योग होता है। यह तमाली योग वर्ष में संतान देने वाला, सुखों में वृद्धि करने वाला, राज्य से मान दिलाने वाला और धन-धान्य की प्राप्ति कराने वाला होता है।

(२३) तगी योग—पंचम स्थान का स्वामी और गुरु, बुध

उदाहरण

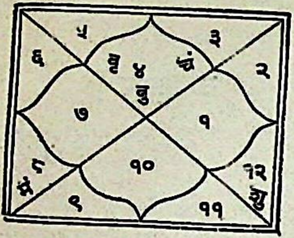

कु० सं० ४५

चन्द्रमा ये कर्क-वृश्चिक राशि में गये हों और नवम भाव में शुक्र वृषभ अथवा मीन राशि में स्थित हो तो 'तगी' योग होता है। यह योग जिस बर्ष में हो उसमें धर्म, भाग्य, यश की वृद्धि, संतान-सुख-प्राप्ति और धन-धान्यादि का लाभ मिलता है।

उदाहरण

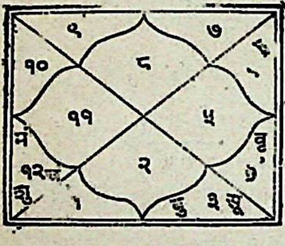

कु० सं० ४६

(२४) तेज योग—वर्ष कुण्डली में शुक्र, बुध, सूर्य, चन्द्र और मंगल ये पांचवें तथा आठवें भावों में बैठे हों और लग्न यदि बृहस्पति से युत अथवा दृष्ट हो तो अनेक प्रकार के सुख देने वाला, राज्याधिकार प्राप्त कराने वाला, व्यापार में वृद्धि करने वाला और विवाद में जय देने वाला, 'तेज' नामक अत्यन्त शुभफलदायी योग होता है।

(२५) तेगी योग—वर्ष लग्न से छठे, नवें, ग्यारहवें और बारहवें स्थान में पाप ग्रह बैठे हों अथवा बारहवें भाव से केन्द्र में जन्म लग्नपति और वर्षेश्वर बैठ गये हों तो राजमान, शत्रु का नाश, सर्व सुखों को देने वाला 'तेगी' नामक शुभ फलदायी योग होता है।

(i) कल्पितजन्म लग्न पति मंगल
(ii) कल्पित बर्षेश्वर—शनि

प्रथम उदाहरण

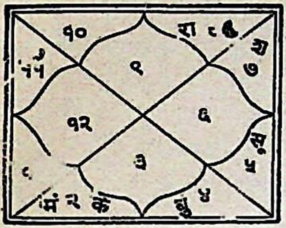

कु० सं० ४७

द्वितीय उदाहरण

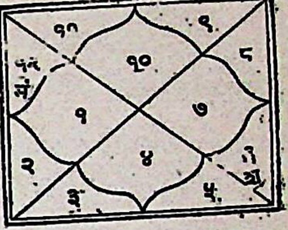

कु० सं० ४८

(२६) यमी योग—वर्ष कुण्डली में शुक्र की राशि (७।२) का बृहस्पति और वृहस्पति की राशि (९।१२) में गया हुआ शुक्र पणफर (२।५।८।११ भाव) तथा चतुर्थ स्थान में स्थित हो तो द्विगुण लाभ देनें वाला 'यमी' योग होता है।

उदाहरण

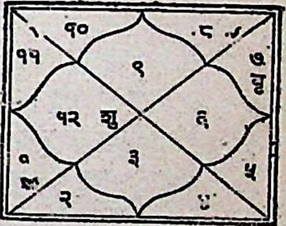

कु० सं० ४९

विशेष—हमारे विचार से इस योग में शुक्र का मीन राशि में होना आवश्यक होना चाहिए। इससे वह बलवान् होगा।

(२७) जीव योग—यदि तीसरे अथवा ग्यारहवें भाव में रवि स्थित हो और शुभ ग्रह चौथे और सातवें भाव में बैठ गये हों तो पुत्र-प्राप्ति का सुख करनें वाला, विपुल धन और यश देने वाला, कई प्रकार से सुखों में वृद्धि करने वाला, 'जीव' नामक शुभ फलदायी योग होता है।

उदाहरण

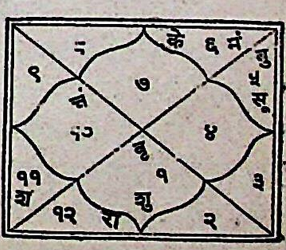

कु० सं ५०

(२८) खंजाब योग—वर्ष कुण्डली के लग्नेश, लाभेश अथवा पंचमेश एवं चतुर्थेश, दशमेश और सप्तमेश ग्रह जिस-जिस भाव में स्थित हों, उस भाव का विशेष सुख और तेज वृद्धि देने वाला 'खंजाब' योग होता है।

: ६ :

वर्ष कुण्डली और सहम

सहमों की उपयोगिता, पुण्य सहम, विद्या सहम, मित्र सहम, यश सहम, माहात्म्य सहम, आशा सहम, सामर्थ्य सहम, भ्रातृ सहम, गौरव सहम, पितृ सहम, मातृ सहम, पुत्र सहम, जीवित सहम, कार्य सहम, रोग सहम, कलि सहम, शास्त्र सहम, बंधु सहम, मृत्यु सहम, परदारा सहम, वाणिज्य सहम, अर्थ सहम, देशान्तर सहम आदि आदि। सहम फल विवेचन, सहम किस समय फल देते हैं ?

उपयोगिता—वर्षफल में सहमों का विशेष महत्व माना जाता है। पुराने ज्योतिर्विद् वर्ष पत्रों में सहम विशेष रूप से लगाते थे; परन्तु धीरे-धीरे यह प्रथा लुप्त होने लगी। इसके दो कारण हैं :—(१) जन्म पत्र में सहम स्पष्ट नहीं किये जाते। (२) कभी-कभी कुछ सहमों का फल यथार्थ भी नहीं मिलता। इनमें से, निश्चय ही, पहला कारण प्रमुख है। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि जातक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण जन्मपत्र है। वर्षफल जन्मपत्र का ही एक भाग है। वर्षफल का यही अध्ययन जन्मपत्र की पारस्परिक

तुलना के साथ ही किया जा सकता है; अतः जन्मपत्र में यदि आप सहम स्पष्ट करके बाद में वर्षफल में भी उनको स्पष्ट करें तो उनका पारस्परिक फलादेश पूर्णतया सही उतरता दिखाई देगा। केवल वर्ष-फल के आधार पर, सहमों द्वारा चमत्कारिक फलादेश कुछ कठिन ही होगा।

भिन्न-भिन्न ताजिक ग्रंथों में सहमों की संख्या में अन्तर पाया गया है। आचार्य नीलकण्ठ ने केवल ५० सहमों पर ही विचार किया है; आचार्य वेंकटेश ने ४८ सहमों को प्रधानता दी है और आचार्य केशव २५ सहमों को ही महत्व देते हैं। पं० गंगाराम राजज्योतिषी ने अपने ग्रंथ 'दैवज्ञ कल्पद्रुम' में ६० सहमों का उल्लेख किया है। दैवज्ञवर्य्य श्रीमन्महादेव शर्मा ने अपने ग्रंथ 'वर्ष-दीपक में २५ सहमों को स्पष्ट करने की विधि लिखी है। Astrological Magasine के यशस्वी सम्पादक श्री बी० वी० रमन ने अपनी पुस्तक (Yarsh phal) (वर्षफल) में ३५ मुख्य सहमों का उल्लेख किया है। हम भी वर्तमान समय और व्यवहार के उपयुक्त कतिपय सहमों का उल्लेख कर रहे हैं।

(१) **पुण्य सहम**—जब दिन में वर्ष-प्रवेश हो, तब, स्पष्ट चन्द्रमा के राशि अंशों आदि में से स्पष्ट सूर्य के राश्यादि हीन कर, वर्ष लग्न की राश्यादि लगावें। और यदि सूर्य-चन्द्र के मध्य लग्न न हो तब एक राशि युक्त करने पर 'पुण्य सहम' स्पष्ट होगा।

यदि रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तब विपरीत क्रिया करनी चाहिए अर्थात् सूर्य के राश्यादि में स्पष्ट चन्द्र घटा कर वर्ष लग्न जोड़ना चाहिये तथा साथ ही चन्द्र सूर्य के मध्य में लग्न न हो तब एक राशि युक्त करनी चाहिये। अब पुण्य सहम स्पष्ट होगा।

एक काल्पनिक कुण्डली का विवरण देखिये—

चन्द्र स्पष्ट :—	४	१०	२५	२५;
सूर्य स्पष्ट :—	८	४	१०	८;
वर्ष लग्न :—	१	५	१७	५;
वर्ष प्रवेश :—	दिन में			

क्रिया :—स्पष्ट चन्द्र	४ | १० | २५ | २५
हीन किया " सूर्य	—८ | ४ | १० | ८
	८ | ६ | १५ | १७
युक्त किया—वर्ष लग्न	+१ | ५ | १७ | ५
	९ | ११ | ३२ | २२

यहां सूर्य चन्द्र के मध्य में लग्न वर्तमान है; अतः एक राशि युक्त करने की आवश्यकता नहीं।

पुण्य सहम सब सहमों में विशेष महत्व का है। एक अन्य उदाहरण द्वारा इसे और समझिये :—

चन्द्र स्पष्ट=२२७° २६';
सूर्य स्पष्ट=११४° २५'
लग्न स्पष्ट=२७२°।

क्रिया :—
 २२७° २६'
—११४° २५'
 ११३° १'
+२७२°
 ३८५° १'
= २५° १'
+ ३०°
 ५५° १' स्पष्ट सहम

विशेष—जो ग्रह (सहम स्पष्ट के लिए) घटाया जाय उससे लेकर जिससे घटाया है, उस ग्रह तक लग्न नहीं हो तभी एक राशि जोड़नी चाहिए। सभी सहमों में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अनुभव में देखा गया है कि लग्न सम्बन्धी नियम में प्रायः

गलतियाँ हो जाती हैं। निम्न दो कुण्डलियों से यह बात और स्पष्ट हो जाती है।

प्रथम कुण्डली

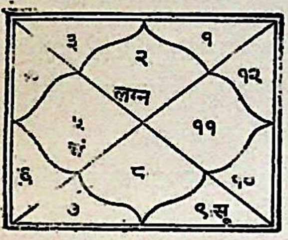

कु० सं० ५१

द्वितीय कुण्डली

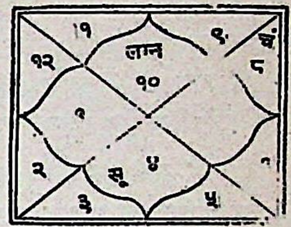

कु० सं० ५२

(i) यहाँ सूर्य चन्द्रमा से हीन किया गया है। सूर्य-चन्द्रमा के मध्य लग्न वर्तमान है।

(ii) यहां सूर्य चन्द्रमा से घटाया गया है। सूर्य-चन्द्रमा के मध्य लग्न वर्तमान नहीं है।

२. **विद्या सहम**—जब दिन में वर्ष.प्रवेश हो तब सूर्य में चन्द्र घटावें और रात्रि में चन्द्र से सूर्य घटाकर लग्न युक्त करने पर 'विद्या सहम' स्पष्ट होता है. यही सहम 'ज्ञान' 'मुझ' और 'अन्तिम' सहम भी कहा जाता है। एक राशि युक्त करने का नियम पुण्य की भाँति ही समझना चाहिए।

उदाहरण—

स्पष्ट सूर्य = ३ | २४ | २५
— स्पष्ट चन्द्र = ७ | १७ | २६
————————————
८ | ६ | ५९
+ स्पष्ट लग्न = ९ | २ | ०
————————————
५ | ८ | ५९

यहां चन्द्र-सूर्य के मध्य लग्न वर्तमान है अतः एक राशि जोड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

३. **मित्र सहम**—दिन के इष्ट में 'विद्या सहम' में पुण्य सहम को घटाकर शुक्र के राश्यादि युक्त करे। यदि 'पुण्य सहम' की राशि से 'विद्या सहम' की राशि तक शुक्र राशि न हो तो एक राशि युक्त करना चाहिए। इस प्रकार 'मित्र' नाम वाला सहम स्पष्ट होता है। रात्रि में विपरीत क्रिया करनी चाहिए।

४. **यश सहम**—दिन में वर्ष-प्रवेश हो तो स्पष्ट बृहस्पति से 'पुण्य सहम' को घटावें और रात्रि में पुण्य सहम में से स्पष्ट बृहस्पति को घटायें। इसके बाद लग्न जोड़ दें। इस प्रकार से 'यश, सहम स्पष्ट होता है। 'बल' और 'देह' नाम वाले सहम भी ठीक इसी प्रकार से स्पष्ट होते हैं।

५. **माहात्म्य सहम**—दिन में वर्ष प्रवेश हो तो, पुण्य सहम में भौम को हीन कर लग्न जोड़े तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश होने पर भौम में से पुण्य सहम को हीन कर लग्न जोड़े तथा क्रम से भौम-पुण्य और पुण्य-भौम के बीच लग्न न हो तब १ राशि युक्त करें, अन्यथा नहीं। इस विधि से 'माहात्म्य' और 'धैर्य' सहम स्पष्ट होते हैं।

६. **आशा सहम**—दिन में वर्ष प्रवेश होने पर शनि से शुक्र तथा रात्रि में होने पर शुक्र से शनि घटाकर वर्ष लग्न जोड़ें। तथा क्रम से शुक्र-शनि और शनि-शुक्र के मध्य लग्न राशि न होने पर १ राशि युक्त करने पर 'आशा' सहम स्पष्ट होता है।

७. **सामर्थ्य सहम**—दिन के वर्ष-प्रवेश में स्पष्ट भौम में से वर्ष लग्नेश को तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश होने पर वर्ष लग्नेश से भौम को हीन कर लग्न जोड़ दें तथा शोध्य-शोधक के मध्य में लग्न न हो तब एक राशि युक्त करें। इस प्रकार सामर्थ्य (क्षमता) सहम स्पष्ट होता है।

विशेष—(i) यदि लग्नेश मंगल हो तो उक्त क्रिया गुरु को लेकर करनी चाहिए।

(ii) जिसमें से हीन करना कहा हो वह 'शोधक' और जिसको हीन करने को कहा है वह 'शोध्य' होता है।

८. **भ्रातृ सहम**—स्पष्ट बृहस्पति में से शनि को हीन कर लग्न के योग करने व शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न होने पर एक राशि जोड़ने पर 'भ्रातृ-सहम' स्पष्ट होता है।

९. **गौरव सहम**—दिन में वर्ष-प्रवेश हो तो, स्पष्ट बृहस्पति में से स्पष्ट चन्द्र घटायें और सूर्य को जोड़ें तथा रात्रि में वर्ष-प्रवेश हो तो स्पष्ट बृहस्पति में से स्पष्ट सूर्य घटाकर स्पष्ट चन्द्र का योग करें तथा क्रम से चन्द्र-गुरु के मध्य सूर्य न हो या सूर्य-गुरु के मध्य चन्द्र न हो तब एक राशि युक्त करने पर 'गौरव' सहम स्पष्ट होगा।

१०. **पितृ सहम**—दिन में वर्ष-प्रवेश हो तो, शनि में से सूर्य और रात्रि में हो तो सूर्य से शनि घटाकर लग्न जोड़े। क्रमशः सूर्य-शनि और शनि-सूर्य के मध्य लग्न राशि न होने पर एक राशि का योग करें। इस प्रकार 'पितृ-सहम' स्पष्ट होता है। इसे 'तात' सहम भी कहते हैं। 'राज' सहम भी इसी क्रिया से स्पष्ट होता है।

११. **मातृ सहम**—दिन के वर्ष-प्रवेश में स्पष्ट चन्द्र में से स्पष्ट शुक्र घटाकर तथा रात्रि में वर्ष-प्रवेश होने पर शुक्र से चन्द्र घटाकर लग्न युक्त करे तथा आवश्यकतानुसार एक राशि युक्त करेंतो 'मातृ' सहम स्पष्ट होता है। उसी प्रकार 'अम्बु' सहम होता है।

१२. **पुत्र सहम**—स्पष्ट बृहस्पति में से चन्द्र घटाकर लग्न जोड़े तथा चन्द्र-गुरु के मध्यम में लग्न राशि न हो तब एक राशि युक्त करने पर 'पुत्र' सहम होगा।

१३. **जीवित सहम**—दिन के वर्ष-प्रवेश में शनि में से गुरु तथा रात्रि के वर्ष-प्रवेश में गुरु में से शनि घटाकर लग्न जोड़ना चाहियें।

फिर आवश्यकतानुसार एक राशि जोड़कर या न जोड़कर 'जीवित' सहम स्पष्ट करना चाहिए।

१४. **कर्म सहम**—दिन के वर्ष-प्रवेश में स्पष्ट भौम में से बुध को हीन करे और रात्रि में वर्ष-प्रवेश हो तो बुध में से भौम को हीन करें और वर्ष लग्न जोड़ें। इसमें आवश्यकतानुसार एक राशि जोड़ने पर 'कर्म' सहम स्पष्ट होता है।

१५. **रोग सहम**—वर्ष-लग्न में से स्पष्ट चन्द्र हीन कर लग्न जोड़े। इस प्रकार 'रोग' सहम स्पष्ट होगा।

विशेष—यहां लग्न में से ही चन्द्र हीन किया गया है; अतः किसी भी स्थिति में एक राशि जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

१६. **कलि सहम**—दिन में वर्ष-प्रवेश हो तो स्पष्ट बृहस्पति में से स्पष्ट शनि को घटायें तथा रात्रि में वर्ष-प्रवेश होने पर शनि में से गुरु को हीन करे और लग्न को जोड़े तथा शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न हो तब एक राशि युक्त करें। इस प्रकार 'कलि' सहम स्पष्ट होता है। 'क्षमा' सहम भी इसी प्रकार समझना चाहिए। यहाँ कलि से तात्पर्य कलह से हैं।

१७. **शास्त्र सहम**—दिन के वर्ष इष्ट में स्पष्ट बृहस्पति में से स्पष्ट शनि घटायें और रात्रि के वर्ष इष्ट में स्पष्ट शनि में से स्पष्ट बृहस्पति घटाकर स्पष्ट बुध को युक्त कर दें। यदि शोध्य-शोधक के मध्य बुध राशि न हो तो १ राशि और जोड़ दें। इस प्रकार 'शास्त्र' सहम स्पष्ट होगा।

१८. **बंधु सहम**—स्पष्ट बुध में से स्पष्ट चन्द्र हीन कर लग्न जोड़े तथा शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न हो तब १ राशि जोड़ने पर 'बंधु' सहम होता है।

१९. **मृत्यु सहम**—अष्टम भाव में से स्पष्ट चन्द्र को घटाकर शनि युक्त करें। शोध्य-शोधक के मध्य शनि की राशि न हो तब एक राशि युक्त करने पर 'मृत्यु' सहम होता है।

२०. **परदारा सहम**—शुक्र में से सूर्य को हीन कर लग्न जोड़े। शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न हो तब एक राशि और जोड़े। इस प्रकार 'परदारा' सहम स्पष्ट होगा।

२१. **वाणिज्य सहम**—स्पष्ट चन्द्रमा में से बुध को हीन कर लग्न जोड़ने तथा पूर्वोक्त रीति से एक राशि जोड़ने पर 'वाणिज्य' सहम स्पष्ट होता है।

२२. **देशान्तर सहम**—स्पष्ट नवम भाव में से स्पष्ट नवमेश को घटाकर लग्न जोड़े तथा एक राशि का संस्कार करे। इस प्रकार 'देशान्तर' सहम स्पष्ट होगा।

२३. **अर्थ सहम**—लाभ भाव में से लाभेश हीन कर लग्न जोड़ दे तथा एक राशि का संस्कार कर 'अर्थ' सहम स्पष्ट करे। कहीं-कहीं 'अर्थ' सहम के लिए 'लाभ' सहम का नाम भी प्रयुक्त हुआ है।

२४. **अचानक धन-लाभ सहम**—स्पष्ट वर्ष लग्न में सुखेश घटाकर लग्न जोड़े तथा शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न हो तो एक राशि जोड़कर 'निधि' सहम स्पष्ट कर लें। सरलता के लिए शीर्षक में नाम का रूपांतर कर दिया है।

२५. **कार्य-सिद्धि सहम**—दिन का वर्ष-प्रवेश हो तो स्पष्ट शनि में से स्पष्ट सूर्य घटाकर सूर्य राशीश्वर को युक्त करे तथा रात्रि का वर्ष-प्रवेश हो तो, स्पष्ट शनि में से स्पष्ट चन्द्र घटाकर चन्द्र राशीश्वर को जोड़ दे और शोध्य-शोधक के मध्य जोड़ने वाला ग्रह न हो, तब एक राशि युक्त कर दे। इस प्रकार 'कार्य सिद्धि' सहम स्पष्ट होता है।

२६. **विवाह सहम**—स्पष्ट शुक्र में से स्पष्ट शनि हीन करके लग्न जोड़े तथा शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न हो तब एक राशि युक्त कर दे, 'विवाह' सहम स्पष्ट होगा।

२७. **सन्ताप सहम**—स्पष्ट शनि में से चन्द्र को घटाकर षष्ठ भाव युक्त करे तथा शोध्य-शोधक के मध्य षष्ठ भाव की राशि न हो

तव एक राशि युक्त कर संताप सहम स्पष्ट करें।

२८. **श्रद्धा सहम**—स्पष्ट शुक्र से भौम को घटाकर लग्न जोड़े और पूर्वोक्त पद्धति से एक राशि का संस्कार करे; श्रद्धा सहम स्पष्ट होगा। यहां श्रद्धा से तात्पर्य आस्तिक बुद्धि से है।

२९. **प्रीति सहम**—स्पष्ट 'विद्या' सहम में से 'पुण्य' सहम को घटाकर लग्न जोड़े तथा शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न हो तब एक राशि युक्त करें। प्रीति सहम स्पष्ट होगा। प्रीति से तात्पर्य प्रेम है।

३०. **जाड्य सहम**—दिन का वर्ष प्रवेश हो तो, स्पष्ट भौम में से शनि तथा रात्रि का वर्ष-प्रवेश हो तो स्पष्ट शनि से भौम को घटाकर बुध को जोड़ दे। यदि बुध शोध्य-शोधक के मध्य में न हो तो पुनः एक राशि युक्त करे। इस प्रकार जाड्य सहम स्पष्ट होगा। 'जाड्य' से तात्पर्य मूर्खता से है।

३१. **दरिद्रता सहम**—दिन के वर्ष-प्रवेश में पुण्य सहम में से बुध को घटाये तथा रात्रि के वर्ष-प्रवेश में स्पष्ट बुध से पुण्य सहम को हीन करे और बुध को ही जोड़ दे। शोध्य-शोधक के मध्य बुध राशि न हो तब एक राशि युक्त करने पर 'दरिद्रता' सहम होता है।

३२. **ऋण सहम**—स्पष्ट शनि में से स्पष्ट शुक्र घटाकर लग्न जोड़े और एक राशि के योग का संस्कार कर 'ऋण' सहम स्पष्ट कर लें।

३३. **पानीय पतन सहम**—दिन के वर्ष-प्रवेश में स्पष्ट शनि में से स्पष्ट चन्द्रमा तथा रात्रि वर्ष-प्रवेश में स्पष्ट चन्द्रमा से शनि को हीन कर एक राशि के जोड़ने के लिए संस्कार करें। इस प्रकार 'पानीय पात' सहम होता है। पानीय पात से तात्पर्य जल में गिरने से है।

३४. **जल-पथ सहम**—दिन में कर्कार्ध राशि (३।१५।००) में से स्पष्ट शनि को तथा रात में स्पष्ट शनि से ३।१५।०० को घटाकर लग्न जोड़े तथा शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न होने पर एक राशि युक्त कर दे। इस प्रकार 'जल पथ' सहम स्पष्ट होगा। जल पथ से

तात्पर्य समुद्रयात्रा से है।

३५. **शत्रु सहम**—शत्रु सहम पूर्वोक्त जाड्य सहम का बिल्कुल विपरीत है। दिन के वर्ष-प्रवेश में स्पष्ट मंगल में से स्पष्ट शनि को तथा रात्रि में शनि में से भौम को घटाकर लग्न जोड़ दे और एक राशि का संस्कार करे। इस प्रकार शत्रु सहम स्पष्ट होगा।

३६. **मोटर सहम**—मोटर सहम का शास्त्रीय नाम 'गज' सहम है। समय के प्रभाव से हाथियों का स्थान मोटरों ने ले लिया है। स्पष्ट चन्द्रमा में से स्पष्ट गुरु हीन कर लग्न जोड़े तथा एक राशि योग का संस्कार कर 'गज' सहम स्पष्ट करें।

३७. **बंधन सहम**—दिवस के वर्ष-प्रवेश में पुण्य सहम में से स्पष्ट शनि तथा रात्रि-वर्ष-प्रवेश में से स्पष्ट शनि में से पुण्य सहम घटाकर एकादश भाव के राश्यादि युक्त करे तथा शोध्य-शोधक के मध्य एकादश भाव न हो तब एक राशि युक्त कर दे। इस प्रकार 'बंधन' सहम स्पष्ट होता है।

३८. **मन्मथ सहम**—दिन के वर्ष-प्रवेश में स्पष्ट चन्द्रमा में से वर्ष लग्नेश को तथा रात्रि-वर्ष-प्रवेश में लग्नेश में से स्पष्ट चन्द्रमा को हीन कर लग्न जोड़े तथा शोध्य-शोधक के मध्य लग्न न हो तब एक राशि युक्त करने पर मन्मथ सहम स्पष्ट होता है।

विशेष—यहाँ पर यदि वर्षेश्वर चन्द्र हो तो उक्त क्रिया सूर्य द्वारा करनी चाहिए।

सहम फल विवेचन

१. जो सहम जन्मकाल में शुभ ग्रह से युक्त, शुभ राशि में अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट होता है, वही यदि वर्ष में भी उन्हीं शुभ राशियों और लक्षणों से युक्त हों तो निश्चय ही वर्ष में उस सहम की वृद्धि, सुख और फल-प्राप्ति होती है।

२. ज्योतिषी को व्यक्ति के पद, जीवन, व्यवसाय और उम्र के आधार पर सहमों का महत्व निश्चित करना चाहिए। उदाहरण

के लिए एक व्यापारी व्यक्ति के वर्ष में व्यापार सहम पर विशेष ध्यान देना चाहिए। राजकीय नौकरी करने वाले व्यक्तियों के वर्ष में 'राज सहम' का अध्ययन किया जाना चाहिये। इससे उनकी पदोन्नति आदि की जानकारी भी हो सकेगी। पितृहीन व्यक्ति के वर्ष में तात सहम लगाना, भाई हीन के लिए भ्रातृ सहम और मातृ हीन के लिए मातृ-सहम स्पष्ट करना अनावश्यक है।

३. सहमों के फल के विवेचन में उनके बलाबल का विशेष महत्व है। जिस सहम पर उसके स्वामी की दृष्टि हो या शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा जो सहम अपने स्वामी से युक्त हो या शुभ ग्रहों के बीच में हों या उसके पास शुभ ग्रह बैठें हों या उसका स्वामी बलवान् हो,—ऐसी स्थिति वाला सहम बलवान् होता है। इससे विपरीत अर्थात् पाप ग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त अपने स्वामी की निर्बलता से निर्बल होता है।

४. जो सहम अष्टमेश के पास हो या किसी ऐसे ग्रह से जो क्रूर पापी हो, इत्थशाल करे, तो उस सहम का सुख वर्ष में नहीं मिलता।

५. जो सहम ६।८।१२वें भाव के स्वामियों के साथ हो या जिसका स्वामी इन भावों में बैठा हो वह वर्ष में क्लेश और अरिष्ट देता है। शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होने पर अशुभ फल में कमी आ जाती है।

६. कई वर्ष-पत्रों में देखा गया है कि राज्य और सवारी सहमों के बलवान् होने पर भी उन व्यक्तियों को इनका फल नहीं मिलता। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि उन सहमों की जन्मकालीन स्थिति बहुत निर्बल है। अतः इस नियम को भी अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

७. नये और पुराने सभी ताजक ग्रन्थों में सहमों का फल लिखते समय सबसे अधिक प्रशंसा पुण्य सहम की की गई है। लिखा

है कि 'जिस वर्ष के पुण्य सहम वलवान् हों वह वर्ष शुभदायी और उत्तम व्यतीत होता है। जिस वर्ष पुण्य सहम की स्थिति खराब होती है वह वर्ष भी शुभ व्यतीत नहीं होता इसलिए पुण्य सहम का विचार मुख्य है। पुण्य सहम के वलवान् होने से धर्म की सिद्धि और धनागम होता है। यदि पुण्य सहम वलवान् हो तो कई प्रकार से शुभ फल करता है। पुण्य सहम के बलवान् होने से ही द्रव्य का उपाय हो सकता है, अन्यथा नहीं।"

यदि जन्मकाल में पुण्य सहम खराब घर में हो और वर्ष में क्रूर ग्रह से युक्त हो तो पुण्य सहम सुख और धन का नाश करने वाला होता है। निर्बली पुण्य सहम भी इसी प्रकार अशुभ फल प्रदान करता है।

८. कार्य सिद्धि-सहम शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो या शुभ ग्रह के सामने हो तो कार्य और संग्राम में सुगमता से विजय होती है। यदि शुभ परन्तु पाप से युक्त दृष्ट हो तो कष्ट से विजय प्राप्त होती है। यही विचार विवाह आदि सहमों में करना और समझना चाहिए।

९. यश-सहम पाप ग्रहों से युक्त होकर अथवा उनसे दृष्ट होकर अपने स्वामी की दृष्टि से भी रहित हो तो वर्ष में अपयश की प्राप्ति और बदनामी करता है। शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर वर्ष में नेकनामी और सुयश की प्राप्ति होती है। यदि मिश्रित स्थिति हो तो फल विचार भी मिश्रित समझना चाहिए।

यश-सहम का स्वामी यदि शुभ ग्रहों से इत्थशाल करता हो तो मुकदमे या लड़ाई में विजय, फतह, धर्म और धन को देता है। पापियों से इत्थशाल करने से हार और नुकसान होता है।

१०. मित्र सहम को उसका स्वामी देखता हो, शुभ ग्रह भी देखते हों या उसके साथ हों तो वर्ष में भांति-भांति के वास्तविक मित्र और प्रेमी लोग मिलते हैं। विपरीत होने से नाना प्रकार के शत्रु उत्पन्न होते हैं।

११. यदि आशा सहम शुभ ग्रहों से युक्त हो और स्वामी ६।८।१२वें भावों में नहीं बैठा हो तो वर्ष में मनवांछित फल की प्राप्ति होती है। पाप ग्रहों से युक्त होने या ६।८।१२वें भावों में जाने से वर्ष में व्यक्ति हिम्मत हार जाता है या उसकी आशाएं टूट जाती हैं।

१२. भ्रातृ-सहम शुभ ग्रहों से आक्रांत हो और अपने स्वामी की दृष्टि से युक्त हो तो वर्ष भर भाइयों से अच्छा मेल मिलाप रहता है। यदि भ्रातृ सहम का स्वामी नष्ट बली होकर ६।८।१२वें घर में हो और सहम भी अनिष्ट स्थान में हो या पापी ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो भाई का नाश करता है। यदि शुभस्थान में हो, स्वामी बली हो, उदित हो तो, शुभस्थान प्राप्त हो तो वर्ष में भाई का पैदा होना समझना चाहिए।

१३. विवाह सहम का सप्तम या शुभ स्थान में जाकर शुभ ग्रहों से युत व दृष्ट होना, सप्तमेश, सहमेश का लग्नेश से मित्र दृष्टि से इत्थशाल योग होना विवाह कराता है अथवा स्त्री-सुख देता है। अन्यथा विवाह और स्त्री-सुख में कई प्रकार की बाधाएँ आती हैं; धन हानि होती है।

१४. पुत्र-सहम का शुभ स्थानों में स्थित होकर शुभ ग्रह, लग्नेश या बृहस्पति से इत्थशाल करना शुभ है। वर्ष में पुत्र का जन्म अवश्य होता है। यहां जन्मपत्र के कुयोगों का विचार अवश्य कर लेना चाहिये। यदि पुत्र सहम पाप युक्त, पाप दृष्ट या पाप स्थानों में स्थित हो तो गर्भस्राव, पुत्र कष्ट आदि नेष्ट फल देता है।

१५. पितृ-सहम शुभ ग्रह व अपने स्वामी से युक्त दृष्ट हो और शुभ ग्रह से इत्थशाली हो तो पितृ सम्बन्ध से धन, मान और सुख की वर्ष में प्राप्ति होती है। यदि पितृ सहमेश अस्त इत्यादि हो, निर्बल हो या लग्न से अष्टम हो या पाप ग्रहों से घिरा हुआ हो तो पितृ सम्बन्ध में फल विपरीत होता है। यदि यह योग चर राशि में हो तो पिता की मृत्यु परदेश में हो सकती है। स्थिर राशि होने पर

देश में ही मृत्यु की संभावना जाननी चाहिये।

१६. जब पितृ सहम अपने स्वामी से व शुभ ग्रह से इत्थशाल करता हो और पाप ग्रहों से भी युक्त हो तो वर्ष के पूर्वार्द्ध में रोग-वृद्धि और उत्तरार्द्ध में सुख देता है। जब पितृसहम का स्वामी पूर्ण बलवान् होकर शुभ स्थानों में हो तो राजा से मान और यश की प्राप्ति होती है। पद में वृद्धि होती है। इसी प्रकार से फल विचार मातृ सहम में समझना चाहिये।

१७. धन सहम अथवा इसका स्वामी शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो धन की प्राप्ति और सुख देता है। विपरीत योग में विपरीत फल देता है। यदि शत्रु ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो शत्रु सम्बन्धी कर्म से धन-नाश होता है। यदि मिश्रित ग्रहों से युक्त दृष्ट हो और अशुभ ग्रहों के साथ इत्थशाली भी हो तो पहला जमा धन नष्ट हो जाता है और व्यक्ति पुनः अपने पुरुषार्थ से धन संग्रह करता है। यदि केवल पाप-योग-दृष्टि हो तो धन का खर्च व निकास होता है। यदि शत्रु-दृष्टि हो तो शत्रु से भय व चोर इत्यादि के सम्बन्ध में धन-नाश होता है। यदि मित्र दृष्टि हो तो मित्र द्वारा धन-लाभ और सुख प्राप्त होता है।

१८. यदि कर्म सहम, कर्म सहमेश, कर्मभाव और कर्म भावेश— ये चारों शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हों और इत्थशाल करते हों तो वर्ष में निश्चय ही सोना, चाँदी, जमीन, जायदाद इत्यादि का लाभ होता है। यदि इसके विपरीत स्थिति हो तो फल भी विपरीत समझना चाहिए। यदि शनि से युक्त दृष्ट हो तो कर्म का विशेष नाश होता है। अन्य पाप ग्रहों के योग से भी यही फल समझना चाहिए।

१९. व्यापार सहम का शुभ स्थान में जाना, लग्नेश, सहमेश का इत्थशाली होना शुभ ग्रहों से दृष्ट होना वर्ष में व्यापार में अधिक उन्नति कराता है। जिस कार्य में प्रयत्न किया जाएगा उसी में सरलता से सफलता और लाभ मिलता है। इसके विपरीत यदि व्यापार-सहम

निर्बल हो या पाप ग्रहों से देखा जाता हो तो वर्ष में व्यापार से धन-हानि कराता है।

२०. 'पानीय पात' सहम का पाप स्थान में पाप युत दृष्ट होकर लग्नेश से इत्थशाली होना जल से भय उत्पन्न करता है। अन्यथा शुभ युत या शुभ दृष्ट होना उस वर्ष में जल से भय नहीं करता।

२१. यात्रा स्थान (७, ९) में जल पथ सहम का स्वामी स्थित हो, शुभ ग्रहों के साथ हो या उनसे देखा जाता हो तो शुभ विदेश यात्रा होती है। इस यात्रा में धन और मानसिक सुख प्राप्त होता है। यदि जल-पथ सहम की स्थिति विपरीत हो तो इच्छित यात्राएं नहीं होतीं; उनमें बाधायें आती हैं और कष्ट होता है।

२२. 'देशान्तर सहम' का शुभ स्थान में जाना, शुभ ग्रह से युत व दृष्ट होना, सहमेश व लग्नेश से इत्थशाल करना, दूर देश भ्रमण, तीर्थ यात्रा आदि कराकर प्रतिष्ठा व सुख देता है। अन्यथा, पाप युत व दृष्ट होना अनिच्छित यात्रा कराकर हानि व अपयश देता है।

२३. 'निधि सहम' के लिए सबसे पहले जन्मपत्र में निधि-प्राप्ति का योग देखे। यदि जन्मकुण्डली में निधि-प्राप्ति का योग स्पष्ट हो और वर्ष पत्र में निधि सहम २, ३, ९, ११ वें भावों में अपने स्वामी या शुभ ग्रहों से युत दृष्ट हो, लग्नेश से इत्थशाल करता हो तब वर्ष में निश्चय ही निधि प्राप्त होती है।

२४. 'श्रद्धा सहम' का शुभ स्थान में स्वामी या शुभ ग्रह से युक्त व दृष्ट होना तथा लग्नेश से इत्थशाल योग करना श्रद्धा तथा भक्ति को बढ़ाकर गुरुजनों एवं ईश्वर में प्रेम उत्पन्न करता है। धार्मिक भावनाएं जागृत होती हैं। विपरीत स्थिति में नास्तिकता, धर्म, ईश्वर तथा महात्माओं से घृणा उत्पन्न करा व्यक्ति को कुवासनाओं में प्रवृत्त कराता है।

२५. 'प्रीति सहम' का बलवान् होना, सहम-सहमेश का वर्ष लग्नेश से इत्थशाली होना, प्रेम भाव, बड़ों में भक्ति, आनन्द, हर्ष,

तथा सुखी बनाता है; नवीन मित्रों का लाभ होता है। अन्यथा, सहम के निर्बल होने पर वही सहम मित्र-विरोध, अशांति तथा व्याधियाँ उत्पन्न कराता है।

२६. यदि 'परदारा सहम' का स्वामी शुभ ग्रहों से युक्त हो, शुभ भावों में स्थित हो, सप्तमेश के साथ हो या दृष्ट हो, सप्तमेश से इत्थशाल करता हो तो वर्ष में पर-स्त्री-सुख देता है। यदि परदारा सहम निर्बल हो तो वर्ष में अवश्य ही पर-स्त्री द्वारा अपयश व धन हानि कराता है।

२७. 'मन्मथ (काम) सहम' का स्वामी या वह सहम शुभ युत दृष्ट हो तथा इत्थशाली हो तब काम शक्ति को बढ़ाता अवश्य है किन्तु कुमार्गगामी नहीं बनाता और यदि पाप युत व दृष्ट हो तथा पापस्थान या सप्तम भाव में हो तब वेश्यागामी, कुमार्गी, बनाकर अनेक रोगों से पीड़ित करता है।

२८. 'रोग सहमेश' यदि पाप ग्रह हो या पाप ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो रोग की वृद्धि करता है। यदि लग्न से अष्टम भाव के स्वामी के साथ इत्थशाल भी हो तो मृत्यु को देने वाला होता है। यदि हीन बली हो तो अति कष्ट से मृत्यु देता है। यदि बलवान् हो तो थोड़े कष्ट से मृत्यु होती है। मृत्यु की बात बताते समय जातक की जन्मकुण्डली का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। **ध्यान रहे—मृत्यु के लिए मारकेश की दशा अन्तर्दशा होना आवश्यक है।**

२९. 'रोग सहम' अपने स्वामी या शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो और छठे, आठवें, बारहवें घर में न हो तो रोग की शांति होगी, सुख रहेगा। यदि शुभ पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो थोड़ा रोग का भय होगा। यदि इस सहम का स्वामी बली होकर शुभ ग्रह के सामने हो तो वाहनादि की प्राप्ति भी होती है।

३०. 'गज सहम' (मोटर सहम) का सुख-भाव में, केन्द्र तथा त्रिकोण में स्वामी, शुभ ग्रह से युत व दृष्ट होना व लग्नेश सहमेश

का इत्थशाल होना मोटर आदि वाहन का लाभ कराता है। परन्तु इसके लिए **जन्म कुण्डली में वाहन सुख का स्पष्ट योग होना चाहिये।**

३१. ऋण सहम का स्वामी शुभ ग्रह से युत व दृष्ट होना ऋण से मुक्त कराता है। पाप स्थान में पाप युत व दृष्ट होना ऋण को बढ़ाता है।

३२. बंधन सहम का स्वामी, लग्नेश व पाप युत दृष्ट होना उसे बलवान् बनाता है। ऐसा होना राज दण्ड का भय उत्पन्न करता है। शुभ ग्रह से युत व दृष्ट होना राजभय उत्पन्न होनें पर भी उससे रक्षा कर लेता है।

३३. 'दरिद्र सहम' का बलवान् होना, पाप युत, पाप स्थान के स्वामी से दृष्ट होना, दरिद्रता, धन नाश, कष्ट आदि देता है किन्तु इसका निर्बली होना कल्याणकारक है।

सहम किस समय फल देते हैं ?—(१) सहमेश की दशा में सहम अपनी स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल देता है। उदाहरण के लिए शुभ फलदायी पुत्र सहमेश की दशा में पुत्र-जन्म का सुख हो सकता है।

(२) जो सहम पाप ग्रह इत्यादि से युक्त अथवा दृष्ट आदि हो, वह वर्ष के प्रथम अर्द्ध भाग में अपना अशुभ फल देता है।

(३) जो सहम शुभ स्थानों में बैठा हो, शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो, वह, वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपना शुभ फल देता है।

(४) जिस सहम के फल का उदय ज्ञात करना हो उस स्पष्ट सहम में उसके स्पष्ट स्वामी को घटावें। राशियों के अंश का शेषांक जोड़ अपने उदय की पलों से गुणा करें, ३०० का भाग दें जो लब्धि प्राप्त हो, उतने दिन बाद, वर्ष प्रवेश से उस सहम का फल मिलेगा।

(५) आचार्य यादव का मत है कि सहम और उसके स्वामी का अन्तर करके राश्यादिक अन्तर में राश्यादिक सूर्य को जोड़ देना चाहिए। उस जोड़ संख्या के तुल्य संक्रांति में उस सहम का फल जानें। **हमारे अनुभव से इनमें से चतुर्थ अंक वाला नियम विशेष उपयोगी है।**

: ६ :

भाव फल विचार

भावस्थ ग्रहों का फल : अरिष्ट विचार : अरिष्ट भंग : क्या इस वर्ष स्थानान्तरण होगा ? धन-प्राप्ति-विचार : धन-हानि के योग : भ्रातृ-सुख योग : भ्रातृ-कष्ट के विशेष योगः वर्ष में जमीन-जायदाद की प्राप्ति : क्या इस वर्ष गड़ा धन प्राप्त होगा ? मातृ-पितृ-सुख विचार : पुत्र प्राप्ति : कन्या उत्पत्ति योग : परीक्षा में सफलता-असफलता : स्त्री-कष्ट के विशेष योगः यात्रा सम्बन्धी विभिन्न बातें: क्या इस वर्ष नौकरी मिलेगी ? : क्या इस वर्ष तरक्की होगी ? वर्ष में लाभ किस प्रकार होगा ? वर्ष में व्यय किस प्रकार होगा ?

प्रथम भाव विचार

प्रथम भाव से जिसको तनु, उदय, मूर्ति और लग्न आदि नामों से पुकारते हैं शरीर-सुख, आयु, जाति, आरोग्य लक्षण, क्लेश, रूप और वर्ण का विचार किया जाता है।

सामान्यतया लग्न का स्वामी लग्न में हो अथवा लग्न में शुभ ग्रह बैठे हों तथा शुभ ग्रहों की लग्न पर दृष्टि हो तो शरीर-सुख, आदर-सम्मान, भानजे के विवाह आदि उत्सवों से हर्ष और सब प्रकार का सुख मिलता है।

१. **सूर्य**—लग्न में सूर्य के होने से वर्ष के प्रारम्भ में ही गले में रोग, स्त्री को विशेष पीड़ा, मानसिक चिंता और घबराहट, शिर और आँखों में दर्द रहता है। इसके अतिरिक्त विचारों में परिवर्तन और सफर भी प्रायः लग्नस्थ सूर्य कराता है।

२. चन्द्रमा—लग्न में चन्द्रमा श्वास-खाँसी की तकलीफ विशेष रूप से देता है। प्राय: कफ रोग से व्यक्ति वर्ष भर पीड़ित रहता है। शुभ ग्रहों की दृष्टि होने पर नृत्य, गायन और विलास-कार्यों में विशेष धन व्यय होता है।

३. मंगल—सिर में दर्द, मुंह में छाले, घर में कलह, धन का नुकसान और रक्त पित्त का प्रकोप लग्नस्थ मंगल करता है। इसके अतिरिक्त व्रण-घाव, स्त्री कष्ट, राज-भय और लोह अग्नि से दुर्घटना भी लग्नस्थ मंगल कराते देखा गया है।

४. बुध—लग्नस्थ बलवान् बुध सदैव शुभ फल करता है। शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार, मानसिक प्रसन्नता, शत्रुओं पर विजय, नये शुभकारी व्यापार का प्रारम्भ, नये मित्र और सम्पत्ति प्राप्त होती है।

५. बृहस्पति—शरीर में आरोग्य, स्त्री और पुत्रों से विशेष सुख, उत्तम बुद्धि का विकास, कृषि कर्म वालों के लिए अच्छी फसल, नौकरी का सुख, मान और सन्मान की प्राप्ति, लग्नस्थ बृहस्पति से होती है।

६. शुक्र—लग्न में शुक्र हो तो मान-प्रतिष्ठा बढ़े, धन का लाभ, शत्रु का नाश, राज्य से सुख, जय, कुटुम्ब की वृद्धि और भूषण आदि सामग्रियों का लाभ होता है।

७. शनि—अपनी राशि अथवा उच्च का शनि लग्न में हो तो पुत्र का लाभ होता है। इसके अतिरिक्त अन्य राशियों का शनि शत्रु-भय, शरीर पीड़ा, बात विकार से दर्द, स्त्री को कष्ट और मित्रों से शत्रुता करवाता है।

८. राहु—राहु लग्न में हो तो स्त्री को पीड़ा, शत्रु का भय, चिंता, खर्च अधिक, शिर में दर्द, राजा से भय, मान भंग और नेत्र-रोग होता है।

९. केतु—लग्न में केतु हो तो, चोर का भय, रोग की वृद्धि,

जमीन-जाययाद और मित्रों से परेशानी, अपमान, झगड़ा और गरीबी प्रदान करता है।

अरिष्ट विचार—(१) वर्षकुण्डली में लग्नेश अष्टम में हो और मंगल देखता हो अथवा लग्नेश+अष्टमेश लग्न में हो और मंगल की दृष्टि हो तो शस्त्र से चोट व ज्वरादि से पीड़ा होती है।

२. सूर्य के साथ वर्ष लग्नेश बैठा हो और मुन्थेश को शनि देखता हो तो वर्ष में विशेष कष्ट होता है।

३. सूर्य+चन्द्रमा का छठे, आठवें या बारहवें भाव में होना प्रायः अरिष्टदायक है।

४. लग्नेश और मुन्थेश दोनों अस्त हों, शनि की दृष्टि हो तब स्त्री, पुत्र व धन का नाश होता है व शरीर पीड़ा बनी रहती है। यदि मारकेश की दशा-अन्तर्दशा हो तो अवश्य इसी वर्ष में मृत्यु हो जाती है।

५. वर्ष लग्न जातक के जन्म लग्न से अष्टम हो तो उस वर्ष में विशेष कष्ट भोगना पड़ता है।

६. लग्नेश और षष्ठेश का इत्थशाल अथवा व्ययेश और लग्नेश का इत्थशाल कष्टकारक है।

७. जन्म लग्नपति, वर्ष लग्नपति और मुन्थापति ये तीनों चौथे छठवें, आठवें या बारहवें भाव में एक ही राशि में हो, शुभ ग्रहों की दृष्टि नहीं हो और पाप ग्रहों से देखे जाते हों तो उस वर्ष निश्चय ही मृत्यु होती है।

८. अष्टमेश सूर्य से अस्त हो, लग्नेश नीच स्थान में गया हो और मुन्था भी अशुभ हो तो वर्ष में विशेष शरीर-पीड़ा अथवा मृत्यु होती है।

९. यदि अष्टमेश धन भाव में हो और बारहवें भाव का स्वामी अष्टम में गया हो तथा लग्नेश निर्बल हो तो उस वर्ष सर्प काटने से मृत्यु होती है।

१०. लग्न में मंगल पाप युक्त और चन्द्रमा पुत्र स्थान (पंचम भाव) में हो, लग्नेश अष्टम में हो, शनि क्रूर ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो उस वर्ष विजली से मृत्यु होती है।

११. यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह और अष्टम में शुक्र+चन्द्रमा हो तो उस वर्ष रोग से मृत्यु होने की सम्भावना रहती है।

१२. लग्न में चन्द्रमा हो और कोई भी पापी ग्रह अकेला आठवें घर में हो, पाप ग्रहों की उस पर दृष्टि हो तो उस वर्ष निश्चय ही मनुष्य का निधन होता है।

१३. पापी ग्रहों से लग्न या सप्तम का घिरा रहना भी अशुभ है। निश्चय ही अरिष्ट होता है।

'ताजिक मुक्तावली' का विशेष विचार—'ताजिक मुक्तावली' में लिखा है कि छठे-आठवें या चौथे भाव में मुन्था पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, मुन्थेश भी इसी भांति स्थित होकर अस्त हो, वर्षेश छठे या बारहवें भाव में हो, लग्नेश अस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें भाव में गया हो, सामान्यतः और ग्रह भी अष्टम स्थान में हों, त्रिपताकी चक्र में चन्द्रमा पापग्रहों से विद्ध हो, जन्म लग्नेश आठवें हों, जन्म लग्नेश-वर्षेश-वर्ष लग्नपति, मुन्थेश और अष्टमेश निर्बल हो तो ये सारे योग अरिष्ट करने वाले हैं।

हमारा अनुभव—हमारा यह विशेष अनुभव है कि ताजिक मुक्तावली के उक्त अरिष्ट योग प्रायः सही निकलते हैं। इन योगों में शरीर कष्ट तो अवश्य ही रहता है, मृत्यु के लिए जन्मकुण्डली की दशा अन्तर्दशा का अध्ययन करना चाहिए। वर्षफल में रुचि रखने वाले प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी को उन्हें सदैव याद रखना चाहिए।

अरिष्ट भंग विचार—(१) बृहस्पति का केन्द्र तथा त्रिकोण में पाप ग्रहों की युति व दृष्टि से रहित होकर शुभ युत अथवा दृष्ट होना अरिष्टनाशक होता है।

२. लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में होना अरिष्ट-नाशक है।

३. बलवान् द्वितीयेश-नवमेश लग्न में पाप युत दृष्ट न हों तो सवारी, वस्त्र, आभूषण, राज-सुख और यश मिलता है और सम्पूर्ण अरिष्ट भंग होते हैं।

४. पाप-ग्रह तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव में हो तथा शुभ ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तब अरिष्ट नष्ट होकर विविध शुभ फल होते हैं।

५. जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश और मुन्थेश का बलवान् होकर केन्द्र-त्रिकोण में और द्वितीय-एकादश में जाना धन, वस्त्र, सुवर्ण-सुख की प्राप्ति कराता है।

६. त्रिराशिपति दसवें स्थान में पड़ा हो और दशमेश त्रिकोण में पड़ा हो तो अरिष्ट-नाशक योग होता है।

७. अष्टमेश अथवा षष्ठेश क्रूर ग्रह से युक्त होकर द्वादश भाव में हो अथवा शनि से युक्त हो तो भी अरिष्ट-नाशक योग होता है।

८. यदि बृहस्पति—बुध, चन्द्रमा अथवा शुक्र इनमें से एक भी बलवान् ग्रह केन्द्र में हो, सौम्य ग्रह के साथ हो, नीच के न हों अस्त न हो गये हों, तो सम्पूर्ण अरिष्टों को, निश्चय ही, दूर करते हैं।

९. चन्द्र राशि पति और वर्ष लग्नपति यदि दोनों पाप ग्रहों की दृष्टि और युति से रहित हों तो अरिष्ट उसी प्रकार दूर होता है जिस प्रकार उत्तम औषधियों से रोग दूर होता है।

१०. यदि मकर, कुम्भ और मीन राशियों का होता हुआ केतु तीसरे, छठे या ग्यारहवें घर हो तो प्रबल अरिष्ट-नाशक है।

११. तीसरे राहु और छठे भाव में बुध रोग और शत्रु कष्ट को सरलता से निश्चय ही दूर करते हैं।

१२. 'ताजिकलता' के अनुसार जो ग्रह जन्मकाल में नीच राशि में गया हो वही वर्ष में अगर आठवें घर में स्थित हो तो

अरिष्ट दूर कर शुभ फलदायी है।

१३. पणफरस्थ बृहस्पति अगर केन्द्र में स्थित शुक्र द्वारा देखा जाता हो तो सारे अरिष्टों को दूर करता है।

१४. यदि शुभग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट तृतीयेश अपने घर में हो तो सब प्रकार के घरेलू दुःखों को दूर करता है।

१५. दशम भाव का स्वामी अपने ही घर में हो और धनेश पांचवें भाव में गया हो तो धन-धान्य का विशेष लाभ और अरिष्ट को दूर करता है।

१६. जन्म लग्नेश वर्षकुण्डली सौम्य ग्रह से युक्त हों और मुन्थापति तीसरे हो तो उस वर्ष मनुष्य के सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

प्रथम भाव के विशेष योग—जीर्ण जातक में लिखा है कि यदि लग्नेश लग्न को उच्च अथवा स्वक्षेत्रादि में बैठ कर देखे और अन्य ग्रह भी लग्न को देखते हों तो बड़े भारी भाग्य को उदय करने वाला सार्वभौम योग बनता है। हमारे विचार से यह योग अपने फल में पूरा-पूरा सही उतरना चाहिए।

२. यदि वर्षकुण्डली में जन्मराशि का स्वामी भी बलवान् हो तो भाग्योदय कराने में सहायक होता है।

३. यदि जन्मकुण्डली में वर्ष का वर्षेश और लग्नेश बलवान् हों और वर्षकुण्डली में हीन बली हों तो वर्ष लगते ही छः महीने शुभ-फल देते हैं और बाद के छः माह खराब व्यतीत होते हैं।

४ लग्नेश सातवें और सप्तमेश लग्न में हो तो वर्ष में सम्पूर्ण कार्य अच्छे होते हैं। शनि+चन्द्रमा लग्न में हो तो कफ की बीमारी जोर पकड़ती है और वर्षभर स्त्री को कष्ट रहता है।

क्या इस वर्ष बदली होगी ?—आजकल स्वतंत्र व्यवसाय की अपेक्षा राजकीय नौकरी करने का विशेष प्रचलन है। नौकरी में आकस्मिक रूप से और अनचाही जगह भी बदली होती रहती है। राजकीय कर्मचारी वर्षफल बनाते ही पहला प्रश्न इसी बाबत पूछते हैं।

पाठकों की सुविधा और जानकारी के लिए इस विषय पर कतिपय योग प्रस्तुत हैं :—

१. यदि वर्षकुण्डली में लग्नेश व तृतीयेश, चतुर्थेश—नवमेश एक घर में हों या एक दूसरे को मित्रदृष्टि से देखते हों तो बदली होगी।

२. यदि चन्द्रमा वक्री ग्रह से मित्र दृष्टि रखता हो तो बदली होती है।

३. दूसरे व चौथे भाव में पापी ग्रह हों तो बदली होती है।

४. यदि लग्न चर और लग्नेश भी चर राशि में गया हो तो उस वर्ष निश्चय ही स्थानान्तरण होगा।

५. यदि लग्नेश व चन्द्रमा दोनों नवम भाव में हों तो मनचाहे स्थान पर बदली होती है। **हमारे विशेष अनुभव के अनुसार यदि नवम भाव चर राशि में गया हो तो यह योग शतप्रतिशत लागू होता है।**

विशेष—यदि तबदीली योग के साथ वर्ष लग्न चर हो तो शीघ्र, स्थिर हो तो देरी से, और द्विस्वभाव हो तो, बदली होकर वापिस रद्द हो जाती है।

यदि स्थानान्तरण योग के साथ चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हो तो ऐसी बदली में खुशी प्राप्त होती है। यदि लग्नेश वक्री हो तो जाकर वापिस आना पड़ता है।

द्वितीय भाव विचार

द्वितीय भाव को पणफर और धन भाव भी कहते हैं। इस भाव से धन लाभ, हानि, जवाहरात, धातु और व्यापार में क्रय-विक्रय, मित्र, खानदान, विद्या आदि बातें विचारनी चाहियें। दाहिनी आंख और कुटुम्ब का सुख भी इसी भाव से देखा जाता है।

सामान्यतया यदि दूसरे भाव का स्वामी अपने घर में हो या अपने घर को देखता हो अथवा शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो धन और कुटुम्ब का सुख अच्छा मिलता है। इसी प्रकार पाप ग्रहों की युति-

दृष्टि से अशुभ फल और मिश्रित योग में मिश्रित फल समझना चाहिये।

भावस्थ ग्रहों का फल—सूर्य दूसरे घर में हो तो कुटुम्ब में लड़ाई, राजा-अग्नि और शत्रु से भय, चोरों का डर, झगड़े और धन का नुकसान करता है। परन्तु शुभग्रहों के साथ सूर्य हो तो विशेष धन का लाभ देता है।

चन्द्रमा दूसरे घर में बैठा हो तो अपने मनपसंद स्थान की यात्रा का सुख, आनन्द, शरीर का आरोग्य, सफेद वस्तु के व्यापार से धन की प्राप्ति और बंधु-मित्र पक्ष से जय-लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शत्रुनाश, नेत्र रोग और राजकीय अधिकारियों से सुख भी द्वितीयस्थ चन्द्रमा देता है।

मंगल के दूसरे घर में रहने से चोर, अग्नि और राजा से डर होता है। धन का नाश, आंखों में दर्द और स्त्री को तकलीफ रहती है।

दूसरे बुध हो तो धन का लाभ, कुटुम्ब से जय, शत्रु का नाश, मान-सम्मान की वृद्धि, सुख और शरीर में सदैव (वर्ष भर) आरोग्य रहता है।

दूसरे बृहस्पति हो तो धन-अन्न-वस्त्र का लाभ, चौपायों का मिलना, जमीन-जायदाद और राज्य के अधिकारियों से लाभ होता है।

धन भाव में शुक्र जाये तो अन्न और धन का लाभ, विदेशियों सेसुख और धन प्राप्ति, पशु आदि चौपायों का सुख, हर एक से मित्रता, स्त्री के सौन्दर्य में वृद्धि तथा दुश्मनों की कमी होती है।

दूसरे भाव में शनि के बैठने से मुंह और आँखों में तकलीफ, धन की हानि, स्त्री और पुत्र को पीड़ा, सम्बन्धियों से विरोध और राज्य से भय होता है।

राहु के धन में बैठने से रुपये का खर्चा, बीमारी, चिंता, अग्नि और चोर से तकलीफ और आंख में फूला पड़ जाने की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त पेट में दर्द, पुरुषों से अपवाद और राज्य से भय होता है।

केतु दूसरे हो तो बुद्धि का नाश, धन का अपव्यय, कार्यों में विघ्न होता है। प्रायः सम्पूर्ण वर्ष भर दुःख और शत्रुओं से परेशानियां सहनी पड़ती है।

धन-भाव के विशेष योग—'जीर्ण जातक' में लिखा है कि चन्द्रमा और लग्नेश धनेश से आगे चल रहे हों तो धन का लाभ, विपरीत होने से धन का क्षय होता है। यदि लग्नेश धन में (द्वितीय भाव) और धनेश सप्तम भाव में हो तो वर्ष में धन-प्राप्ति होती है। धन भवन में शुभ ग्रह बैठना लाभदायक है। लग्न में चर राशि हो और उस पर पाप ग्रह बैठे हों, धन का नुकसान होता है।

विशेष—जीर्णजातक का उपर्युक्त सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण और विचारणीय है।

इस विषय की विशेष जानकारी के लिए 'व्यवसाय का चुनाव' पुस्तक उपयोगी है।

धन प्राप्ति-विचार—बृहस्पति वर्षेश होकर बलवान् हो और जन्मकाल में दूसरे भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो अथवा उसमें बैठा हो तो वर्ष में विना मेहनत के ही खूब धन मिलता है।

२. जन्मकुण्डली में लग्न में बैठा हुआ सूर्य वर्षकुण्डली में दूसरे घर में होवे तो पर्याप्न धन-प्राप्ति होती है।

३. जन्मकुण्डली में षष्ठ भाव में गया हुआ बुध यदि वर्ष में द्वितीय हो तो धन-प्राप्ति करवाता है।

४. शुक्र वर्षेश होकर दूसरे भाव में हो और बुध की उस पर दृष्टि हो तो निश्चय ही खूब धन मिलता है।

५. मुन्था से पंचम स्थान में सूर्य व मंगल हो तो वर्ष में पर्याप्त धन-लाभ होता है।

धन हानि के योग—पापी ग्रह के साथ दूसरे घर में कोई नीच राशि का ग्रह बैठा हो तो वर्ष भर तरह-तरह से धन की चिंता रहती है।

२. लग्नेश आठवें घर में हो तथा अस्त होकर दसवें घर का

स्वामी छठे हो और साथ ही दूसरे घर का मालिक बारहवें बैठा हो, तो वर्ष में वह व्यक्ति निश्चय ही निर्धन हो जाता है। **यदि सम्पूर्ण योग बिना परिवर्तन के उपस्थित हो तो फल शतप्रतिशत अवश्य मिलता है।**

३. जन्मलग्न में स्थित शनि का वर्षकुण्डली में द्वितीय भाव में जाना धन-हानि कराता है।

४. गोचर का शनि जब वर्षकुण्डली में धन भाव को देखता है तब धन-हानि या व्यापार में नुकसान कराता है।

तृतीय भाव विचार

वर्षकुण्डली के तृतीय भाव को ओपोक्लिम और सहज भाव या भ्रातृ भाव भी कहते हैं। इस भाव से भाई-वहिन, नौकर, भतीजा उत्साह, पराक्रम, कानों की हालत और जंगल की जमीन आदि का विचार किया जाता है।

सामान्यतया शुभ ग्रह तीसरे भाव में हो तो उपर्युक्त विचारणीय वस्तुओं का सुख होता है। पाप ग्रहों की स्थिति और दृष्टि से दुःख समझना चाहिये।

भावस्थ ग्रहों का फल—राज्य से मान और लाभ, आरोग्य में वृद्धि, धन लाभ, शत्रुओं का नाश और पराक्रम में वृद्धि, तृतीयस्थ सूर्य के होने से होती है। इसके अतिरिक्त जो कार्य प्रारम्भ किये जायें वे पूरे होते हैं लेकिन भाइयों को पीड़ा रहती है।

चन्द्रमा के तीसरे जाने से भाई का सुख, धन प्राप्ति, पुण्य का उदय, सुख, प्रतिष्ठा और इज्जत बढ़ती है।

बंधुओं को पीड़ा, शत्रुओं का नाश, वाहनों की प्राप्ति, धन का लाभ एवं राज्य व मित्रों के पक्षपात से विजय मंगल के तृतीय भावस्थ होने से होती है।

वर्ष में बुध तीसरे भाव में स्थित हो तो सब कष्ट-ताप दूर हो, मान की वृद्धि, सुख का प्रकाश, पुत्र का सुख और धन की प्राप्ति

होती है। मतान्तर से तृतीयस्थ बुध नफा-नुकसान, सुख-दुःख, शत्रु-मित्र से मेल, एकसाथ करता है।

तीसरे भाव में स्थित बृहस्पति अल्प सुख और लाभ, मित्र और रिश्तेदारों से मुलाकात, सदा धर्म में बुद्धि का लगा रहना और यश की वृद्धि कराता है।

शुक्र तृतीयस्थ हो तो वह भाइयों का सुख अधिक, धन का अल्प लाभ, सामान्य चिंता और अपने आदमियों से झगड़े कराता है।

सब दुःखों से छुटकारा, राज्य से मान, धन की आमद और जमीन-जायदाद की प्राप्ति, तृतीयस्थ शनि करता है। कभी-कभी मित्र-सम्बन्धियों से विरोध कराते भी देखा गया है।

राज्य से मान, धन-लाभ, आरोग्य, सुख और मित्रों से मिलाप तीसरे राहु होने से होता है। इसके अतिरिक्त भाइयों को वर्ष में कष्ट भी हो।

तीसरे केतु धैर्य से शत्रु का नाश करता है, दानी हो, विलास कराये।

तृतीय भाव के विशेष योग : भ्रातृ-सुख योग—सूर्य या शुक्र वर्षेश होकर तीसरे हो तो भाइयों से मिलाप और शुभ ग्रहों की दृष्टि होने से पूरा सुख हो।

२. लग्नेश+वर्षेश+तृतीयेश एक ही राशि में हो और चन्द्रमा तीसरे भाव में गया हो तो भाइयों का वर्ष में सुख होता है।

३. जन्मकुण्डली का तृतीयेश वर्ष में तीसरे हो तो भाइयों से सुख देता है।

४. वर्षकुण्डली के तीसरे घर का मालिक बलवान् होकर केन्द्र में हो तो भाइयों का सुख होता है।

भ्रातृ-कष्ट के विशेष योग—वर्ष में निर्बल बृहस्पति तीसरे भाव में हो तो भाइयों में व्याकुलता रहती है।

२. लग्नेश और तृतीयेश परस्पर इशराफ करे तो पास में बसे

हुए भाइयों से भी जुदाई होती है।

३. चन्द्रमा+मंगल तीसरे हो तो भाइयों से क्लेश होता है।

४. तीसरे घर के स्वामी से सातवें वर्षेश हो अथवा लग्नेश हो तो भाइयों में लड़ाई होती है।

५. छठे घर के स्वामी तथा तीसरे के मालिक पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो भाइयों को बीमारी हो।

६. सूर्य अशुभ ग्रहों के साथ हो या उसे पापी ग्रह देखते हों अथवा वह नष्ट-बली हों तो भाइयों में क्लेश और दगाबाजी होती है।

७ तीसरे घर का मालिक छठे घर में हो और छठे भाव का स्वामी तीसरे घर में हो तो उस वर्ष भाइयों में परस्पर निश्चय ही खुलकर लड़ाई होती है।

८ वर्ष में शनि मंगल की राशि (मेष या वृश्चिक) में होकर तीसरे भाव में बैठा हो तो भाइयों को बीमार करता है।

चतुर्थ भाव विचार

चतुर्थ भाव से—जिसे केन्द्र, सुख और मातृ भाव भी कहते हैं सुख-दुख, गड़ा हुआ धन, कृषि-विचार, जमीन-जायदाद, सवारी, चौपाये पशुओं का सुख, विद्या व माता का विचार करना चाहिए।

सामान्यतया यदि भाव अपने स्वामी से युक्त हो अथवा उससे दृष्ट हो, शुभ ग्रहों की स्थिति हो अथवा दृष्टि हो तो फल शुभ होता है। इनसे विपरीत स्थिति में फल अशुभ होता है और पूर्वोक्त पदार्थों की हानि होती है।

भावस्थ ग्रहों का फल—चतुर्थ भाव में सूर्य हो तो पशुओं से कष्ट और हानि, राज्य की ओर से भय, शारीरिक और मानसिक दुःख, माता को पीड़ा, स्वयं के पेट में तकलीफ, धन-व्यय और मित्र-रिश्तेदारों से लड़ाई होती है।

चतुर्थस्थ चन्द्रमा से मित्र-स्त्री और बंधुओं का सुख, धन की

आमद, गाय-भैंस का सुख, खेती में लाभ, सुख की प्राप्ति और राज्य से मान होता है।

कष्टपूर्ण विदेश यात्रा, हृदय में दुःख, मित्रों का क्षय, कुटुम्ब में लड़ाई, कृषि कर्म में हानि, अग्नि से भय चतुर्थस्थ मंगल करता है।

मित्र, स्त्री और रिश्तेदारों का सुख, गाय, भैंस का सुख, धन की प्राप्ति, जमीन जायदाद का लाभ और सवारी का सुख, चतुर्थ भावस्थ बुध देता है।

चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति सवारी का सुख, मातृ-सुख, क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ, राज्य की सहायता से विजय, कृषि-कर्म में पर्याप्त लाभ और विद्या की प्राप्ति करता है।

मान और आरोग्य, मित्र और हितैषियों का सुख, विद्या-बुद्धि का लाभ और धन की प्राप्ति चतुर्थ भावस्थ शुक्र से होती है।

माता को तकलीफ. विदेश यात्रा, धन का क्षय, सवारी का नाश, राज्य पक्ष से पीड़ा और जमीन-जायदाद की परेशानियाँ चतुर्थ शनि से होती हैं।

घर के पशुओं का नाश, अपने ही आदमियों से लड़ाई, चिंता, दुःख, कष्टपूर्ण यात्रा और कफ-वायु की पीड़ा चतुर्थ राहु से होती है।

चौथे भाव में स्थित केतु पेट में दर्द, वायु विकार, माता को कष्ट, राज्य भय, अधिकारियों से अनबन और परेशानियाँ उत्पन्न करता है।

वर्ष में जमीन-जायदाद की प्राप्ति—यदि वर्ष लग्न का स्वामी लग्न को देखता हो या लग्न में ही बैठा हो, उसका मित्र ग्रह चौथे घर में हो तो वर्ष में जमीन-जायदाद की वृद्धि हो।

२. लग्नेश और चतुर्थेश का इत्थशाल हो और शुभग्रह उसके पास बैठें हों या उसे देखते हों तो घर और जमीन दिलवाते हैं।

३ चतुर्थेश चन्द्रमा होकर लग्न में हो या कर्कराशि चतुर्थभाव में गई हो और उसमें शुभ ग्रह बैठे हों या देखते हों तो मकान-खेत आदि में निश्चय ही वृद्धि होती है।

४ लग्नेश और चतुर्थेश स्वगृही हो या लग्नेश+चतुर्थेश लग्न में बैठे हों और चन्द्रमा या कोई अन्य शुभ ग्रह उनके पास हो तो घर-जमीन आदि दिलवाते हैं।

क्या इस वर्ष गड़ा धन प्राप्त होगा ?—'हायन सिंधु' में लिखा है, कि बृहस्पति और चन्द्रमा केन्द्र में हों या चौथे घर में बृहस्पति+शुक्र हो तो गड़े धन की प्राप्ति वर्ष में बड़े प्रयत्न करने से होती है।

चन्द्रमा, सूर्य, बृहस्पति और शुक्र इनमें से कोई भी एक अपने नवांशक में होकर वर्ष लग्न से चौथे बैठा हो तो निश्चय ही गड़े धन की प्राप्ति होती है।

इसमें रहस्य है, जातक को गड़ा हुआ धन तभी प्राप्त होता है जब जन्मकुण्डली में उसका स्पष्ट योग हो। केवल वर्षकुण्डली में गड़े धन की प्राप्ति का योग आ जाने मात्र से वह प्राप्त हो, इसमें संदेह है।

मातृ-पितृ-सुख-विचार १.—जन्मकालीन चतुर्थेश और वर्ष-कालीन चतुर्थेश बलवान् हो, या दशम भाव में स्थित हो या चतुर्थ भाव में ही हो तो निश्चय ही वर्ष भर मां-बाप का पूर्ण सुख रहता है।

२. यदि वर्षकुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा के साथ बृहस्पति अथवा शुक्र हो तो माता-पिता का सुख होता है।

३ जन्मकाल में जो राशि या ग्रह चौथे भाव में हो उसी राशि में अथवा ग्रह के साथ वर्ष में शनि या मंगल आ जाये तो मां-बाप को विशेष तकलीफ रहती है।

पंचम भाव विचार

पंचम भाव से जिसे सुत, त्रिकोण और पणफर भाव भी कहते हैं, संतान, विद्या-बुद्धि, नम्रता, गर्भधारण, नीति और मंत्र का विचार करना चाहिए।

'चण्डेश्वर' नें लिखा है कि यदि पंचम भाव में शुभ ग्रहों की स्थिति हो या दृष्टि हो तो उपर्युक्त विचारणीय पदार्थों की शुभता और पाप ग्रहों की स्थिति-दृष्टि से अशुभता होती है।

भावस्थ ग्रहों का फल—पुत्रों को बीमारी, स्त्री को तकलीफ, बुद्धि में कमी, द्रव्यनाश, रिश्तेदारों से दुःख और धन धान्य की कमी पंचम भाव में सूर्य के जाने से होती है।

स्त्री-सुख, विजय, मान, राज्य से सहायता, धन की प्राप्ति, अच्छी बुद्धि और संतान का सुख पंचम भावस्थ चन्द्रमा से होता है।

पुत्रों से तकलीफ, स्त्री को विशेष कष्ट, स्वयं के पेट में बीमारी, बुद्धि में विकृति और रिश्तेदारों से झगड़ा पंचमस्थ मंगल से होता है।

स्त्री, पुत्र और मित्रों से सुख, राज्य से सहयोग, बुद्धि से द्रव्य की पैदायश और परीक्षा में उत्तीर्णता पंचमस्थ चन्द्रपुत्र (बुध) के कारण होती है।

सुबुद्धि और संतान की प्राप्ति, सुख और लाभ, मंत्र और विद्या की प्राप्ति और शत्रुओं का पराभव पंचमस्थ देवपूज्य (बृहस्पति) कराता है।

स्त्री और पुत्रों का विशेष सुख, श्रेष्ठ बुद्धि, वैभव का आगमन, तंत्र विद्या की जानकारी और यश-धन-कीर्ति की प्राप्ति पंचमगत शुक्र कराता है।

स्त्री, संतान और मित्रों को कष्ट, बुद्धि में विकार, पेट में वायु-रोग, धन का नाश और विद्या-अध्ययन में रुकावटें, शनि के पांचवें भाव में जाने से होती है।

पुत्र का सुख और पुत्र प्राप्ति, बुद्धि में विकार, शत्रुओं का

पराभव, हमेशा पेट में पीड़ा और विद्याध्ययन में बाधाएं राहु के पांचवें भाव में जाने से जाननी चाहिए।

पांचवें भाव में केतु विद्या की हानि, संतान कष्ट, परीक्षा में असफलता, धन धान्य की हानि और विवेक शून्य करता है।

पुत्र-प्राप्ति विचार—वर्ष में पुत्र प्राप्ति होगी या नहीं, इसका विचार करने से पूर्व यह देख लेना जरूरी है कि जातक की जन्म कुण्डली में पुत्र योग है या नहीं। **पुत्र-योग के अभाव में वर्ष कुण्डली के पुत्र योग निष्फल हो जाते हैं।** जातक की अवस्था और उसकी स्त्री के विषय में विचार करना भी नितान्त आवश्यक है। निम्नलिखित योग वर्ष में पुत्र प्रदान करते हैं।

(१) बलवान् वर्षेश पंचम भाव में हो।

(२) मंगल+बुध शुभ ग्रह की राशि में ५वें अपना ११वें भाव में हो।

(३) सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र वर्षेश होकर ५वें अथवा ११वें भाव में हों और पापग्रहों से दृष्ट या युक्त न हों।

(४) जन्म-कुण्डलो में बृहस्पति जिस राशि में हो वह राशि वर्ष में लग्न में स्थित हो अथवा वर्ष कुण्डली के पाँचवें भाव में हो।

(५) बुध और शुक्र की जन्मकुण्डली की राशि वर्ष लग्न में हो।

(६) शनि अथवा मंगल की जन्मकुण्डली की राशि वर्षकुण्डली में पंचमभाव में आयी हो।

(७) वर्ष लग्नेश पुत्र भाव में हो।

(८) चंद्र, बृहस्पति और शुक्र उच्च के पुत्र भाव में हो।

(९) पंचमेश और लग्नेश का इत्थशाल हो।

(१०) पंचम भाव में मुन्था जावे, मुन्थेश शुभ भाव में बैठ कर मुन्था को देखता हो।

कन्या उत्पत्ति योग :—(१) वर्ष कुण्डली में लग्न समराशि की

हो और उसमें शनि स्थित हो तो वर्ष में कन्या सन्तान होती है।

(२) राहु कन्या राशि में किसी ग्रह के साथ सातवें या पांचवें भाव में गया हो तो वर्ष में कन्या होती है।

(३) लग्नेश और पंचमेश दोनों स्त्री-ग्रहों में से हो और केन्द्र त्रिकोए में गये हों तो प्रायः कन्या संतान होती है। ये यदि सम-राशि और समनवांशक में हो तो निश्चय ही कन्या संतान की उत्पत्ति का योग समझना चाहिये।

सन्तान सम्बन्धी अन्य बातें :—(१) यदि द्विस्वभाव राशि लग्न में हो और उस पर शुभग्रह हों और गर्भयोग भी हो तो निश्चय ही स्त्री के पेट में दो बच्चे होते हैं। बृहस्पति की राशि में चन्द्रमा हो और शुक्र की राशि में मंगल हो, शुक्र भी पास हो तो निश्चय ही गर्भयोग समझना चाहिए।

(२) जन्म लग्न से पांचवें भाव का स्वामी वर्षकुण्डली में क्रूर ग्रहों से घिरा हुआ हो या उनके साथ हो या उनसे दृष्ट हो संतान का दुःख होता है।

(३) मंगल और बुध दोनों यदि पांचवें भाव में हों और निर्बल हों तो पुत्र-दुःख करते हैं।

(४) जिस राशि पर मंगल या शनि जन्मकुण्डली में हो यदि वही राशि वर्षकुण्डली में लग्न या पाँचवें भाव में गई हो तो वर्ष में निश्चय ही पुत्र को पीड़ा होती है।

(५) पंचमेश बारहवें और बारहवें भाव का मालिक पांचवें हो तो वहुत कन्याओं द्वारा खर्च की वृद्धि और पुत्र को पीड़ा होती है।

(६) पापी ग्रह पांचवें भाव में बैठा हो, पंचमेश पंचम को देखता हो तो वर्ष में गर्भपात होता है।

(७) सप्तम भाव में मंगल+केतु गर्भपात कराते हैं। शनि की दृष्टि हो तो योग विशेष बलवान् बन जाता है।

परीक्षा में सफलता-असफलता :—इस वर्ष परीक्षा में सफलता

मिलेगी या नहीं ? यह प्रश्न विद्यार्थी विशेष रूप से पूछते हैं। राजकीय नौकरी में लगे हुए व्यक्ति भी अपने विभाग की परीक्षाएं देते रहते हैं और इस प्रकार इस प्रश्न का महत्व सदैव बना रहता है। पाठकों की सुविधा के लिये इस विषय में कुछ अनुभूत और मौलिक योग दिये जा रहे हैं।

(१) वर्षकुण्डली का पंचम भाव चन्द्रमा, बृहस्पति या शुक्र से युक्त हो अथवा दृष्ट हो और पंचमेश की दृष्टि भी पंचम भाव पर हो तो विद्या में रुचि और इम्तिहान में सफलता मिलती है। इससे विपरीत अवस्था में असफलता समझनी चाहिये।

(२) शुक्र तीसरे घर में हो तो भी परीक्षा में पास हो जावे।

(३) दूसरे भाव में स्थिति मुन्था निश्चय ही परीक्षा में सफलता दिलाती है।

(४) 'वर्षभास्कर' में लिखा है कि संतान कारक जितने योग हैं वे परीक्षा में भी सफलता देने वाले हैं। सिद्धान्त की दृष्टि से लेखक इसे पूर्ण सही मानता है।

(५) गोचर का शनि, यदि वर्षकुण्डली के पंचम भाव या पंचमेश को देखे तो, परीक्षा में असफलता मिलती है।

(६) पंचमेश का निर्बल अथवा पापपीड़ित होना और ६, ८, १२वें भाव में जाना अध्ययन में असफलता देता है।

छठे घर का विचार

इस भाव को आपोक्लिम और रिपुस्थान भी कहते हैं। इससे मामा, रोग, शत्रु, लड़ाई, झगड़ा और बुरे कामों की प्रवृत्ति का विशेष विचार करना चाहिए। सामान्यतया शुभ ग्रहों की दृष्टि अथवा योग से उपर्युक्त बातों में वृद्धि और पाप ग्रहों की दृष्टि अथवा योग से कमी जाननी चाहिए।

भावस्थ ग्रहों का फल—यदि वर्ष में सूर्य षष्ठस्थ हो तो अनाज का संग्रह, मन में धैर्य, राजमान और शत्रुओं का नाश, स्त्री-पुत्रादिकों का सुख होता है।

वायु और कफ की बीमारी, रिश्तेदारों से लड़ाई, राज और चोरों से दु:ख, छठे भाव में चन्द्रमा के होने से होता है।

मित्रों और रिश्तेदारों से सुख, धन का पर्याप्त लाभ, शत्रुओं का क्षय, आनन्द की प्राप्ति, और राज्य से मान--सुख छठे भाव में मंगल के होने से होता है।

छठे भाव में बैठकर बुध शत्रुओं की वृद्धि, परिवार के सदस्यों से मन-मुटाव, शरीर में रोग, कफादि की पीड़ा और स्त्री को कष्ट करता है।

बृहस्पति के षष्ठस्थ होने पर शत्रुओं की वृद्धि, घबराहट, धन नाश, कमजोरी, मित्रों और रिश्तेदारों से विरोध, यात्रा में हानि और अतिसार रोग की उत्पति होती है।

वायु और कफ की बीमारी, क्षय रोग की उत्पति, धन की कमी, बहुत भय, घर में तकलीफ और गुप्त चिंता षष्ठस्थ शुक्र के छठे होने से होती है।

शनि षष्ठस्थ हो तो, शरीर का सुख, धन की वृद्धि, राज्य से उन्नति, स्त्री और पुत्रों से सुख होता है।

षष्ठस्थ राहु राज्य से उन्नति, शरीर की स्वस्थता, धन लाभ, शत्रुओं का क्षय और स्त्री-पुत्रों का सुख करता है।

केतु के षष्ठस्थ होने पर तीन दरवाजों वाले मकान का सुख, परिवार में मान-सम्मान धन का लाभ, शत्रुओं का नाश और प्रसन्नता होती है।

विशेष विचार :—(१) वर्षेश शनि बली होकर पाप युत या दृष्ट षष्ठ भाव में जाय तो वर्ष में अनेक प्रकार के सन्निपात, शूल, उदर और नेत्र रोग देता है।

(२) षष्ठेश का शुभ ग्रह होकर षष्ठ स्थान में जाना सुख देता है और रोगी को रोग भी।

(३) चन्द्रमा मंगल से इत्थशाल करे तो रोग देने वाला और

शनि से यदि इत्थशाल करे तो रोगनाशक समझना चाहिये। यह योग दिन में और कृष्ण पक्ष में वर्ष-प्रवेश होने से विशेष फलता है।

(४) जिस राशि पर जन्म में शुक्र हो वह राशि यदि वर्ष में छठे घर में पड़ी हो एवं उस पर शनि बैठा हो तो सम्पूर्ण वर्षभर व्यक्ति काम ज्वर (अत्यधिक कामवासना) से दुःखी रहता है।

(५) चन्द्रमा के पास पापी ग्रह लग्न में बैठे हों तो कमजोरी बनी रहे और हडफूटन हो।

(६) आठवें घर में पापी ग्रह के साथ बृहस्पति हो और लग्न में मंगल हो तो बेहोशी हो, चक्कर आवें।

(७) लग्नेश और छठे भाव का स्वामी दोनों एक ही स्थान में बैठे हों तो थोड़ी सी पीड़ा होती है।

(८) यदि चौथे या सातवें घर में मुन्था हो, उसे शत्रु-दृष्टि से शनि देखता हो तो शूल की पीड़ा होती है। यदि इसी योग के साथ पापियों (ग्रहों) की भी दृष्टि हो तो विशेष तकलीफ समझनी चाहिये।

(९) जन्म समय में बुध या शुक्र निर्बल हो और वर्ष में केतु के पास बैठें हो तो सारे ही वर्ष में रोग रहता है।

(१०) छठे घर का मालिक लग्न में जाये तो शत्रु की उत्पत्ति होती है।

(११) लग्नेश निर्बल होकर पापी ग्रहों के बीच में हो, कन्या, तुला या मिथुन राशि का छठे शुक्र हो तो श्वास रोग होता है।

(१२) पंचमेश का षष्ठस्थान में जाना या षष्ठेश का पंचम में जाना भी संतान-पीड़ा देता है।

(१३) नवमेश का षष्ठस्थान में जाना यात्रा में कष्ट देता है।

(१४) षष्ठेश जिस जाति का हो उसी जाति का शत्रु उत्पन्न होता है।

(१५) यदि चन्द्रमा के साथ भौम लग्न में और पापयुत बृह-

पति अष्टम भाव में गया हो तो उस वर्ष अंग नाश होता है।

वर्ष भर में शरीर स्वास्थ्य कैसा रहेगा ?

समर सिंह की विशिष्ट विधि—वर्ष भर के आरोग्य अथवा रोग को जानने के लिए समरसिंह ने एक विशेष विधि की चर्चा की है, उसका तात्पर्य यह है कि वर्ष-प्रवेश की निकटवर्ती जो गत पूर्णिमा और अमावस है, उन दोनों के समाप्ति-समय के लग्नों का विचार करे। यदि इनमें दोनों लग्नों पर और इन दोनों के लग्नेशों पर—चारों शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा शुभ ग्रहों से ये इत्थशाली हों तो सम्पूर्ण वर्ष भर में किसी प्रकार का रोग-दोष और बीमारी नहीं होती। यदि पूर्वोक्त लग्नों और लग्नेशों पर सूर्य और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो भी शुभ फल होता है; अर्थात् रोगादि नहीं होते। यदि सूर्य और चन्द्रमा की दृष्टि नहीं हो, पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो छठे भाव में बैठे हुए ग्रह का जो रोग कहा है, उस रोग की माँदगी और पूरी तकलीफ होती है। यदि उक्त चारों के पास पापी ग्रह बैठे हों, चन्द्रमा नष्ट हो, इन ही के पास अथवा इनके स्थान में बैठा हो तो वर्ष में किसी दीर्घ रोग से कष्ट भुगतना पड़ता है।

सप्तम भाव विचार

सप्तम भाव को स्त्री भाव और केन्द्र भी कहा जाता है। 'चण्डेश्वर' ने लिखा है कि इस भाव से वस्तुओं का लेन-देन, मुकदमा, काम-चेष्टा, दास-दासी, स्त्री, सफर और चोरी का विचार विशेष रूप से करना चाहिए।

सामान्यतया पहले बताये नियमानुसार शुभ दृष्टि और योग से सुख एवं पाप दृष्टि-योग से दुःख, हानि विचारना चाहिए।

भावस्थ ग्रहों का फल—सूर्य सातवें भाव में हो तो स्त्री को पीड़ा, सिर में दर्द, मुंह और अण्डकोश में पीड़ा, मार्ग में भय (यात्रा में चोरी, मार पीट आदि का भय) और गांव-गांव घूमना, होता है।

स्त्री से बहुत सुख, राज्य से उन्नति, देश-प्रदेश से फायदा, यात्रा में लाभ. वाणिज्य में धन-प्राप्ति और जलीय पदार्थों के क्रय-विक्रय से प्रचुर लाभ, सप्तमस्थ चन्द्रमा से होता है।

स्त्री से क्लेश और नुकसान, अपनी देह में बीमारी, स्थानान्तरण, भय, पुरुषों से झगड़ा और शोक, सातवें भाव में बैठ कर मंगल करता है।

स्त्री-सुख, मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि, गो-स्वर्ण और वस्त्र लाभ, यात्रा में सुख, क्रय-विक्रय में लाभ और मित्रों का सुख, सप्तमस्थ बुध करता है।

व्यापार में प्रचुर लाभ, यात्रा में आनन्द, स्त्री-सुख, राज्य से उन्नति, शत्रुओं का नाश और वाहन सुख सप्तमभावस्थ बृहस्पति, देता है।

स्त्री-सहवास का विशेष आनन्द, पुत्र का सुख, व्यवसाय-वाणिज्य में फायदा, यात्रा में आनन्द और मन में प्रसन्नता सप्तमस्थ शुक्र करता है।

स्त्री को कष्ट, यात्रा में भय, पशुओं का मरण, राज्य से जुर्माना, चित्त को क्लेश, झूठी निंदा, पेट में वायु विकार और शत्रुओं से डर, सप्तमस्थ शनि करता है।

सप्तमस्थ राहु से शरीर में तकलीफ, यात्रा में दुख, स्त्री को वायु-रोग से पीड़ा, स्वयं की कमर और बस्ति का दर्द, अग्निभय और विषादि से पीड़ा कहनी चाहिये।

सप्तमस्थ केतु से धन की हानि, वात रोग का प्रकोप, शत्रुओं की वृद्धि, राज्य से परेशानी और मान भंग समझना चाहिए।

विशेष विचार—यदि सातवें घर का स्वामी या चौथे घर का स्वामी लग्न में या सातवें भाव में हो और शुभ ग्रह उसे देखते हों या उसके पास हो तो शृंगार योग होता है। इस योग से वर्ष में स्त्री-सुख और स्त्री द्वारा कुछ धन-लाभ भी होता है।

स्त्री प्राप्ति या विवाह योग—(१) शुक्र वर्ष-कुण्डली में वर्षेश हो और जन्म में जिस राशि पर स्थित हो, उसी राशि पर, वर्ष में सातवें हो तो निश्चय ही पुरुष का विवाह होता है।

(२) 'ताजिकसार' के अनुसार जन्मकाल में शुक्र जिस राशि पर बैठा हो वह राशि वर्षकुण्डली में यदि लग्न में आ जाये तो विवाह हो।

(३) लग्नेश और सप्तमेश का योग भी विवाह कराता है।

(४) छठे भाव का स्वामी शभ ग्रह छठे ही भाव में गया हो तो स्त्री-प्राप्ति हो।

(५) मंगल वर्षेश हो और शुक्र उसे देखता हो तो भी वर्ष में स्त्री प्राप्ति हो।

(६) शुक्र वर्षेश हो और मंगल उसे देखता हो तो भी वर्ष में स्त्रो प्राप्ति हो।

(७) आचार्य नीलकंठ के अनुसार यदि लग्नेश और सप्तमेश का इत्थशाल हो तो अवश्य ही स्त्री-प्राप्ति होती है।

(८) जन्मकाल के छठे घर का मालिक वर्ष लग्न से छठे भाव में हो और उसे शुभग्रह देखते हों तो विवाह होता है।

(९) लग्नेश चन्द्रमा सातवें भाव में हो तो विवाह हो।

(१०) सप्तमेश लग्न में हो और चन्द्रमा उसे देखता हो तो स्त्री देता है।

(११) अपनी राशि में शुक्र हो एवं उसे चन्द्रमा देखता हो या उसके पास चन्द्रमा बैठा हो तो स्त्री की प्राप्ति होती है।

(१२) पंचाधिकारियों की राशि में मुन्था का जाना विवाह कराता है।

(१३) जन्मकाल में गोचरस्थ बृहस्पति सप्तमभाव, सप्तमेश या शुक्र को देखे तब उस वर्ष में विवाह कराता है।

स्त्री-कष्ट के विशेष योग—(१) सूर्य पंचाधिकारियों में हो तो स्त्री से व्याकुलता रात-दिन रहती है।

(२) मंगल या शनि के साथ मुन्था सातवें भाव में हो और पापी ग्रह देखते हों तो स्त्री को वर्ष भर विशेष कष्ट रहता है।

(३) सातवाँ घर पापग्रहों की दृष्टि से युक्त हो और उसका स्वामी नष्ट बली हो तो स्त्री से दुःख मिलता है।

(४) सातवें भाव में गया हुआ मंगल प्रायः स्त्री सम्बन्धी कोई न कोई कष्ट अवश्य देता है।

(५) कन्या लग्न में शुक्र बैठा हो और मंगल सातवें हो तो उस वर्ष में स्त्री-मरण होता है।

(६) सातवें घर में चन्द्रमा और मंगल के साथ राहु बैठा हो, साथ ही सप्तमेश भी अस्त हो तो उस वर्ष में स्त्री अवश्य मिल जाती है।

(७) मंगल की राशि मेष या वृश्चिक पर शनि सातवें हो और पाप ग्रह उसे देखते हों तो स्त्री का नाश होता है।

(८) सातवें घर में या बारहवें घर में पापी ग्रह हों और पांचवें चन्द्रमा हो तो मनुष्य स्त्री-पुत्रों से हीन हो जाता है।

(९) पापाक्रांत मुन्था का सप्तम जाना स्त्री-पुत्र को कष्ट देता है।

(१०) वर्ष में शुक्र के साथ क्षीण चन्द्र का जाना भी स्त्री को कष्ट देता है।

क्या इस वर्ष लड़ाई-झगड़ा होगा ?—(१) लग्नेश और सप्तमेश आपस में शत्रु हों तो वर्ष में लड़ाई होने की संभावना रहती है।

(२) लग्न में या बारहवें भाव में (प्रथम योग के साथ) यदि पापी ग्रह हो तो वर्ष में होने वाली लड़ाई बहुत लम्बी चलती है और गम्भीर परिणाम होते हैं।

(३) मंगल और शनि के बलवान् होने पर भी प्रायः लड़ाई-झगड़ा होता रहता है।

लड़ाई में हार-जीत का विचार—(१) लग्नेश सातवें या बारहवें हो तो वर्ष में हार हो।

(२) लग्न में पापग्रह हो तो शत्रुओं पर विजय प्राप्त हो।

(३) सातवें भाव में पापी ग्रह गये हों तो शत्रु की जीत समझनी चाहिये।

(४) यद्यपि पहले लिखे योगानुसार लग्न में पापी ग्रह रहने से जीत होती है लेकिन जिस व्यक्ति की कुण्डली में पापी ग्रह न बैठे हों और लग्न पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो व्यक्ति की हार होती है।

(५) लग्नेश और सप्तमेश की आपस में मित्र दृष्टि हो तो लड़ाई में सुलह होती है।

(६) ग्यारहवां भाव (वर्ष कुण्डली का) बलवान् हो तो भी सुलह होती है।

(७) यदि सातवें और चौथे भाव में शुभ ग्रह हों तो जीत होती है।

(८) लग्न में चर राशि हो, शुभग्रह उस पर बैठा हो तो भी सुलह होती है।

(९) दशवें घर में शुभ ग्रह हो तो लड़ाई में रुपया देकर पीछा छुड़ावे या संधि करें।

यात्रा-सम्बन्धी बातें—(१) चौथे और सातवें भाव के बीच में शुभ फल देने वाले ग्रह हों तो यात्रा सिद्धि-दायक होती है।

(२) यदि चौथे और सातवें भाव के बीच अशुभ ग्रह हो तो यात्रा में नुकसान होता है।

(३) सातवें घर में शुभ ग्रह हो या सप्तमेश ही सप्तम हो तो यात्रा में सफलता मिलती है।

(४) सामान्यतया मुसाफिरी में गया हुआ मनुष्य तभी राजी खुशी लौटता है, जबकि सातवें घर में चर राशि हो और पापी ग्रह न उसे देखते हों न उसमें बैठे हों।

पति-पत्नी निभाव के सम्बन्ध में—(१) लग्न में सातवें घर का मालिक हो तो वर्ष भर पति की आज्ञा में स्त्री चलती है। यदि लग्नेश सातवें हो तो स्त्री के कहने से पुरुष चले।

(२) लग्नेश लग्न में और सप्तमेश सप्तम में हो, अथवा दोनों लग्न में हों या सप्तम में ही हों तो स्त्री और पुरुष का प्रेम खूब बना रहता है।

(३) लग्नेश और सप्तमेश की परस्पर-मित्र दृष्टि हों तो दोनों में प्रेम, शत्रु दृष्टि हो तो शत्रुता और जो समदृष्टि हो तो सामान्य प्रेम साधारणतया बताना चाहिये।

(४) आठवें और दूसरे इन दोनों भावों में जो दूसरा भाव बलवान् हो तो स्त्री से धन पुरुष को मिलता है और यदि आठवां भाव बलवान् हो तो स्त्री को पति द्वारा धन मिलता है।

(५) सप्तमेश नीच का हो या नष्टबली हो तो उस वर्ष व्यक्ति वेश्या से प्रेम करता है। यदि सप्तमेश पापी ग्रह के पास हो तो वह पर-स्त्री की ओर झुकता है।

(६) शुक्र की राशि पर यदि मंगल हो तो व्यक्ति उस वर्ष पर-स्त्री से रत रहता है।

खोई वस्तु मिलेगी या नहीं ?—(१) 'हायनसिंधु' में लिखा है कि जो लग्नेश और सप्तमेश को वर्ष में पापी ग्रह न देखते हों तो कोई वस्तु खोई न जाय किन्तु रखकर भूल जाय और वह मिल जाय।

(२) जिस राशि पर चंद्रमा वर्ष में हो उसी राशि का स्वामी उसे देखता हो तो खोई वस्तु मिल जाय।

(३) धनेश सूर्य से आगे हो और उदित हो तो खोई हुई वस्तु भूली हुई होती है और निश्चय ही मिल जाती है।

अष्टम भाव विचार

अष्टम भाव को पणफर और मृत्यु भाव भी कहते हैं। इससे मृत्यु, आयु, कष्ट, विरोध, पाप, चरबी, और कुटेव आदि का विचार

करना चाहिये। मतान्तर से खोई वस्तु, रोग, भाई और शत्रुओं का विचार भी इसी भाव से किया जाना चाहिये।

शुभ दृष्टि और योग का फल इस भाव पर भी अन्य भावों के समान सामान्यतया मानना चाहिये।

भावस्थ ग्रहों का फल—अष्टमस्थ सूर्य, वर्ष में आंखों में रोग, धन की हानि, शरीर में बहुत ही तकलीफ, गरमी का जोर (पित्त-विकार) राजा और सर्प से डर करता है।

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो थोड़ा संतोष, द्रव्य का नाश, उपद्रव, कफ सम्बन्धी बीमारी और नेत्र रोग करता है।

अष्टमस्थ मंगल रक्तपित्त का प्रकोप, बड़ी तकलीफ, धन का खर्चा, मित्रों और रिश्तेदारों को कष्ट, घाव का भय और गुप्त चिंता देता है।

अष्टमस्थ बुध व्यापार और नौकरी में लाभ, प्रसन्नता, राज्य से सहयोग, दुश्मनों का नाश और शरीर का आरोग्य देता है। मतान्तर से अष्टमस्थ बुध मृत्युतुल्य कष्ट, ताप, नेत्र रोग, भय, जी घबराना और धन-हानि करता है। हमारे विचार से ऐसी स्थिति में शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि के आधार से फल कहना चाहिये।

अष्टमस्थ गुरु धन का खर्च, शरीर में नीरोगिता, दोस्तों के गिरोह से लड़ाई और जुदाई, प्रवास और स्त्री-कष्ट देता है।

अष्टमस्थ शुक्र से थोड़ा लाभ, शरीर में बीमारी, स्त्री और पुत्र को तकलीफ धन नाश और एक ही स्थान पर रहना होता है।

अष्टमस्थ शनि शरीर में रोग से कष्ट, बड़ी बीमारी, पुत्र और स्त्री को पीड़ा, व्यसन, द्रव्य का नुकसान और राजा से भय करता है।

अष्टमस्थ राहु धन का खर्च, बीमारी, रिश्तेदारों से मुकदमे, स्त्री से कष्ट और स्थानान्तरण करता है।

केतु अष्टम में स्थित हो तो चित्त कुछ उदार रहे, सामान्य शरीर कष्ट, धन की हानि, धन का बहुत खर्च, कोई चोट, घाव या दिल में दर्द का भय करता है।

विशेष विचार—(१) हीनबली वर्षेश भौम चंद्रराशिगत हो, या मिथुन का हो तब कष्ट, अग्नि अथवा चोर से भय कराता है।

(२) सूर्य के साथ मंगल का दशम भाव में जाना वाहन से भय देता है।

(३) यदि चन्द्रमा मेष और वृश्चिक राशियों में हो तो राज-भय देता है।

(४) बलवान् शनि दशम भाव में गया हो तो अस्त्र भय होता है।

(५) जन्म लग्नेश, अष्टमेश, वर्षेश और मुंथेश ६, ८, १२वें स्थान में हो तो वर्ष में मृत्यु होने की संभावना रहती है।

(६) वर्षेश मंगल से युक्त हो तो मुकद्दमा कराता है। यदि सप्तमभावगत हो तो घर में कलह होता है।

(७) वर्ष लग्नेश, मुंथेश-वर्षेश का अष्टमेश से इत्थशाल करना मृत्यु-भय देता है।

(८) अष्टमस्थ भौम से शस्त्र, वाहन या राजा से भय होता है।

(९) वर्ष के पंचाधिकारियों में जन्म का अष्टमस्थ बृहस्पति हो तब बड़ा कलह कराता है।

(१०) लग्नेश अष्टम हो, भौम मेष, सिंह या धनु राशि का हो तो चाकू या तलवार का भय कहना चाहिये।

(११) सूर्य, शनि और मंगल ये तीनों अष्टम या दशम में हों अथवा सूर्य-मंगल अष्टमभावस्थ हो तब सवारी से भय देते हैं।

(१२) जन्मलग्नेश यदि पापाक्रांत होकर वर्ष में आठवें जाये तो निश्चय ही कष्ट होता है।

(१३) शनि युक्त मुंथा पर भौम दृष्टि का होना भी कष्ट-कारक है।

(१४) यदि वर्ष में बुध बलवान् होकर आठवें भाव में गया हो और मंगल उसे देखता हो तो विदेश में मरण और कैद हो।

अन्य महत्त्वपूर्ण बातें :—(१) जीर्णजातक में लिखा है कि वर्षेश यदि बृहस्पति हो और वर्ष में आठवें बैठा हो, उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि भी हो तो धन-हानि और दरिद्रता का दुःख होता है।

(२) अष्टम घर का स्वामी दूसरे घर में हो, बारहवें घर का स्वामी आठवें घर में हो, लग्नेश वर्ष में निर्बल हो तो उस वर्ष में सांप के काटने का डर हो।

(३) कन्या राशि सातवें हों, चन्द्रमा पापीग्रहों से युक्त हो, लग्न में सूर्य हो और साथ ही शुक्र आठवें हो तो वर्ष में दूसरी स्त्री के संगम से अकस्मात् मनुष्य को तकलीफ हो।

(४) पाप ग्रह जन्मलग्नेश के पास हो, मुंथेश शनि के साथ बैठा हो, मंगल की इन पर शत्रु-दृष्टि हो तो जातक वर्ष में आत्म-हत्या करता है।

(५) जन्म से आठवें भाव का स्वामी यदि वर्ष में भी आठवें भाव में गया हो तो मनुष्य की मृत्यु कहनी चाहिये।

(६) लग्नेश और अष्टमेश एक ही होकर चौथे, आठवें या बारहवें हो तो उस वर्ष में मरण-तुल्य अरिष्ट करता है।

नवम भाव विचार

इस भाव को आपोक्लिम और भाग्य भवन भी कहते हैं। इससे स्त्री के भाई, सफर, मंदिर, धर्मशाला बनवाना, भाग्य उदय, तरक्की, गिरावट, मान, धर्म-कर्म, धार्मिक-विद्या और सिद्धि, इत्यादि का विचार करना चाहिये।

सामान्यतया शुभग्रहों की दृष्टि और उनके योग से फल उत्तम, अशुभ ग्रहों की दृष्टि और योग से पूर्वोक्त पदार्थों की हानि होती है।

भावस्थ ग्रहों का फल :—नवमस्थ सूर्य सदैव स्त्री-पुत्र से झगड़ा, धर्म-कार्यों में बुद्धि, चित्त को घबराहट और पछतावा करता है।

नवमस्थ चन्द्रमा वर्ष लगते हुए धर्म की प्राप्ति, मन को संतोष, यश में वृद्धि, राज्य से उन्नति, शुभ यात्रा और व्यापार की वृद्धि करता है।

नवमस्थ मंगल मनुष्यों में बुराई, पाप, घबराहट, दौलत का नुकसान, भाई और रिश्तेदारों से लड़ाई कराता है।

नवमस्थ बुध धर्म में बुद्धि, लड़ाई, स्त्री के तकलीफ, भाग्य का उदय और मित्रों से लाभ करता है।

धन की प्राप्ति, राज्य से सुख, धार्मिक कार्य, तरह तरह के सुख-आराम, तीर्थ यात्रा और भाग्य की उन्नति, नवें भाव में बृहस्पति के बैठने से होती है।

शुक्र के नवमस्थ होने पर शरीर में आरोग्य, अच्छी बुद्धि, धन का आगमन, पुत्र और स्त्री का सुख होता है।

नवमस्थ शनि होने पर स्त्री-पुत्र और मित्रों को तकलीफ, धन का नाश, राज्य से भय, पाप कर्मों में बुद्धि और भद्दा चाल-चलन होता है।

लड़ाई, देह में पीड़ा, गरीबी, राज्य से भय-जुर्माना, धर्म-कार्यों में सुस्ती और सम्बन्धियों को पीड़ा होती है। ये सब फल नवमस्थ राहु से होते हैं।

नवम भाव में यदि केतु हो तो मित्रों से विरोध, शत्रुता, राज्य से भय और जुर्माना आदि, नेक कार्यों में ध्यान कम रहे और भुजाओं में कष्ट रहें।

विशेष विचार—जीर्णजातक में लिखा है, कि लग्न को लग्नेश देखे और भाग्य भाव को भाग्येश देखे, तथा भाग्य को लग्नेश और लग्न को भाग्येश तथा नवें लग्नपति और लग्न में नवमेश अथवा लग्नेश और नवमेश सातवें हों तो उस वर्ष में भाग्य का उदय होता है।

'हिल्लाज' कहता है, कि शनि की राशि पर नष्टबली होकर

मंगल तीसरे या नवें भाव में हो तथा पापी ग्रहों के पास हो तो धर्म का नाश करता है। नवें भाव का स्वामी अपने ही घर में हो तो धर्म में परायण हो। नवें बृहस्पति वर्षेश होकर बैठे, साथ ही बलवान् भी हो तो सज्जनता और न्याय से धन-लाभ करे।

यात्राः—(१) वर्षेश भौम शुभयुत, दृष्ट तृतीय या नवम भाव में हो तब यात्रा, लाभ व सुख देता है तथा अस्थिर कार्य स्थिर हो जाता है।

(२) वर्षेश शुक्र तीसरे या नवें हो तो यात्रा में सुख होता है।

(३) बलवान् बुध तीसरे या नवें भाव में यात्रा कराता देखा गया है।

(४) बलवान् बृहस्पति तीसरे या नवें भाव में होने पर तीर्थ-यात्रा कराता है।

(५) भाग्येश वर्षेश से इत्थशाल करे तो विचारी हुई यात्रा होती है।

(६) जन्मकालिक बृहस्पति की राशि में वर्ष में भौम बैठा हो तो निश्चय ही श्रेष्ठ यात्रा होती है।

(७) निर्बली मंगल नवम भाव में हो तो कुटुम्ब से वियोग होता है।

(८) सप्तम भाव में मुन्था और नवम भाव में बलवान् चन्द्रमा हो तब विदेश-यात्रा होती है।

(९) मुन्था का नवम भाव में जाना वर्ष में भाग्योदय कराता है।

(१०) नवम भाव का पापाक्रांत होना नास्तिकता उत्पन्न करता है।

(११) जन्मकालीन अष्टमस्थ ग्रह या अष्टमेश नवम स्थान में वर्ष में होने से भाग्य पक्ष को कमजोर करता है।

(१२) बृहस्पति का नवम भाव में जाना परीक्षा में उत्तीर्ण कराता है।

(१३) यदि भाग्य भाव शनि से युत अथवा दृष्ट हो तो उन्नति में बाधा देता है।

(१४) वर्ष लग्नेश का नवम् भाव में जाकर जन्म लग्नेश से इत्थशाल करना उन्नति देता है।

(१५) चतुर्थेश और भाग्येश का सम्बन्ध जायदाद देता है।

दशम भाव विचार

दशम भाव को केन्द्र, राज्य भवन और कर्म भाव भी कहते हैं। इससे मान, रोजगार, तरक्की, कर्म, स्थान परिवर्तन, नौकरी, व राज्य से हानि-लाभ इत्यादि का विचार किया जाता है।

सामान्यतया शुभ ग्रह भाव में स्थित हो या भाव पर अपने स्वामी की दृष्टि हो तो शुभ भावफल और अशुभ ग्रहों की स्थिति या दृष्टि से अशुभ भावफल समझा जाता है।

भावस्थ ग्रहों का फल—दशमस्थ सूर्यसे राज्य और धन से सुख, कार्यों में सफलता, सुख, यश, व्यापार में वृद्धि और पर्याप्त धन की प्राप्ति होती है।

दशमस्थ चन्द्र स्वास्थ्य में सुधार, धन का आगमन, कपड़ों का लाभ, इज्जत और यश करता है।

दशमस्थ मंगल व्यापार से धन लाभ, राजा से खुशी, नौकरी में तरक्की, शरीर में नीरोगिता और स्वयं के तेज में वृद्धि करता है।

बुध के दशमस्थ होने पर सवारी का सुख, संतान वृद्धि धन का लाभ, राज्य से लाभ, मित्र का सुख और बल-क्रांति की वृद्धि, होती है।

गुरु के दशमस्थ होने पर अच्छी इज्जत और यश, राज्य से मान-तरक्की, धन की प्राप्ति, मित्रों से मुलाकात, घर में उत्सव और

शत्रुओं का नाश होता है।

दशमस्थ शुक्र से कार्यों में निश्चित सिद्धि, शत्रुओं का नाश, राज्य से तरक्की, धन की प्राप्ति और शत्रुओं का नाश होता है।

शनि के दशमस्थ होने पर व्यापार में धन का नुकसान, राज्य से जुर्माना आदि, सुख में कमी और यात्रा होती है।

दशमस्थ राहु जमीन-जायदाद की बिक्री, सदा-भय, शरीर में तकलीफ, धन का खर्च और प्यारे मित्रों व स्वजनों से लड़ाई, कराता है।

दशमस्थ केतु से साँसारिक कार्यों में क्लेश, दुःख, राज्य से भय, धन का खर्च और जमीन जायदाद सम्बन्धी गड़बड़ी होती है।

क्या इस वर्ष नौकरी मिलेगी ? (१) दसवें भाव में स्थिर राशि हो और उस राशि का स्वामी या अन्य कोई शुभ ग्रह वहाँ बैठे हों तो निश्चय ही नौकरी मिलती है।

(२) सातवें या आठवें भाव में शुक्र हो तो पद की प्राप्ति करवाता है।

(३) बुध या बृहस्पति के पास शुक्र हो तो अच्छी (अधिक वेतन वाली) नौकरी मिलती है।

(४) शीर्षोदयी राशि लग्न में हों और शुभ ग्रह उन पर बैठे हों तो पद की प्राप्ति होती है।

(५) वर्षेश बलवान् होकर दसवें भाव में गया हो तो मंत्री पद या उच्च सरकारी पद प्राप्त होता है।

(६) लग्नेश और दशमेश दोनों चन्द्रमा के पास हों तो ओहदा देते हैं।

(७) लग्न से दसवें सूर्य के पास या सूर्य के घर सिह राशि पर मुन्था हो तो उच्च राजकीय नौकरी मिलती है।

क्या इस वर्ष तरक्की होगी ?—(१) जन्मकुण्डली का सिह राशि का सूर्य वर्ष में बली होकर दशम में हो तो निश्चय ही तरक्की

और लाभ कराता है। इसी प्रकार जन्म की मंगल स्थित राशि का वर्ष में चन्द्रमा पदोन्नति और तरक्की कराता है।

(२) जब वर्षेश या वर्ष लग्नेश उच्च, स्वगृही या मूल त्रिकोण राशि में हो, तो तरक्की की सम्भावना उत्पन्न करते हैं।

(३) बृहस्पति अथवा जन्मलग्नेश अथवा वर्ष लग्नेश लग्न में हो और शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो तरक्की होती है।

(४) सूर्य, बृहस्पति और शुक्र का परस्पर इत्थशाल हो तो वर्ष में निश्चय ही तरक्की कहनी चाहिए।

(५) दशमेश पंचम में तरक्की और धन लाभ देते देखा गया है।

(६) मुन्था से पंचम स्थान में सूर्य व मंगल हो तो वर्ष में तरक्की होती है।

(७) लग्नेश एकादश भाव में गया हो और एकादशेश लग्न में हो अथवा दोनों लग्न या एकादश में बैठे हों, शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट हो तो तरक्की और धन लाभ समझना चाहिए।

अन्य महत्त्वपूर्ण बातें (१) जन्मकालीन अष्टमेश का राज भवन में जाना व्यापार में हानि या नौकरी से भय देता है।

(२) राज्येश का चतुर्थेश से सम्बन्ध जलयात्रा की सम्भावना कराता है।

(३) दशमेश का निर्बल होना या उस पर शनि की दृष्टि का होना पिता को कष्ट देता है।

(४) राज्येश का अष्टम या अष्टमेश का राज्य में जाना राज-दण्ड देता है।

(५) यदि चन्द्रमा दसवें हो और शनि उसे देखता हो या वहाँ बैठा हो तो सब कामों में बिगाड़ होता है।

एकादश भाव विचार

एकादश भाव को पणफर, लाभ और आय-भाव भी कहते हैं।

इस भाव से लाभ, हानि, आय, सवारी आदि का मिलना और ससुराल आदि से प्राप्त होने वाली आमदनी का विचार किया जाता है।

सामान्यतया शुभ योग और दृष्टि से उपर्युक्त पदार्थों और बातों की वृद्धि होती है और पाप दृष्टि अथवा योग से उनका ह्रास होता है।

भावस्थ ग्रहों का फल—वर्ष में एकादशस्थ सूर्य से राजा व धनवान् आदमियों से लाभ, सवारी की प्राप्ति, भूमि-वस्त्रादि का लाभ, शत्रुओं का नाश, मित्रों से आनन्द और संतान को कष्ट, होता है।

एकादशस्थ चन्द्रमा पुत्र और वस्त्रादि वस्तुओं की प्राप्ति, धन और मकान का सुख, श्वेत वस्तुओं के व्यापार से लाभ, और यश की वृद्धि करता है।

एकादशस्थ मंगल से स्त्री-पुत्र और मित्रों का सुख, स्वयं के प्रताप में वृद्धि, धन की पैदावार, शत्रुओं का नाश, राज्य से सुख और पशु से घात पहुंचता है।

एकादशस्थ बुध से धन का लाभ, देह में नीरोगिता, जय, धन-वस्त्रादि का लाभ, यश की वृद्धि, कष्टों का नाश, पशुओं की वृद्धि तथा मनोरथों की एकादशस्थ पूर्ति होती है।

एकादशस्थ बृहस्पति आयुष्य, निरोगिता, धन, स्त्री, मित्र और संतान का सुख, चौपायों की प्राप्ति, शत्रुओं का नाश और नौकरी में उन्नति करता है।

एकादशस्थ शुक्र जल मार्ग से धन की प्राप्ति, सफेद वस्तुओं में लाभ, प्रियजनों का मिलन, संतान-सुख और जय की प्राप्ति कराता है।

शनि जब एकादशस्थ हो जाय तो ऐश्वर्य की प्राप्ति, धन की आय और नीरोगिता,—स्त्री का सुख, बहादुरी, थोड़े से काम से अधिक लाभ और संतान को कष्ट करता है।

राहु एकादशस्थ होकर देह का सुख, धन और स्त्री का सुख, दौलत तथा अछूत जातियों से लाभ देता है।

एकादश भाव में यदि केतु स्थित हो तो शरीर स्वस्थ, धन का लाभ, स्त्री-सुख और सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

वर्ष में लाभ किस प्रकार होगा?—(१) बुध वर्षेश होकर धन भाव में बैठा हो और उसके पास शुभग्रह बैठे हों या शुभग्रह देखते हों तो वाणिज्य से लाभ होता है।

(२) यदि वर्षेश्वर बुध मुन्था के साथ लग्न में बैठा हो तो वर्ष में निश्चय ही लिखने-पढ़ने से लाभ हो।

(३) वर्षेश्वर बुध छठे-बारहवें और क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो नीचकर्म से लाभ समझना चाहिए।

(४) यदि वर्षेश एकादश भाव में शुभग्रहों के साथ बैठा हो या शुभग्रहों की उस पर दृष्टि हो तो लिखने-पढ़ने सम्बन्धी कार्य से लाभ होता है।

(५) 'ताजक भूषण' के अनुसार दशवें घर में बैठी हुई मुन्था लिखने-पढ़ने से धन-लाभ कराती है। हमारे विचार से बुध या बृहस्पति की दृष्टि होने पर यह योग विशेष बलवान् हो सकता है।

आशा सफल या निष्फल—(१) लाभ भाव में पाप ग्रहों का होना व्यापार में हानि देता है।

(२) चन्द्र या शुक्र धनेश होकर लाभ भाव में गया हो तो रुई और चांदी के सट्टे में लाभ कहना चाहिए।

(३) यदि निर्बली ग्रह लाभ भाव में जावें तो धन नाशक होते हैं।

(४) पापाक्रांत वर्षेश बृहस्पति लग्न में हो तो राज भय, धन-हानि देता है।

(५) यदि बृहस्पति अपने उच्च या स्वक्षेत्र में होकर केन्द्र में गया हो तो सभी शुभ आशाएं पूरी कराता है।

(६) लग्न से सातवें, आठवें और पांचवें शुभ ग्रह होवें तथा चन्द्रमा और लग्नेश बलवान् हो कर छठे भाव में गये हों तो कर्जा दिलवाते हैं।

(७) सारे ग्रह एकादश भाव को देख रहे हों तो निश्चय ही सम्पूर्ण वर्ष भर अच्छा लाभ होता रहता है।

द्वादश भाव विचार

द्वादश भाव को आपोक्लिम और व्यय भाव भी कहते हैं। इस भाव से सब प्रकार का खर्चा, त्याग, कृषि के कार्य, मुकदमे में हार-जीत श्वसुर आदि के धन की प्राप्ति, ऋण और चक्षु आदि का विचार, विशेष रूप से करना चाहिये।

सामान्यतया शुभ ग्रहों के इस भाव में बैठने या देखने से शुभ फल और अशुभ ग्रहों के बैठने या देखने से अशुभ फल कहना चाहिये।

भावस्थ ग्रहों का फल—वर्षपत्र में सूर्य द्वादशस्थ हो तो आंखों में बीमारी, धन का नाश, रिश्तेदारों से लड़ाई और शरीर में गरमी की तकलीफ होती है।

द्वादशस्थ चन्द्र, शत्रु भय, शुभ कार्यों में व्यय, नेत्र रोग, झगड़ा शरीर में कफ, पीड़ा और पेट में गांठ करता है।

द्वादशस्थ मंगल स्त्री को विशेष कष्ट, नेत्र रोग, स्वयं के शरीर में दर्द, पुत्र से दुःख, राज से भय और धन का नाश कराता है।

द्वादशस्थ बुध थोड़ा लाभ, बहुत रोग, बहुत खर्च, अपने परिवार वालों से झगड़ा और राज्य से भय देता है।

द्वादशस्थ गुरु खर्च बहुत अधिक, शत्रुओं से झगड़ा, राज का भय, नेत्रों में पीड़ा व शरीर-कष्ट, कफ-पीड़ा, पुरुषों से झगड़ा, हानि, भय, यात्राप्रसंग, और क्षय की उत्पत्ति, करता है।

द्वादशस्थ शुक्र शुभ कार्यों में धन का खर्च, वात का विकार, शत्रुओं के साथ झगड़ा, नेत्र रोग, शत्रुओं का भय और यात्रा कराता है।

द्वादशस्थ शनि, पैरों-आँखों और हृदय में पीड़ा, रुपये का नाश राज्य से डर, रिश्तेदारों से लड़ाई, चिंता और क्लेश कराता है।

द्वादशस्थ राहु से धन का खर्चा और दुःख, राज्य से पीड़ा, दुश्मन का नाश, स्त्री को तकलीफ, नेत्र रोग और संबंधियों को क्लेश होता है।

बारहवें केतु हो तो धन का खर्च अधिक, शरीर-कष्ट, बेचैनी, स्त्री को कष्ट, शत्रुभय व व्यापार अथवा सफर में धन-हानि होती है।

विशेष विचार—(१) वर्षेश और वर्ष-लग्नेश निर्बल होकर ६।८। या १२ वें बैठे हों और पाप ग्रहों से देखे जाते हों तो सेवकों से हानि होती है। यह फल द्विपद राशि में समझना चाहिये। यदि चतुष्पद राशि में उक्त वर्षेश और वर्ष-लग्नेश हों तो वे सवारी का नाश कराते हैं।

(२) शनि बलवान् हो और वर्षेश होकर छठे या बारहवें घर में हो तो बगीचा, कप आदि का निर्माण करता है।

(३) लग्नेश और व्ययेश का इत्थशाल अधिक व्यय कराता है।

(४) लग्नेश या धनेश का व्यय भाव में जाना वर्ष में अधिक व्यय का सूचक है।

(५) व्ययेश के दशम में जाने अथवा दशमेश के व्यय में जाने से वर्ष में राजदण्ड (जुर्माना, टैक्स आदि) होता है।

(६) मुंथा का बारहवें भाव में पापग्रहों के साथ बैठना शत्रु और रोग भय देने वाला है।

(७) बारहवें भाव के स्वामी का पराक्रम भाव (तीसरा भाव) में जाना कार्यों में असफलता देता है।

(८) 'ताजिकसार' के अनुसार यदि शनि के साथ चन्द्रमा बारहवें बैठा हो और बृहस्पति लग्न से छठे हो तो राज्य और चोरों के द्वारा धन का नाश बहुत जल्दी होता है।

(९) सामान्यतया यदि बारहवें भाव में शुभ ग्रह हों तो विवाह आदि शुभकार्यों में धन का खर्च होता है। यदि पापग्रह हों

तो राज्य दण्ड, चोर, बुरे कार्यों में धन का व्यय समझना चाहिये। इस प्रकार यदि बारहवें सूर्य हो तो राज्य के जुर्माने से, चंद्रमा हो तो फकीर-साधुओं में, मंगल हो तो क्रीड़ा और विनोद में, बुध हो तो व्यापार में, बृहस्पति हो तो धर्म-सम्बन्धी कार्यों में, शुक्र हो तो प्रेम और वैश्यादिक स्त्रियों में और बारहवें शनि हो तो व्यर्थ के कार्यों में, धन का खर्चा होता है।

(१०) यदि गोचरस्थ बृहस्पति बारहवें भाव को अपनी पूर्ण दृष्टि से देखे तो तीर्थयात्रा आदि में खर्च कराता है।

: ११ :

त्रिपताकी और समुद्र चक्र

त्रिपताकी चक्र : उसमें लग्न और ग्रहों को स्थापित करना : उदाहरण कुण्डली का त्रिपताकी चक्र : त्रिपताकी चक्र से शुभाशुभ विचार : वर्ष-विचार में समुद्र चक्र : समुद्र चक्र से शुभाशुभ विचार।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी चक्र से चंद्रमा और अन्य ग्रहों के परस्पर वेध का ज्ञान होता है। इसके लिए तीन रेखायें सीधी खड़ी और तीन रेखायें उत्तर-दक्षिण की खींचनी चाहिए। खड़ी रेखाओं पर पताका बनानी चाहिए। फिर इन सब रेखाओं के कोने परस्पर मिला दें। तीन सीधी रेखाओं में बीच वाली रेखा के नोक पर लग्न लिखना चाहिये। यही त्रिपताकी चक्र है।—

चक्र में लग्न और ग्रहों की स्थापना—सबसे पहले त्रिपताकी चक्र में लग्न स्थापित करना चाहिये। जो लग्न वर्षकुण्डली की होती

है, वही त्रिपताकी चक्र में लिखी जाती है। फिर क्रमशः आगे की राशियाँ स्थापित करें।

त्रिपताकी का चंद्रमा निकालने के लिए वर्ष-प्रवेश की संख्या में ९ का भाग देते हैं। शेष के अनुसार जन्मकुण्डली में जिस राशि में चंद्रमा है उससे आगे गिनकर, प्राप्त राशि, अंक पर चंद्रमा लिखते हैं।

सूर्य-बुध-बृहस्पति-शुक्र और शनि को निकालने के लिए वर्ष-प्रवेश संख्या में ४ का भाग देते हैं। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहाँ वे स्थित हैं, उतना ही आगे गिन कर त्रिपताकी चक्र में लिखते हैं।

राहु-केतु और मंगल को निकालने के लिए वर्षप्रवेश संख्या में ६ का भाग देते हैं। शेष को जन्म के राहु से विपरीत गिनकर प्राप्त राशि में राहु लिखते हैं। राहु से सप्तम स्थान पर केतु लिखना चाहिये। मंगल को भी, शेष अंक के अनुसार, जन्मस्थ राशि से उतना ही आगे लिखते हैं।

उदाहरण कुण्डली का त्रिपताकी चक्र :—३७वें वर्ष-प्रवेश का त्रिपताकी चंद्र बनाना है; इस कारण ३७ में ९ का भाग दिया। शेष १ बचा। जन्म कुण्डली में वृश्चिक राशि पर चन्द्रमा है, वृश्चिक की पहली राशि वृश्चिक ही होगी, अतः वृश्चिक राशि पर चंद्रमा स्थापित किया। लग्न तो वर्ष-कुण्डली के अनुसार पहले ही लिख दिया गया।

सूर्य-बुध-बृहस्पति-शुक्र और शनि को निकालने के लिए प्रवेशाब्द ३७ में ४ का भाग दिया। शेष १ रहा। अतः ये ग्रह भी जन्मस्थ राशि के अनुसार लिख दिये गये।

मंगल-राहु और केतु को त्रिपताकी में स्थापित करने के लिये ३७ में ६ का भाग दिया। शेष पुनः १ ही बचा। अतः ये ग्रह भी जन्मस्थ राशि के अनुसार लिखे।

त्रिपताकी चक्र

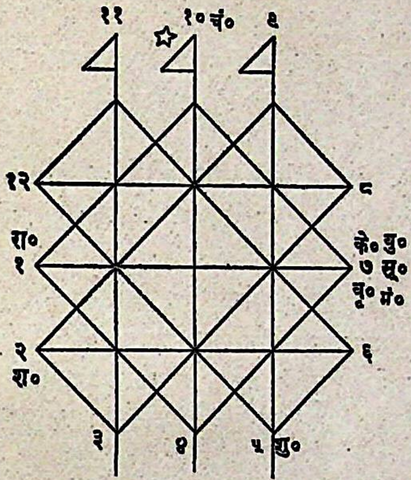

त्रिपताकी चक्र से शुभाशुभ विचार—चन्द्रमा का यदि क्रूर ग्रह से वेध हो तो फल अशुभ होता है। इस ग्रह की दशा में अरिष्ट हो। यदि शुभ ग्रह से वेध हो तो लाभ और सुख की प्राप्ति हो। त्रिपताकी चक्र में यदि एक पापग्रह का वेध हो तो वर्ष में अरिष्ट, यदि दो पाप-ग्रहों का वेध हो तो कष्ट और भी ज्यादा और यदि तीन पाप ग्रहों का वेध हो तो मृत्यु या मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि चन्द्रमा को सूर्य वेध करे तो बुखार, आशाओं में असफलता और चिन्ता रहे।

चंद्र-मंगल वेध होने से रक्त-विकार, शरीर-पीड़ा, रक्तचाप तथा मानसिक रोग होते हैं। किसी शस्त्र से जख्म या चोट लगने का भय भी रहता है।

चंद्र-बुध वेध होने पर कुटुम्ब कलह, मन में परेशानी, शत्रु भय होता है, लेकिन धन प्राप्ति भी होती है।

चन्द्र-बृहस्पति वेध होने पर सुख-शाँति, पूजा-पाठ, धन लाभ, मकान और संतान की प्राप्ति हो तथा नौंकरी में भी पदोन्नति हो।

चन्द्र-शुक्र वेध होने पर धन लाभ, राज्य से सहयोग, आशाओं में सफलता, स्त्री-सुख, व्यापार में लाभ और शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त होती है। कभी-कभी वासना के प्रबल होने से मन उचाट भी होता है।

चन्द्र-शनि वेध होने से नीच लोगों की संगति, वायु-प्रकोप, नीच कार्यों में रत रहना, अनेक प्रकार के नजला-जुकाम आदि रोग और क्लेश रहता है।

चन्द्र-राहु वेध होने से पेट दर्द, चित्त मलिन, दूषित विचार, पाप रत, कीर्ति-क्षय तथा अनेक कष्ट प्राप्त होते हैं।

चन्द्र-केतु वेध होने से अनेक प्रकार के दुःखों की प्राप्ति होती है। मन मलिन रहता है। पेट में दर्द होता है। मन्दाग्नि आदि होने से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

वर्ष विचार में समुद्र चक्र—चार सीधी और चार टेढी रेखाओं की सहायता से चित्र. के अनुसार समुद्र चक्र बनाना चाहिए। फिर सोलह कोष्ठक इस प्रकार बनाने चाहिए कि पांच-पांच कोष्ठक चारों ओर हो जायें। बीच का कोष्ठक सागर है, उसके दोनों ओर के दो कोष्ठक तीर और तीरों के ऊपर पर्वत है।

अब वर्ष-प्रवेश का नक्षत्र सबसे पहले सागर के कोष्ठक में लिखें। उसके आगे के दो नक्षत्र भी उसी कोष्ठक में लिखें। फिरे आगे के क्रमशः सभी नक्षत्र तीर पर एक-एक और पर्वतों में दो-दो लिखें। यही समुद्र चक्र है। फिर इसके फलाफल का विवेचन करना चाहिए।

उदाहरण कुण्डली का वर्ष प्रवेश नक्षत्र शतभिषा है। नियमानुसार शतभिषा, पूर्वाभाद्र और उत्तरा भाद्र को सागर के कोष्ठक में लिखा। फिर आगामी नक्षत्र रेवती को तीर पर लिखा। अश्विनी और भरणी को पर्वत पर लिखा। इसी प्रकार सम्पूर्ण कोष्ठकों की पूर्ति करने पर समुद्र चक्र निम्नलिखित प्रकार से तैयार हुआ:—

पर्वत अ० श्र०	तीर धनिष्ठा	सागर श० पू० उ०	तीर रे०	पर्वत अ० भ०
तीर उ०				तीर कृ०
सागर ज्ये० मू० पू०		समुद्र चक्रम्		सागर रो० मृ० आ०
तीर अ०				तीर पु०
पर्वत स्वा० वि०	तीर चि०	सागर पू० फा० उ० फा० ह०	तीर म०	पर्वत पु० आ०

विशेष—समुद्र चक्र तैयार करते समय अभिजित भी यथास्थान लिखना चाहिए।

समुद्र चक्र से शुभाशुभ विचार

यदि व्यक्ति का जन्म नक्षत्र समुद्र चक्र में सागर में पड़ा हो (लिखा गया हो) तो दुःख, तीर पर पड़े तो सुख और पर्वत पर लक्ष्मी प्राप्ति कराता है। प्रस्तुत उदाहरण में जन्मनक्षत्र विशाखा पर्वत पर पड़ा है, अतः यह लक्ष्मी-प्राप्ति कराने वाला और शुभ है।

: १२ :

व्यावहारिक वर्ष कुण्डलियों का अध्ययन

जन्म स्थान—जोधपुर राज्य; जन्म दिनांक १६।४।५०; जन्म-समय रात्रि ११।१५; इष्टम् ४२।४५; जन्मवार—बुधवार; जन्म-नक्षत्र—कृत्तिका: सूर्य ०।५ लग्नम् ८।२।

जन्म लग्नम्

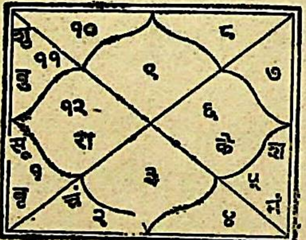

कु० सं० ५३

वर्ष लग्नम् (गताब्द १६)

कु० सं० ५४

मुख्य घटना—(i) विवाह।

(ii) अस्वस्थता के कारण विश्वविद्यालय की परीक्षा में नहीं बैठा जा सका।

(२) जन्म स्थान—अक्षांश २६. १८—रेखाँश—७३, ४; जन्म-दिनांक २ फरवरी १६४५; जन्म समय—७।५३ इष्टम्; वार—बृहस्पतिवार; जन्म नक्षत्र—हस्त; लग्नम्—मीन।

जन्म लग्नम्　　वर्ष लग्नम् १०।२० [गताब्दा: २३ वर्ष प्रवेश: २४]

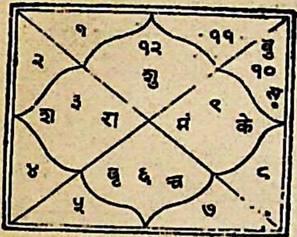

कु० सं० ५५

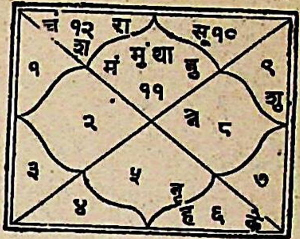

कु० सं ५६

मुख्य घटनाएं—(i) बुध(पंचमेश)की मुन्धा दशा (या मुद्दा दशा) में पुत्रोत्पत्ति। (ii) विना किसी विशेष परिश्रम के विश्वविद्यालय की उच्च परीक्षा में उत्तीर्ण।

वर्ष प्रवेश लग्नम् ७।१४ गताब्द २६ वर्ष प्रवेश : २७

मुख्य घटनाएं—(i) पुत्रोत्पत्ति। (ii) मनचाहे स्थान पर नौकरी की प्राप्ति। (iii) सफर में पर्याप्त लाभ। (iv) शिक्षा और लेखन से धन प्राप्ति।

कु० सं० ५७

जन्म कुण्डली　　वर्ष कुण्डली [गताब्दा: ७४]

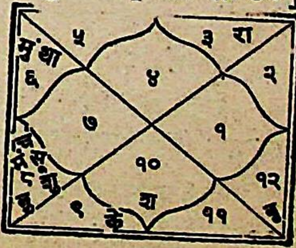

कु० सं० ५८　　मुख्य घटना—मृत्यु।　　कु० सं० ५९

(४) जन्म स्थान—विदिशा; जन्म दिनांक—२ मार्च १९३४; इष्टम्—६।० ; जन्मवार—शुक्रवार; जन्म लग्न—मेष।

जन्माङ्ग (वर्ष प्रवेश ३६) वर्ष कुण्डली

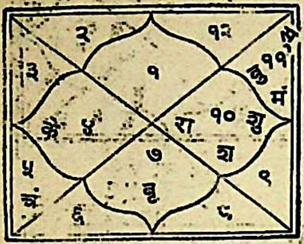

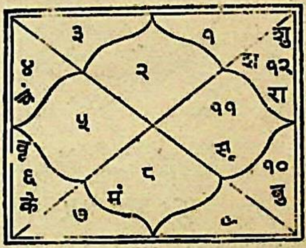

कु० सं० ६० मुख्य घटना :—लाटरी की प्राप्ति। कु० सं० ६१

(५) जन्म स्थान—लाडनूं (राज०); जन्म दिनांक—१ नवम्बर १९६५; जन्म वार—सोमवार; सूर्य—६।१४; जन्म नक्षत्र—श्रवण; इष्टम्—४२।६; जन्म लग्न—३।९

जन्म लग्न वर्ष लग्न (छठे वर्ष प्रवेश की)

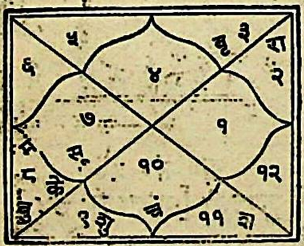

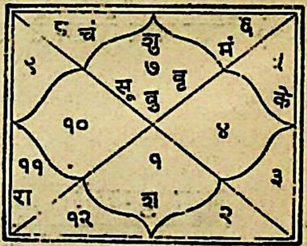

कु० सं० ६२ कु० सं० ६३

मुख्य घटनायें—(i) छोटे भाई की प्राप्ति। (ii) विद्याध्ययन प्रारम्भ। (iii) पिता के स्वास्थ्य में गड़बड़ी।

(६) जन्म स्थान—नागौर (राज०); जन्म दिनांक—१३ अप्रैल १९३७; जन्म वार—मंगलवार; जन्मस्थ सूर्य—११।२९; इष्टम्—२०।४८ जन्म लग्न—सिंह।

जन्म लग्न

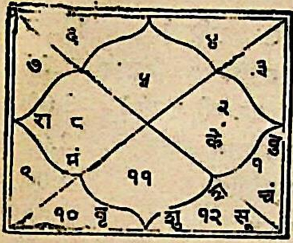

कु० सं० ६४

(वर्ष प्रवेश ३५) वर्ष कुण्डली

कु० सं० ६५

मुख्य घटनाएं—(i) अनचाही जगह स्थानान्तरण। (ii) यात्रा में व्यय एवं परेशानियाँ। (iii) स्त्री-सुख में बाधा।

कु० सं० ६६

वर्ष लग्न (वर्ष प्रवेश ५९)

मुख्य घटनाएं—मुकदमे में व पुत्र की शिक्षा पर अत्यधिक व्यय।

६७वें वर्ष की कुण्डली

मुख्य घटनाएं—(i) जमीन-जायदाद का निर्माण। (ii) पुत्री का शुभ विवाह। (iii) उपर्युक्त दोनों कार्यों में लगभग तीस हजार का व्यय। (iv) पुत्र नौकरी छोड़कर प्रशिक्षण प्राप्त कर गया।

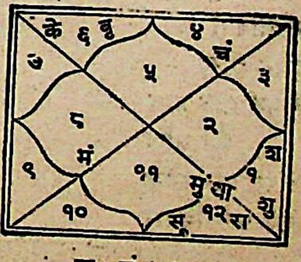

कु० सं० ६८

ज्योतिष-ज्ञान के लिए
इन पुस्तकों में से चुनिए

जातक दीपक भा. टी.	25.00	हस्तरेखा विज्ञान	
ताजिक नीलकण्ठी	6.00	(शरीर लक्षण सहित)	12.00
लग्न चद्रिका	3.00	व्यावहारिक हस्तरेखा विज्ञान	7.75
ग्रह फल दर्पण	2.00	हस्तरेखा (डा. श्री माली)	3.00
वाराही संहिता	12.00	मुखाकृति विज्ञान	2.00
मान सागरी	10.00	भारतीय ज्योतिष	3.00
मुहुर्त चिन्तामणि	4.00	ग्रह और रत्न	2.00
भारतीय ज्योतिष	12.00	फलित और आप	1.00
भृगु संहिता फलित भाषा	31.00	स्त्री जातक	1.80
ज्योतिष कल्पद्रुम	4.50	जन्मपत्र व्यवस्था	1.25
सूर्य सिद्धान्त भा. टी.	7.50	वृहत्पाराशर होरा शास्त्र	20.00
दशाफल विचार	2.00	प्रश्न चन्द्र प्रकाश	4.00
दशाफल दर्पण	2.00	अष्टक वर्ग (संस्कृत अंग्रेजी)	10.00
अंक ज्योतिर्विज्ञान	6.00	महिलाएं और ज्योतिष	5.00
अंक और आप	3.00	Condensed Ephemeris	
अंक ज्योतिष	2.00	By N. C. Lahiri	
अंक विद्या	4.00	From 1875 to 1900	6.50
त्रिफला (ज्योतिष)	8.00	,, 1900 to 1941	6.50
फल दीपिका	15.00	,, 1941 to 1951	5.00
जैमिनी सूत्र	2.50	,, 1951 to 1961	5.00
लीलावती	4.00	,, 1962 to 1969	4.00
प्रश्न दर्पण	5.00	Tables of Ascendants	6.50
केवल ज्ञान प्रश्न		Secrets of Palmistry	
चूडामणि	5.00	By Sarvari	7.50
केरल प्रश्न संग्रह	.55	Practical Palmistry	
वर्ष फल विचार	5.00	By Saint Germain	7.75

मंगाने का पता :—गोयल एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली-६

विषय-सूची (संक्षिप्त)

१— वर्ष फल सम्बन्धी जानकारी
वर्ष कुण्डली बनाने की नये और प्राचीन मत से सरल विधियां
पच वर्गी बल और वर्षेश-निर्णय

२— विंशोत्तरी मुद्दादशा ज्ञात करने की विधि :
सारणी और दशा फल का अनुभूत विवेचन

३— सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों का वर्षेश फल :
युति और दृष्टि से पड़ने वाले अन्तर का वर्णन

४— मुंथा और मुंथेश सम्बन्धी चामत्कारिक फल-कथन

५— षोडश योगों का उदाहरणों सहित विवेचन :
नवाब खानखाना के योगों पर लेखक के अनुभव

६— सहम कैसे ज्ञात करें ? उनका फल और वह कब ?

७— वर्ष में अरिष्ट की आशंका; बदली (Transfer) नौकरी में पदोन्नति; (Promotion) व्यापार कैसा ?

८— आर्थिक स्थिति; मकान; लाटरी; वाहन

९— पत्नी का स्वास्थ्य : संतान कब तक और क्या ?

१०— वर्ष में

...माला

महिलाएं और ज्योतिष
(Astrology For Women)
महिलाओं सम्बन्धी फलित ज्योतिष

- ## प्रश्न दर्पण
प्रश्न द्वारा भावी जानकारी

- ## ज्योतिष और रोग
रोग सम्बन्धी ज्योतिष ...

-
रत्नों की पह...

- ## चुने ...
परिभाषा, फल, हेतु, ... सहित

- ## फलित सूत्र
योग्यता व सरलता के साथ बारह भावों का फलादेश

- ## व्यवसाय का चुनाव

प्रत्येक पुस्तक का मू... पांच रुपये : डाकव्यय अलग

- ## उत्तर कालामृत (कालिदासविरचित)
फलित ज्योतिष का अचरजपूर्णग्रन्थ

मूल्य दस रुपये : डाकव्यय अलग

सभी पुस्तकें सरल वैज्ञानिक शैली में

मंगाने का पता—

... कम्पनी, दरीबा, दिल्ली-६